सोनभद्र की आदिवासी जनजातियों की भाषा

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

निर्देशक -

डा० मालती तिवारी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषायें

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

जनवरी 2001

प्रस्तोता :

संजय चतुर्वेदी

संजय चतुर्वेदी

शोध छात्र (हिन्दी)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्राक्कथन

बोली-विज्ञान भाषा-शास्त्र का अद्यतन संदर्भ है। इस विश्लेषण प्रक्रिया को ध्यान में रखकर अमेरिका में दो विधाएं विकसित हुई है। एक है बोली-विज्ञान के अन्तर्गत किसी क्षेत्र विशेष अथवा जाति विशेष में प्रचलित भाषिक प्रतीकों का ध्वन्यात्मक (ध्वनिग्रामिक) एवं पदग्रामिक विश्लेपण, और दूसरा है बोलीगत भिन्नताओं के आधार पर एटलस का निर्माण। बोलियों के प्रचलित रूप को आधार बनाकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कई शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत हुए हैं। इनमें डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी का **आगरे जिले की बोली,** डा० महावीर शरण जैन का **मेरठ एवं बुलन्दशहर की बोली** तथा डा० मूल शंकर शर्मा का **मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन** महत्वपूर्ण हैं। इन प्रबन्धों में भाषाशास्त्र की प्रचलित आधुनिक प्रक्रियाओं और संदर्भों का उपयोग देखा जा सकता है।

उत्तर-प्रदेश के जनपदों में मिर्जापुर और सोनभद्र अपनी खनिज सम्पदा, विद्युत उत्पादन-पारेषण की क्षमता के कारण एशिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीनतम सभ्यता के अवशेष विश्व में जिन स्थानों में सुरक्षित हैं, सोनभद्र जनपद उनमें एक है। सोननदी की घाटी में विद्यमान गुफा-चित्र आदि मानव के निवास की कहानियों के साक्षी हैं। सोनभद्र जनपद दो बड़े राज्यों की सीमा का संस्पर्श करता है। मगध साम्राज्य की थलवाहिनी का यह मार्ग रहा है। भारशिवों की संकल्पना इस जनपद में विद्यमान शिव मंदिरों में आज भी भग्न मूर्तियां अपने क्रोड़ में छिपाये जीवित हैं। सोनभद्र जनपद उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति का प्राण है, क्योकि आदिवासी जातियों का जितना बड़ा समूह यहां रहता है, वह अन्यत्र नहीं है। इन आदिवासी जातियों की परम्परायें और प्रथायें जनपद में प्राप्त गुफाचित्रों में अंकित जीवन शैली के बहुत करीब हैं। यह अनुमान किया जा सकता है कि जिन लोगों ने लाखों वर्ष पूर्व सोनघाटी में चित्र बनाये, आज के आदिवासी उन्हीं के वंशज तथा पारिवारिक विकास के प्रमाण हैं। कुछ जातियां यहाँ बाद में आईं। इन जातियों की अपनी प्रथायें हैं, परम्परायें हैं व विश्वास हैं। कभी हर जाति अपनी स्वतंत्र भाषा बोलती रही होगी। आज इनकी लोक परम्परा ही लुप्त नहीं हो रही है, इनमें प्रचलित भाषिक प्रतीक भी समाप्त हो रहे हैं। जनपद के आदिवासियों में धांगर, जिसे कुरूख व उरावं भी कहा गया है, आज तक अपनी मौलिकता बचाये हुए हैं। इनकी अपनी भाषा है, जो प्रचलित स्थानीय भाषा से भिन्न है। अतः एक सांस्कृतिक कर्तव्य मानकर इन्हें सुरक्षित रखना सामाजिक दायित्व लगता है।

सोनभद्र जनपद की भाषा के सम्बन्ध में कई काम हुए हैं। इनमें प्रथम है ग्रियर्सन का **भाषा सर्वेक्षण**। डा० ग्रियर्सन ने सोनभद्र की भोजपुरी की भी चर्चा की है तथा सोन के दक्षिण निवास करने वाले लोगों की भाषा को सोनपारी कहते हुए संकेत भर दिया है। इतने पुराने काम में ये अल्प संकेत आज भी प्रकाश-किरण की तरह हैं। इस प्रकरण में डा० बाबू राम सक्सेना ने **अवधी का विकास** नामक शोध प्रबन्ध में प्राप्त अवधी रूपों की भी चर्चा की है। **भोजपुरी** का उद्भव व विकास नामक अपने शोध-प्रबन्ध में डा० उदय नारायण तिवारी ने पश्चिमी भोजपुरी का उल्लेख करते हुए मिर्जापुर की भोजपुरी (पहले सोनभद्र इसी में सम्मिलित था) को उसी में रखा है। इस व्याख्या में सोनभद्र की भोजपुरी के रूप छूट गयें है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रस्तुत उल्लिखित शोध प्रबन्ध तथा डा० सक्सेना और डा० तिवारी का अवदान भाषा-शास्त्र के क्षेत्र में मील के पत्थर की तरह है। यहीं से

मिर्जापुर के संबंध मे एक और कार्य हुआ है - जिसमें भाषिक विश्लेषण की वर्णनात्मक पद्धति को स्वीकार करते हुए मिर्जापुर - सोनभद्र में प्रचलित अवधी, भोजपुरी एवं बघेली रूपों की व्याकरणिक कोटियां निर्धारित की गयी हैं। यह प्रबन्ध है - **मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन।** शोधकर्ता ने अपने प्रबन्ध की भूमिका में जनपद की आदिवासियों का उल्लेख करते हुए उन पर कार्य किया जाय इस बात की आवश्यकता बताई है। उल्लिखित प्रबन्ध में डा० मूल शंकर शर्मा ने धांगर जाति में प्रचलित कुछ शब्दों, विशेषणों (संख्यावाची) का विवरण भी दिया है और लिखा है कि यह जाति 6 से अधिक संख्या का प्रयोग नहीं करती। इस प्रवन्ध के लिखे जाने के बाद अन्तर इतना ही आया है कि इस जाति के पढ़े लिखे लोग सौ तक गिनती बोलने लगे हैं, लेकिन उच्चरित रूप भोजपुरी के हैं। प्रत्येक शोध-प्रबन्ध की अपनी सीमायें थी। इस कारण आदिवासियों की भाषा का विश्लेषण बाकी ही रह गया। आज इन जातियों में अधिकांश अपनी सांस्कृतिक परम्परा छोड़ने की स्थिति में आ गई हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करने की प्रेरणा इन्हीं संदर्भो से मिली है। आज की तिथि तक यह विषय अछूता है। सोनभद्र का निवासी होने के कारण मेरे मन में इन चुनौतियों को स्वीकार करने की बात मन में उठती रही है। जब भी समाचारपत्रों में छपता ' अब भी चुनौती है धांगरों की भाषा ' तो लगता कि इस विषय के अध्ययन की अनन्त संभावनाये हैं। मेरे गुरूजनों में डा० टी. एन. सिंह, एम.ए.(हिन्दी, भाषा विज्ञान) से इस प्रकरण पर चर्चा होती। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के प्रोफेसर श्री ए. एन. सिंह, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्यव्रत शर्मा एवं डा० विश्वम्बर नाथ दूबे ने इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। भाषाशास्त्र के शीर्ष विद्वान डा० हरदेव बाहरी उस समय जीवित थे। उनका कहना था कि आदिवासी के किसी एक गांव की भाषा का विश्लेषण डी.फिल. के लिए पर्याप्त है। इन विद्वानों की प्रेरणा ने ही मुझे इस कार्य से जोड़ा।

भाषिक विश्लेषण, वह भी आदिवासियों की भाषा का, एक दुरूह कार्य है। के. एम. इन्स्टीट्यूट आगरा के विद्वानों तथा प्रयोगशाला से कुछ सीखने का अवसर मिला और सोनभद्र जनपद के दुर्गम स्थानों में आदिवासियों के बीच जाकर सामग्री संकलन हुआ। आदिवासियों में आज की तिथि में केवल धांगर जाति ही ऐसी मिली, जो अपनी भाषा बोलती है। शेष जातियों ने भोजपुरी के स्थानीय रूप अपना लिये हैं। इस तरह यह प्रबन्ध धांगरी व अन्य जातियों (आदिवासी) की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन जैसा हो गया है। इससे यह तो तय है कि अन्य आदिवासी जातियां में कुछ जातीय शब्द ही उनके अपने बचे हैं। धांगरी में उधार की शब्दावली बहुत आयी है, पर उनकी भाषा का मौलिक रूप आज भी बचा हुआ है।

प्रस्तुत अध्ययन नौ अध्यायों में विभाजित है। पहले अध्याय में आदिवासियों का परिचय है। इसमें उनकी परम्परा, जातीय संस्कार और वर्तमान जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन का दूसरा अध्याय जनपद के भाषिक-भूगोल की व्याख्या है। जनपद की प्रमुख भाषा भोजपुरी है, जिसके दक्षिण-पश्चिम में बघेली तथा उत्तर-पश्चिम में अवधी बोली जाती है। आदिवासी इस पूरे क्षेत्र में फैलकर अलग - अलग गांवों में बसे हैं। किसी एक गांव में कई आदिवासी जातियां एक साथ निवास करती हैं। एक ही गांव में भोजपुरी तथा आदिवासी जातियों की भाषा का अद्भुत

संगम मिलता है। सोनभद्र मुख्यालय से लगभग 20 किमी० दक्षिण पूर्व में पटना, सिलथम, दरमा, दिनारी ऐसे ही गाँव है। बोली-भूगोल में सीमान्त रेखा, विभाजक रेखा (आइसोग्लास लाइन) द्वारा इन भिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया है। उन भौगोलिक संदर्भों की भी व्याख्या हुई है। जिसके कारण भाषा रूप प्रभावित होते हैं।

प्रबन्ध का तीसरा अध्याय आदिवासियों में प्रचलित ध्वनियों का ध्वन्यात्मक एवं ध्वनिग्रामिक विश्लेषण है। स्वरों एवं व्यंजनों के वितरण की स्थितियां सोदाहरण प्रस्तुत की गयी हैं।

अध्याय 4,5,6,7,8,9 भाषिक रूपों की पदग्रामिक व्याख्या है। अध्याय 4 में संज्ञा रूपों की भिन्नतायें तथा उनकी विभक्तियों की चर्चा है। इसी प्रकरण में धांगरों की भाषा का गूढ़ रूप प्रकट होता है। उनकी शब्दावली स्थानीय लोगों के लिए भी दुर्बोध है। धांगर जाति की प्रवृत्ति भाषिक गठन में आज भी योगात्मक है।

अध्याय 5 में सर्वनामों के विविध भेद अपने संपरिवर्तकों के साथ अंकित हैं।

अध्याय 6 में विशेषणों का वर्णन है। विशेषणों में अद्‌भुत भिन्नतायें है। धांगरों में संख्यावाची अपने मूलरूप में आज भी 6 से अधिक नहीं हैं।

अध्याय 7 क्रिया पदों की व्याख्या है। क्रिया के जितने भेद अन्य जातियों में है, धांगरों में नहीं हैं।

अध्याय 8 में क्रिया विशेषणों का विश्लेषण है।

अध्याय 9 आबद्ध रूपों का विश्लेषण है। इस वर्ग में व्युत्पादक एवं व्याकरणिक दोनों श्रेणियों के प्रत्यय विश्लेषित किये गये हैं। अध्याय में अन्य जातियों में प्रचलित आबद्ध रूप अधिक व्यक्त हुए है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भाषा के पदग्रामिक विश्लेषण तक सीमित है। प्रबन्ध के अन्त में धांगरो तथा अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित शब्दावली तथा वाक्यावली की लंबी सूची दी गई है ताकि विद्धतजन इस सामग्री से प्रबन्ध के गुण - दोषों का मूल्याकंन ही न कर सकें, अपितु यह सामग्री आगे भी भाषिक विश्लेषण के काम आये।

लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डा० अर्जुनदास केसरी को डा० विद्या निवास मिश्र ने पत्र लिखते हुए इस अंचल की भाषा के अध्ययन की लिखित प्रेरणा दी है। डा० केसरी सदैव मुझे उद्‌वोधित करते रहे कि मैं आदिवासियों की भाषा पर कार्य करूं। प्रथमतः मैं इन दोनों विद्वानों के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित करता हूँ, जिनकी सत्‌प्रेरणा प्रबन्ध में मूर्त हुई।

अपने शोध प्रबन्ध की निर्देशिका, माननीया डा० मालती तिवारी के चरणों की मैं वन्दना करता हूँ, जिनकी ममता और वत्सल भाव मुझे अंधेरे में रास्ता दिखाते रहे। विषय विश्लेषण की गहनताओं में मुझे उन्होंनें राह दिखायी, धांगरों की जटिल शब्द-रचना और अर्थ-प्रक्रिया को सरल करते हुए उसे बोधगम्य बनाया, भाषाशास्त्र की सैद्धान्तिक संरचना दृष्टि उन्होंनें सरल, सहज, बोधगम्य बनायी, मैं उनके आलोक के सन्मुख विनयावनत हूँ। अपनी शैक्षिक तथा प्रशासकीय व्यस्तताओं में भी उन्होंने मुझे पर्याप्त समय दिया, समझाया, मैं बार - बार उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

हिन्दी विभाग के शिक्षकों डा० सत्य प्रकाश मिश्र, डा० राजेन्द्र कुमार वर्मा का भी आभारी हूँ जिन्होंने रास्ता दिखाया। हिन्दी साहित्य के यशस्वी विद्वान डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी, डा० जगदीश गुप्त का मैं ऋणी हूँ जिनके ग्रंथों ने प्रकाश-स्तम्भ का कार्य किया।

अपने पिता डा० मूल शंकर शर्मा तथा आदरणीया माता के श्रीचरणों में श्रद्धावनत हूँ। उनकी असीम प्रेरणा और सहयोग की चर्चा करके मैं उनके स्नेह को छोटा नहीं करना चाहता।

बड़े भइया विजय शंकर चतुर्वेदी, बहनों पुष्पा मिश्रा एवं बिन्दु चतुर्वेदी ने प्रबन्ध की जटिलताओं से जूझने की प्रेरणा दी व टंकण को सुगम बनाया। बड़ी बहनों उमा त्रिपाठी व उषा शुक्ला का आशीर्वाद भी प्रबन्ध के साध्य होने का कारक रहा।

मेरी शोध यात्राओं की दुर्गमताओं में जिनके सानिध्य एवं सहयोग ने मुझे कहीं भी अकेला नहीं होने दिया, उनमें भाई सुभाष त्रिपाठी, दीपक केसरवानी, उमा शंकर, अनिल पाण्डेय, शिवकुमार, तथा अनुजवत् राजन चतुर्वेदी, संतोष सिंह तथा प्रिय रमाशंकर पाण्डेय का स्नेहिल ऋण सदैव मेरे ऊपर रहेगा। आदिवासी जाति के जिन सूचकों ने मुझे सहयोग देकर अध्ययन को सुगम बनाया, उनके प्रति मैं बार - बार कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सिलथम ग्राम के धांगर युवकों भाई रवि शंकर व सम्मतराम का मैं विशेष ऋणी हूँ। क्रिया-पद की जटिलताओं को वे हृदयंगम करते, फिर अपनी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत करते।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय ग्रंथागार के पुस्तकालय अध्यक्ष तथा सहायको के प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

सोनभद्र जनपद के जिलाधिकारी, सूचना अधिकारी तथा अन्य स्थानीय अधिकारियों ने शोध यात्राओं को सहज बनाया, मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रवन्ध के कम्प्यूटर आपरेटर भाई *सर्फराज खान* के प्रति विशेष आभारी हूँ जिनका श्रम सार्थक होकर प्रबन्ध के रूप में खड़ा है।

संजय चतुर्वेदी

संजय चतुर्वेदी

अनुक्रमणिका

अध्याय 1

आदिवासियों का परिचय

सोनभद्र: एक परिचय

सोनभद्र विन्ध्याचल मण्डल का एक जनपद है,जो मण्डल के दक्षिणी परिक्षेत्र में बसा हुआ है। इस मण्डल में तीन जिले हैं- उत्तर में संत रविदास नगर (भदोही), केन्द्र में मिर्जापुर जनपद तथा दक्षिण में सोनभद्र जनपद अवस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व यह जनपद मिर्जापुर का ही भाग रहा है। सन् 1989 में उत्तर प्रदेश-शासन की घोपणा के अनुसार मिर्जापुर जनपद की दो तहसीलें- राबर्ट्सगंज व दुद्धी को मिर्जापुर से अलग करके सोनभद्र को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। भौगोलिक दृप्टि से इसका क्षेत्रफल 6819.28 वर्ग किमी है जो 23.52 और 25.32 उत्तरी अक्षांश तथा 82.72 एवं 83.33 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। आज की तिथि में यह उत्तर प्रदेश का सबसे दक्षिणी जिला है। इस जनपद के पूर्व में बिहार राज्य के दो जिले- रोहतासगढ़ व पलामऊ सटकर बसे हैं। दक्षिण में मध्य प्रदेश का सरगुजा व सीधी का हिस्सा है। दक्षिण - पश्चिम में है रीवां तथा पश्चिम व उत्तर में मिर्जापुर जनपद का परिक्षेत्र फैला है। सोनभद्र कोई विशेष स्थान नहीं है,न ही इस नाम से कोई गांव, कस्बा या नगर है। इन स्थितियों में सोनभद्र नाम जनपद के पूरे भौगोलिक विस्तार एवं परिचय का प्रतीक है।

इस जनपद के लगभग बीच से सोन नदी पश्चिम से पूरब की ओर बहती है,जो पूरब में बिहार के रोहतासगढ़ जिले से होते हुए आगे निकल जाती है। इस सोन नदी को एक सांस्कृतिक विरासत व गौरव प्राप्त है। पौराणिक अख्यानों में इसे शोण या श्रोणभद्र कहा गया है। देश में जिन नदों का उल्लेख होता है,उनमें शोणभद्र की चर्चा नद के रूप में पौराणिक संदर्भ करते रहे हैं। इतिहास की विश्रुत मान्यताओं, संस्कृति की पुरा-गाथाओं और देश की अचल मर्यादाओं का साक्षी सोनभद्र,इस जनपद के गौरव का प्रतीक है। इतिहास के इसी दायभाग को सार्थक करते हुए शासन ने इस जनपद को इसी अभिधान से गौरव दिया है। अतः सोनभद्र एक विश्रुत परम्परा का साक्षी बनकर आज वर्तमान का एक दस्तावेज बना हुआ है।

अपनी ऐतिहासिक- सांस्कृतिक- सामाजिक यात्रा में सोनभद्र विन्ध्यमण्डल में नहीं,अन्य मण्डलों में भी अपनी अलग पहचान व स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। विश्व सभ्यता के इतिहास में घाटी-सभ्यता को प्राचीनतम माना गया है।क्योंकि इसी से जुड़ी हुईं है गुफा-मानव की आदिम कहानी। सोननदी मध्य प्रदेश के रीवां जनपद से होती हुई इस जिले में आती है और जितनी दूर तक इस परिक्षेत्र से गुजरती है उसके दोनों ओर कैमूर पर्वत की घाटियां फैली हैं। दूर तक फैला है घना जंगल, जिसे संस्कृत आचार्यो ने 'विन्ध्याटवी ' कहा है। नदी के दोनों किनारों की ओर फैले जंगल के बीच पहाड़ की जो कन्दरायें या गुफायें स्थित हैं,उनमें कभी आदिम मनुप्य का निवास रहा है। इस मनुप्य में इन गुफाओं के भीतर केवल ऋतुओं के झंझावात से ही अपनी रक्षा नहीं की, वह जब भी स्थिर हुआ, पर्वत शिलाओं को फलक बनाकर उस पर कितने ही चित्र उकेरे। इतिहासकारों ने इन चित्रों को प्रागैतिहासिक काल के चित्र माना। इस सोननदी के साथ इस जनपद में दो और बड़ी नदियां हैं,जो सोननदी की पूरक पोषक हैं। ये नदियां है रेण व बीजुल। दोनों जनपद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक दुर्ग अगोरी के पास आकर सोन में मिल जाती हैं। इस रेण नदी पर रिहन्द बांध बना है। चूकि ये नदियां भी पहाड़ों के बीच से आती हैं,इस कारण इनकी अपनी घाटियां हैं। सोनभद्र जनपद में एक ऐसी भी नदी है जो पूरब से पश्चिम की ओर बहती है। यह नदी है बेलन। बेलन नदी जनपद की घोरावल तहसील

में कैमूर पर्वत श्रृंखला की ऊंचाइयों से उतरकर नीचे पश्चिम की ओर मिर्जापुर जनपद की ओर निकल जाती है। बेलन की घाटी में वही प्राचीन गुफा-चित्र बिखरे हैं, जो इस बात का प्रमाण देते हैं कि प्रागैतिहासिक काल का आदिम मनुष्य कभी इन घाटियों में निवास करता रहा है।

जनपद की वर्तमान स्थिति का जातिगत विश्लेषण करने पर जो समाजशास्त्र दिखायी देता है, उसमें इस पूरे परिक्षेत्र में एक वे हैं जिनकी 90 प्रतिशत की जनसंख्या का रंग काला है और जो छोटी - छोटी उपजातियों की इकाइयों में बसे हुए हैं। सबकी अपनी - अपनी प्रथायें, परम्परायें, अपने टोटेम हैं। अपने जातिगत विश्वास हैं और उपासना तथा कर्मकाड के अपने तौर तरीके हैं। यह अनुमान किया जा सकता है कि इस पूरे परिक्षेत्र में वसे ये लोग, उसी आदि मानव के विकास गाथा के आधुनिक अवशेष हैं। दूसरा वर्ग, इन सबसे अलग - थलग पौराणिक मान्यताओं व संन्दर्भो से जुड़कर धार्मिक प्रतीकों को साथ लेकर इस परिक्षेत्र में कालान्तर में आकर बस गया है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इनमें पहली श्रेणी के व्यक्ति ही यहाँ के मूल निवासी हैं जिन्हें यहाँ का आदिवासी कहा जा सकता है।

सोनभद्र का राजनैतिक व प्रशासनिक स्वरूप

प्रशासनिक दृष्टि से सोनभद्र को तीन तहसीलों में बॉटा गया है -

1 राबर्ट्सगंज तहसील 2. दुद्धी तहसील 3. घोरावल तहसील

विकास खण्ड की दृष्टि से सोनभद्र राबर्ट्सगंज, चतरा, नगवां, घोरावल, बभनी, दुद्धी, म्योरपुर एवं चोपन आठ भागों में विभाजित है। भूमि की बनावट व प्राकृतिक दृष्टि से इसे दो सम्भागों में बॉटा जा सकता है।

1. मध्यवर्ती पठार- इस सम्भाग का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत के अन्तर्गत पठारी हिस्से से होता हुआ कैमूर पर्वत श्रृंखला की अन्तिम सीमा सोननदी तक फैला है जिसमें जनपद का 50 प्रतिशत से अधिक भाग सम्मिलित है। राबर्ट्सगंज, घोरावल, चतरा, नगवां, विकास खण्ड इसमें स्थित है। कर्मनाशा व चन्द्रभागा अनेक छोटी पहाड़ी नदियां बहती हुयी गंगा में मिलती हैं। यह सम्भाग गंगा की घाटी से 400 फुट से लेकर 1000 फुट की ऊंचाई पर है।

2. सोनघाटी- राबर्ट्सगंज तहसील का चोपन विकास खण्ड एवं दुद्धी तहसील का दुद्धी, बभनी तथा म्योरपुर विकास खण्ड इस उपसम्भाग में स्थित है जो सोननदी के दक्षिण का इलाका है। सिंगरौली, सोनघाटी एवं दुद्धी घाटी अपनी प्राकृतिक सम्पदा व उपजाऊ भूमि के लिए महत्वपूर्ण है।[1]

भाषिक विश्लेषण के विभेदक आधार व सोनभद्र

प्रसिद्ध भाषा शास्त्री नाइडा अपनी पुस्तक मार्फलाजी में भाषिक सम्बन्धों के निर्माण के लिए परस्पर बोधगम्यता का उल्लेख करता है। साथ ही इस बात की भी चर्चा करता है कि कुछ ऐसी भी इकाइयां हैं, जो इस बोधगम्यता को सहज नहीं रहने देतीं और एक भेदक इकाई के रूप में कार्य करती हैं। इन इकाइयों में भौगोलिक स्थितियों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि सोननदी इस पूरे जनपद को दो भागों में बॉट देती है, सोननदी का उत्तरी हिस्सा तथा सोन का दक्षिणी हिस्सा। इस दक्षिणी भाग को

1- विकास पुस्तिका सोनभद्र, पृष्ठ संख्या 1 सूचना एंव जनसम्पर्क विभाग, सोनभद्र

मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में सोनपार क्षेत्र कहा गया है। विश्रुत भाषा शास्त्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भी इस क्षेत्र को सोनपारी क्षेत्र मानते हैं। सोनपार के दक्षिण परिक्षेत्र को, जिसका अधिकांश हिस्सा जंगलों से ढका है, तीन बड़ी नदियां छोटे उपखण्डों में विभाजित कर देती हैं। ये नदियां हैं- कनहर, रेण व बीजुल। वर्षा ऋतु ही नहीं, अन्य समय में भी ये नदियां परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने में बड़ी बाधा रही हैं। इस कारण इस सोनपार के परिक्षेत्र में निवास करने वाले लोगों (आदिवासियों) में आपसी सम्बन्ध बड़ी कठिनाई से बनते रहे हैं। इस कारण इस भौगोलिक परिक्षेत्र में बड़ी - छोटी इकाइयों ने भाषिक भिन्नता स्थापित करने में बड़ी अहम भूमिका निभायी है।

भौगोलिक इकाइयों में कैमूर पर्वत श्रृंखला भी दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, जिसके कारण सोनभद्र जनपद दो भागों में बंटा स्पप्ट दिखता है। इसमें कैमूर पर्वत के दक्षिण का भाग सबसे महत्वपूर्ण है। इस भाग में उल्लिखित नदियां भी बहती हैं, और इस परिक्षेत्र में खनिज सम्पदा का विपुल भण्डार आज तक सुरक्षित दिखायी पड़ता है, जिसके कारण एशिया के मानचित्र में सोनभद्र अपनी अलग पहचान रखता है। जल संसाधन व खनिज संपदा, विशेषतः कोयला क्षेत्र ने मिलकर सोनभद्र के इस दक्षिणी परिक्षेत्र को आज ऊर्जाचंल बना दिया है। घने जंगल से इस दक्षिणी भूभाग की सांस्कृतिक विकास यात्रा के तीन पड़ाव हैं-

- सभ्यता की प्रारम्भिक स्थिति, जिसमें कभी आदि गुफा मानव रहता था।
- विकास यात्रा की मध्यकालीन स्थिति जब आदिवासी जातियों का अन्य प्रान्तों के आदिवासियों से यहाँ सम्बन्ध हुआ है अथवा चेरो तथा कुरूख या उरांव जैसी जनजातियां यहाँ बाहर से आकर बसीं अथवा किसी कारणवश यहाँ की जातियाँ स्थान-स्थान पर विस्थापित हुईं।
- सांस्कृतिक विकास क्रम की तीसरी स्थिति वह है, जब इस परिक्षेत्र में औद्योगिक विकास हुआ है तथा उच्च तकनीक, प्रौद्योगिकी, जल संसाधन अथवा ताप ऊप्मा से यह परिक्षेत्र बिजली क्षेत्र बना है तथा आधुनिकतम सभ्यता के सम्पर्क में यहाँ का आदिवासी भी आया है इस तीसरी स्थिति के कारण यातायात व संचार के साधन भी बढ़े हैं तथा भाषिक सम्बन्ध निर्धारण के पुराने कारण समाप्त हुये हैं। आदिवासियों की भाषा - वेशभूषा व खानपान सब में परिवर्तन हुआ है।

जहाँ तक कैमूर के उत्तरी भाग का सम्बन्ध है सोनभद्र का यह हिस्सा पूरब से पश्चिम की ओर एक समतल मैदान की तरह फैला हुआ है। और इस परिक्षेत्र में आदिवासियों की उपस्थिति गिने - चुने गाँवों में ही मिलती है। शेष स्थानों पर अन्य सवर्ण जातियों का कब्जा है। चूंकि कैमूर के उत्तरी अंचल में कोई प्राकृतिक विभाजन नहीं है, इस कारण इस पूरे परिक्षेत्र में भाषिक विविधता के घटक नहीं मिलते। भाषा एक अर्जित उपादान है, जो वंशानुगत रूप में परिवारों में क्रमशः आगे बढ़ता है। चूकि सोनभद्र के सोनपारी क्षेत्र अथवा कैमूर के दक्षिणी भूभाग में तमाम आदिवासी जातियाँ निवास करती हैं, इस कारण भाषिक परम्परा की भिन्नता में वंश भिन्नता या जाति भिन्नता भी विभेद का स्वतंत्र घटक है।

यदि आज का सभ्य कहा जाने वाला मानव अपनी सभ्यता की खोज करना चाहे तो उसे असभ्य जातियों का अध्ययन करना पड़ेगा। यदि ये न होते तो हम सभ्य न होते।

— मैक्स मूलर

(पिक्चर्स आन दि ओरजिन एण्ड ग्रोथ आफ रेलिजन से सन्दर्भित)

सोनभद्र जनपद और यहाँ के आदिवासी

जनपद में जो प्राचीनतम जातियाँ निवास करती हैं, उनमें पहली जाति है – अगरिया।

अगरिया

रसेल इसे गोंड़ जाति की उपशाखा से जोड़ते हैं और यह मानते हैं कि यह अनार्य जाति है। इस जाति का नामकरण संभवतः आग का उपयोग करने के कारण हुआ है। इन्हें लुहार जाति की उपजाति भी माना गया।[1] यह जाति जंगलों में निवास करती है तथा तेकम या तेका वृक्ष की उपासना करती हैं। इनकी अपनी शाखायें – उपशाखायें है तथा जाति का अपना समाजशास्त्र है। इस जाति में सामान्यतया बाल-विवाह की प्रथा नहीं है तथा विवाह लड़के का पिता लड़की के पिता के पास संदेश भेजकर करता है। निश्चय होने के बाद 5 सेर उड़द गॉव के पुजारी बैगा के पास भेजता है जिसे लड़की एक पइली (बॉस से बना बर्तन) में रखकर फिर से पुजारी के पास पहुंचाती है। जन्म- और मृत्यु के संस्कार भी इस जाति में अपने ढंग से मनाये जाते हैं। इस जाति का कुल देवता दूल्हा-देव है, जिसे बकरे की बलि देकर प्रसन्न किया जाता है। एक उपदेवता की भी चर्चा इनमें है जिन्हें लोहा-सुर कहा गया है, जो इनके लौह कर्म या व्यापार में सहायक होता है।[2]
पश्चिमी विद्वान रसेल ने इस जाति के संबंध में जो वर्णन दिया है, वह विलियम क्रुक्स से मिलता है। वर्तमान समय में सोनभद्र में निवास करने-वाली इन जातियों की मान्यताओं व विश्वास में कोई परिवर्तन नहीं आया है। रसेल ने अगरिया की चर्चा करते हुए लिखा है कि यह मिर्जापुर व बंगाल में पायी जाती है।[3] यहाँ मिर्जापुर से अभिप्रायः स्पष्टतः सोनभद्र से है, क्योंकि यह जाति विभाजित मिर्जापुर में नही है। मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार 1971 की जनगणना के अनुरूप इनकी संख्या 6432 थी जो अधिसंख्य दुद्धी में निवास करती है।

बैगा

बैगा सोनभद्र की एक महत्वपूर्ण जाति है। वस्तुतः, बैगा शब्द से पुजारी शब्द का भी परिचय होता है। पश्चिमी विद्वान रसेल इससे आदिकालीन द्रविड़ जाति मानता है जिसका मूल निवास सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के पूर्वी हिस्से में रहा है। वहाँ से चलकर यह जाति क्रमशः पूरब बढ़ते हुए सोनभद्र तक पहुँची है। बैगा के कई उपभेद है- इनके साथ प्रसिद्ध है एक लोककथा, कि कभी नागा बैगा और

1. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 3, Part I
2. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 6, Part II
3. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 3, Part II

नगिन बैगिन ने कजली वन में नृत्य किया और उनसे कितनी उपजातियां विकसित हैं। 1 जहॉं तक इनकी उपजातियॉं का संबंध है इनमें विझवार, मरूतिया, नरोतिया, नाहार, पोंडवान, पुंड़ी, आदि प्रमुख हैं। बैगा जाति अपने ही कुल में विवाह नहीं करती लेकिन मातृकुल में यह संबंध सामान्य है। कभी - कभी यह विवाह बच्चों के जन्म के समय तय हो जाता है, जिसे बरोखी कहा गया है। विवाह के इनके अपने तौर - तरीके पूरे जनपद में अपनी विधि के लिये चर्चित हैं। शिशु के जन्म के बाद इनके यहॉं प्रसूता महीने भर अशुद्ध रहती है। इसके शुद्धिकरण के समय खानपान की व्यवस्था रही है। इनकी जाति में महीनों या शरीर धर्म के आधार पर नाम रखने की परम्परा आज तक रही है जैसे चैतू, फागू, सवनी, लंगड़ा इत्यादि। 2 जहॉं तक इस जाति के धार्मिक संस्कारों का प्रश्न है, यह जाति पूर्णतः हिन्दू जाति से संबंधित है। इस जाति के कुल देवता हैं - बूरा या बूढ़ा देव। जिनके संदर्भ में यह विश्वास है कि ये साज के पेड़ में निवास करते हैं। इन देवता की पूजा जेठ के महीने में बकरे की बलि देकर, महुआ की शराब चढ़ाकर बैगा करता है। बूढा देव के साथ ठाकुर देव, दूल्हा देव, धरती माता, नारायण देव का उल्लेख की इनमें भी मिलता है। भूत प्रेत में इनका विश्वास है। नागदेव से बचने के लिये बैगा कितने ही उपाय रचता है। हर घर की छप्पर पर, उसके आगे - पीछे खेर माता (क्षेत्र माता) की आकृतियॉं दीवारों पर बनी दिखती हैं जो आदि व्याधि से इन परिवारों की रक्षा करती हैं। सोनभद्र की बैगा जाति अपने वेश व पहनावें से भी पहचान में आती है।
बैगा जाति की व्यावसायिक स्थिति की चर्चा करते हुये रसेल ने लिखा है कि इनका मूल व्यवसाय खेती करना है, यह जाति आग लगाकर जंगल के हिस्से को जला देती है और राख से उपजाऊ हो गयी जमीन को पानी बरसने पर वीज बोती और जोतती है। यद्यपि वर्तमान जंगल व्यवस्था में दूसरी स्वीकृति नहीं रह गयी है। 3 सोनभद्र में निवास करने वाली बैगा उपजाति, जो भी भूमि उसे पास है, उस पर खेती करती है तथा पुरोहित का कार्य करती है।

भूइयॉं -

भूइयॉं जाति की चर्चा करते हुए विलियम क्रुक ने इसे द्रविड़ शाखा से उत्पन्न जाति कहा है जो सोनभद्र के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में निवास करती है। मि० हन्टर का उल्लेख करते हुए क्रुक ने यह लिखा है बंगाल में यह जाति नृशंस एवं आक्रामक जाति के रूप में प्रसिद्ध है। 4

विलियम क्रुक एक किवदंती का उल्लेख करते हैं और लिखते हैं कि प्राचीन काल में मोमा ऋषि व कुम्भ ऋषि के दो पुत्र भद व भद्र महेश के निकट पहुंचे व उनसे प्रार्थना की। इस बीच भद नीम के पेड़ के नीचे तपस्या करने लगे और उन्हें क्षुधा का अनुभव हुआ। इस कारण भूइयां जाति में

1. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 79, Part II
2. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 85, Part II
3 Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 90, Part II
4. हन्टर- उड़ीसा भाग - 2, पेज 144, भाग - 2

इन्हें नीम ऋषि कहा गया। भगवान शंकर रोज जंगल में लकड़ी इकट्ठा करने जाया करते थे। जिनके वरदान से नीम ऋषि के वंशज प्रसिद्ध हुए। कुक के अनुसार इस कथा का प्रचलन भूहियार व मुसहर में आज भी प्रसिद्ध है। 1

इस प्रजाति के शरीर रचना के संबंध में कर्नल डाल्टन की रिपोर्ट महत्वपूर्ण है। वे लिखते है - ' इस जाति के लोग काले भूरे रंग के होते हैं। आनुपातिक रूप में यह जाति थोड़े चपटे चेहरे वाली होती है। लम्बाई मध्यम कद की, उगुलियां कठोर तथा पहाड़ी जाति के लोगों की तरह कठोर मांसपेशियों वाली। जहाँ तक मिर्जापुर एवं सोनभद्र में इस जाति का संबंध है यह आठ कुलों में विभाजित है-

1.	तिरवाह	2.	मगहिया	3.	दंदवार	4.	महतवार
5.	महतेक	6.	मुसहर	7.	भूइहार	8.	भूइयार

Sir H Risley says - the1re is a well known distinction between a Bhuiya by tribe and a Bhuiya by title. The Bhuiyas of Bonani and Keonjhar described by Colonel Daltan belong to farmar category. The Bhuiya, Mundas & Oraons to the latter. The distinction will be made some what clearer if it is explained that every ' tribal Bhuiya ' will as a matter of course describe himself as Bhuiya, while a member of another tribe will only do so if he is sepaking with reference to a question of land or desires for some special reason to lay stress on his status as a land holder or agriculturist.

इस जाति की अपनी एक जाति-पंचायत है, जो भइयारी नाम से प्रसिद्ध है तथा इस पंचायत का अध्यक्ष पारिवारिक उत्तराधिकार के क्रम में एक व्यक्ति होता है, जिसे महतो कहते है। सामान्यतया खानपान जैसे प्रकरणों के लिए ही यह पंचायत बैठती है, या जब किसी सहजातीय के बीच में यौन संबंध की शिकायत पंचायत में कोई करता है। कुक का कहना है कि यह जाति विवाह के लिए लड़की ढूंढ़ने कभी दूर नहीं जाती। इस संदर्भ में इस जाति की सारी उपजातियां वैवाहिक संदर्भो में समान स्तर की हैं। यदि कोई व्यक्ति एक से अधिक पत्नियों का भरण-पोषण कर सकता है और उसका मूल्य चुकाने में सक्षम है, तो वह पत्नियाँ रख सकता है जो एक ही घर में अलग - अलग कमरों में निवास करती है। 2 सोनभद्र के आज के समाज में यह विभेद संकीर्ण हो गये हैं तथा बहुपत्नीत्व की प्रथा सामान्य नहीं है। इस जाति में तलाक, विधवा विवाह जैसी प्रथायें भी प्रचलित हैं। पुत्र के जन्म के समय नार काटना, सउर, छठी, बरही जैसी प्रथायें इनमें स्थानीय सवर्णो की तरह आज प्रचलित हैं। विवाह के प्रकरण में लड़की की खोज लड़के का पिता करता है, जिसे जाति का प्रधान महतो अपने साथ कुछ लोगों को लिवा जाकर स्वीकृति प्रदान करता है। चौक पूरने की प्रथा इनमें भी है। विवाह तय होने पर अक्षत छिड़क कर उसे समर्थन दिया जाता है। विवाह के समय मटमंगरा, टीका, तेल - हरदी, पोखरी, मांगर जैसी लोक प्रथायें इस जाति में सामान्य हैं। विवाह में सिद्ध के पेड़ का मंडप में होना आवश्यक है। भुइयां धार्मिक रूप

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 71, Part II
2. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 74, Part II

से अपने को हिन्दू ही कहता है। इनका मुख्य उपास्य काली माँ हैं, जिसे क्रुक आदिवासियों की प्रसिद्ध देवी या पहाड़ी देवी से जोड़ता है। इस तरह का प्रचलन सिंहभूमि में है, जिसका उल्लेख डाल्टन ने अपनी पुस्तक 'एथनालॉजी' के पृष्ठ संख्या 179 पर किया है। इसके अलावा डीह बाबा या डिहवार की पूजा तथा चैत के महीने में धरती माता की पूजा भुइयां नाच गाकर करता है। विलियम क्रुक ने इस जाति के प्रसिद्ध जातीय नायक नादूवीर का उल्लेख किया है। 1 उसके लिये उसनें लम्बीकथा भी उल्लिखित की है। इस कथा को थोड़ा घुमाकर सोनभद्र में निवास करने वाला भुइयां सुनाता है। इसमें गंगाराम और गजाधर तथा उसकी बहन बारिज सोमती और उसके सौन्दर्य की चर्चा है। भुइयां जाति की उपासना पद्धति व सांस्कृतिक परंम्परा में एक दुर्लभ प्रथा आज तक प्रचलित है। यह प्रथा इसी रूप में सोनभद्र मैं दुसाध जाति के लोगों में भी प्रचलित है। जमीन में 6 या 7 फुट लर्म्बी तथा तीन - चार फुट लम्बी मिट्टी निकाल कर आग जला दी जाती है और भुइयाँ इस जलती आग पर नंगे पांव चलता है। 2 इस जाति में यह मान्यता है कि जिस व्यक्ति के भीतर इनके आराध्य वीर की कृपा रहती है, यह आग उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाती। भुइयाँ हिन्दू त्यौहार ही मनाता है। खासकर अनन्त चतुर्दशी, भाद्रपद। इस दिन यह जाति उपवास करती है। अपने दाहिने हाथ पर एक मंगल सूत्र बांधती है। फिर जंगल में जाकर करम वृक्ष की डाल काटकर अपने आंगन में लाकर गाड़ती है। पुरूष इस डालकर को झुककर प्रणाम करते हैं। स्त्रियां इसे लाल रंग से सजाती हैं। प्रसाद रूप में मदिरा पीकर इस वृक्ष के हर ओर मण्डलाकार इस जाति के लोग नाचते हैं। यह भी प्रथा है कि इस वंश की कोई कन्या किसी पुरूष को चाहती है तो इस नाच के समय पुरूष को उसके घुटने पर नृत्य के समय हल्के से मार देती है और उसके माता-पिता अपनी कन्या का विवाह पुरूष से सुनिश्चित कर देते हैं।

इनमें यह मान्यता है कि इस जाति का कोई आदमी बाघ या चीते द्वारा मारा गया है तो वह भयानक भूत-प्रेत बनता है। भुइयाँ जाति का पुरोहित बैगा शराब चढ़ाकर इस आत्मा को तृप्ति देता है। विलियम क्रुक द्वारा किये गये सर्वेक्षण के प्राप्त निष्कर्ष एक शताब्दी बाद भी इस जाति में ज्यों के त्यों प्रचलित हैं। इससे पता चलता है कि जातिगत प्रथायें, रूढ़ियाँ और उनसे जुड़ने वाली मान्यतायें अब भी कितनी जटिल हैं।

चेरो

सोनभद्र के सोनपार क्षेत्र की मुख्य जातियाँ, जो या तो यहाँ की मूल निवासी रही हैं या बिहार, बंगाल से आकर यहाँ बसी हैं, के उद्भव के संबंध में विलियम क्रुक व कर्नल डाल्टन की मान्यतायें अलग - अलग हैं। विलियम क्रुक के अनुसार चेरो एक द्राविड़ जाति है जो या तो श्रमिक वर्ग से संबंधित रही है या खेतिहर वग से तथा मिर्जापुर जनपद के पहाड़ी क्षेत्र में पाई जाती हैं। 3 मिर्जापुर का यह पहाड़ी परिक्षेत्र वर्तमान सोनभद्र है। विलियम क्रुक ने चेरो शब्द को अनार्य जाति का शब्द कहा। साथ ही इसे हिन्दी - चेल तथा संस्कृत चेतक अथक चेदक शब्द से जोड़ा है, जिसका अर्थ दास होता है। चेरो जाति को

---

1. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 80, Part - II
2. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 80, Part - II
3. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 214, Part - II

कर्नल डाल्टन कोलारियन शाखा से जोड़ते हैं जो गांगेय प्रान्त में फैली दिखायी पड़ती है। 1 चेरों का विवरण देते हुए श्री देव कुमार मिश्र नेसफिल्ड को उधृत करते हुए शबर जाति की चर्चा करते हैं तथा यह मानते है चेरों या शबरों की शाखा मुसहर है। 2 चेरों के संबंध में मिस्टर फोब्स द्वारा संग्रहित तथा कलकत्ता रिव्यू के 37 वें खण्ड के पेज 351 पर प्रकाशित एक अर्न्तकथा की चर्चा करते हुये विलियम क्रुक ने लिखा है कि बुदेलखण्ड के एक राजा केशवनारायण सिंह की एकमात्र कन्या के भविष्यफल को जानने के लिये जब उसके कुंडली चक्र का निरीक्षण कराया गया तो पता चला कि यह कन्या किसी ऋषि से ब्याही जायेगी। उसके अतिरिक्त जिससे इसका विवाह होगा, उसका विनाश हो जायेगा। राजा अपनी कन्या को लेकर नेपाल क्षेत्र के मोरांग क्षेत्र तक पहुँचे जहाँ उनकी भेंट चमन (संभवन च्यवन) ऋषि से हुई। लड़की का विवाह इसी ऋषि से हुआ जिससे चेरो अथवा चौहान वंशी राजपूत पैदा हुये। इनके पुत्रों में चेतराव ने राठौर राज्य की स्थापना की। चेरो राजाओं में उदित राय, उदंद राय और छौण राय ने कुमायूँ प्रदेश में राज्य किया और उनके पुत्र फूलचंद ने बिहार के भोजपुर क्षेत्र पर अधिकार किया। 1612 ई० में चेरो पलामू जिले तक पहुँचे तथा ब्रिटिश सत्ता के आने तक पलामू तक इन्हीं चेरो वंशजों का शासन रहा। 3

ब्राम्हण पंरम्पराओं से प्रभावित होते हुये भी इस जाति को डा० बुचनन हैमिल्टन ने इन्हें द्रविड़ जाति से जोड़ा है। छोटा नागपुर के चेरों को हिन्दू परम्परा से संबद्ध करने के बाद भी कर्नल डाल्टन इन्हें मंगोलियन, कोलारियन व द्रविड़ जातियों के निकट अधिक स्वीकार करते हैं। कर्नल डाल्टन की इस मान्यता के पीछे शरीर रचना का आग्रह है। इस प्रजाति के लोग मोटी हड्डियों वाले, छोटी ऑख वाले, छितराई भौहों वाले, नीची चपटी नांक, लम्बे चेहरे वाले तथा मोटे छितरायें ओंठ वाले दिखायी पड़ते हैं। 4 इसी कारण विलियम क्रुक कर्नल डाल्टन के अभिमत का समर्थन करते हुये चेरों जाति को सोनभद्र जनपद के कोल, मझवार जातियों की तरह द्रविड़ जाति से उत्पन्न ही मानते हैं। क्रुक का यह मानना है कि चेरों भूत-प्रेत झांड़ने वाले ओझाओं में मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में सर्वोपरि हैं। इसी कारण इन्हें बैगा भी कहा जाता है। सोन के दक्षिणी भाग में इन बैगा पुरोहितों को महतो और चौधरी दो प्रभेदों में देखा जा सकता है। यही लोग नागवंशी तथा पांडववंशी नाम से भी चर्चित हैं। विवाह इत्यादि में कन्या पक्ष की ओर से बहनों में विवाह में प्रतिबंध नहीं, लेकिन लड़के के चचेरा, फुफेरा, मौसेरा संबंधों में विवाह वर्जित है। विवाह में जाति के बाहर विवाह की स्वीकृति नहीं है। विधवा विवाह मान्य है। लड़कियों को विवाह पूर्व संबंधों की स्वीकृति इनमें है, जो भोजभात देकर सामान्य बना ली जाती है। क्रुक के अनुसार मिर्जापुर के चेरों दस वर्ष की आयु में विवाह करते हैं। बहू का मूल्य चुकता कर विवाह सामान्यतया तय हो जाता है। घर जमाई बनकर, बहू के पिता के घर में ही रहकर परिवार चलाने की प्रथा इनमें सामान्य है। विलियम क्रुक ने बाबा, दादा, भौजी, दुलहिन, काका, काकी, पतोहिया, महतो, महतोआइन

---

1. Discriptive ethnology - Dolton , Page 125
2. सोन के पानी के रंग - देव कुमार मिश्र पेज 54.
3. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 215, Part - II
4. Discriptive ethnology - Dolton , Page 126

लल्लू, जवान भाई, जैसे शब्दों का उल्लेख किया है जो इनमें प्रचलित रहे हैं। 1 इससे यह सिद्ध होता है कि यह जाति शताब्दी के पूर्व ही स्थानीय भोजपुरी का व्यवहार करती आ रही है। 1971 की जगगणना के अनुसार जिले में इनकी जनसंख्या 11,916 व्यक्ति थी।

धांगर

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली जातियों में धांगर जाति अकेली है जो अपनी परम्पराओं और भाषिक प्रयोगों के लिये आज की चुनौती बनी है। धांगर के संबंध में चर्चा करते हुये विलियम क्रुक का यह मानना है कि मध्य भारत में इस जाति को हटकर कहा जाता रहा है। इस प्रकरण में बरार गजेटियर पृष्ठ संख्या 200, तथा बाम्बे गजेटियर खण्ड 16, पृष्ठ - 56 में एक मुगल शासक से संबंधित कथा का उल्लेख करते हुये धांगर की चर्चा हुई है।

डाल्टन के संदर्भ को उधृत करते हुये विलियम क्रुक का यह मानना है कि छुटिया नागपुर के आसपास रहने वाले कुरूख या उरॉव देश के अन्य भागों में धांगर के नाम से चर्चित हैं। कर्नल डाल्टन, धांगर की उत्पत्ति डांग या धांग से मानते हैं, जिसका अर्थ है पहाड़ी। डाल्टन धांगर की चर्चा दक्षिणी प्रान्त के परिक्षेत्र में निवास करने वाले कुछ विशिष्टजनों के प्रकरण में भी करते हैं। 2 रिस्ले के अनुसार बर्दवान जिले के पहरिया लोगों को, जो योद्धा मनःस्थिति के होते हैं, धॉंगर या धंगरिया कहा गया है। छोटा नागपुर में जिन्हें उरॉव कहा गया है, क्रुक की दृष्टि में वे भी धांगर ही हैं। क्रुक मानते हैं कि कार्य के बदले में जो लोग बिना कुटा चावल (धान) पारिश्रमिक के रूप में लेते हैं, ऐसे लोग धांगर नाम से प्रसिद्ध हैं। विलासपुर में इन्हें कनवार कहा गया तथा आदिवासी जनसंख्या में गोड़ों के बाद कनवार (धांगर) की ही संख्या है। क्रुक डा० जे० विल्सन का संदर्भ देते हुये दक्षिण में रहने वाले इन लोगों को संस्कृत के धेनुकार से जोड़ते हैं, जो अपना मूल स्थान छोड़कर देश के अन्य कोनों में निकले हैं। 3 रिस्ले की पुस्तक ट्राइब्स एण्ड कास्ट के पृष्ठ सं० 466 पर प्राप्त विवरण का संदर्भ देते हुये विलियम क्रुक इस जाति को मालवा के होल्कर परिवार से जोड़ते हैं जो देश के अन्य भागों में फैली है। धांगर प्रजाति के संबध में एक मान्यता की चर्चा क्रुक करते हैं और ये मानते हैं कि छोटा नागपुर के लकड़ा सबडिवीजन से जो उरॉव अन्यत्र फैले हैं, उनमें मिर्जापुर के धॉंगर भी आते हैं। मिर्जापुर में रहने वाले धॉंगर बरगद का पेड़ नहीं काटते। इसके पीछे यह मान्यता है कि बरगद का वृक्ष उनके पुरखों में एक है। सोनभद्र के धॉंगरों में एक्का नाम की एक उपजाति है जिसका अर्थ तेंदुआ होता है। इस कारण इसे कुल

---

1. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 218, Part - II
South of the Son it is generally assested that the Bhuiya and Chero or the same. - Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 448, Part - III

2. Discriptive ethnology - Dolton , Page 245
3. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 264, Part - II

देवता मानकर यह उपजाति उसका शिकार नहीं करती। एक दूसरी उपजाति है तिगा। इसका संबंध धॉगर जंगल की एक जड़ी से जोड़ते हैं,जिसे वे नहीं खाते। भागलपुर के धांगरों में तिग का अर्थ बंदर है। सोनभद्र में धांगरों की एक उपशाखा है,जिसे खाहा कहा गया है,जिसका शब्दार्थ है कौआ। इस कारण इस उपशाखा के लोग इस पक्षी का सम्मान करते हैं और इसे आहत नहीं करते। इनकी प्रवृत्तियों और समरूपताओं के कारण क्रुक इन्हें बंगाल के धांगरों के अधिक करीब मानते हैं। 1 जहाँ तक इन आदिवासियों द्रविड़जनों की शरीर रचना का संबंध है ,कर्नल डाल्टन द्वारा प्रस्तुत विवरण और विलियम क्रुक के संदर्भ एक जैसे हैं। इनकी दृष्टि में धांगर हंसमुख, गाढ़ें, काले रंगवाले, तथा शान्त प्रकृति के होते हैं। इनकी मुखाकृति तथा जबड़े का गठन समूह में भी इन्हें अलग प्रकट करता है। मोटे ओठ, भारी जबड़ों से जुड़े हुये जो आयु के साथ बढ़ता जाता है, इन्हें अन्यों से अलग कर देता है। माथा नीचा और सकरा, ऑखे छोटी व चमकती हुई,इनके सतेज चरित्र का परिचायक हैं। इनका रंग बहुसंख्यक रूप में गाढ़ा भूरा, कालिमा की ओर बढ़ता दिखाई देता है। रिस्ले इन गुणों का सादृश्य होते हुये भी इन्हें मंगोल जातियों के बहुत निकट नहीं मानते। जहाँ तक मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाले धांगरों का संबंध है, इनका मानना है कि लगभग दस पीढ़ी पूर्व दक्षिण के बखई नामक स्थान से वे इस क्षेत्र में आये। यहाँ आकर एक पतली घाटी पर कब्जा जमाया,जिसे सथोखा कहते हैं, जहाँ ये अपने पशु चराते थे। इनमें जूरा और बुद्धू महतो की बड़ी प्रशंसा है,जिनके कारण इन्हें साधन और सम्मान प्राप्त है। क्रुक इनकी जातीय पंचायत का उल्लेख करते हैं। यह प्रथा आज भी है। जातीय अपव्यवहार के समय अपनी जाति बिरादरी से निप्कासित धांगर को भोज-भात देना पड़ता है,जिसमें एक या दो बकरे और दस बोतल मदिरा आवश्यक है। किसी लड़की के भागने पर लड़की के पिता को दो बार यह दावत देनी पड़ती है, तब उसे बिरादरी में शामिल करते हैं। अगर किसी अविवाहित कन्या के साथ कोई अप्रासंगिक घटना घटती है,तो पुरूष को भी यह दावत देनी पड़ती है और उनका विवाह स्वीकृत हो जाता है। अगर जाति के बाहर किसी व्यक्ति से किसी स्त्री के संबंध की सूचना मिलती है,तो वह स्थायी रूप से जाति बहिस्कृत हो जाती है। सामान्यतया विवाह की आयु दस से बारह वर्ष है। जाति परम्परा के अनुसार बधु का मूल्य कुल दो रूपया है। कोई शारीरिक दोष व्यवधान का कारण नहीं होता,लेकिन विवाह पूर्व इसकी जॉच पड़ताल दोनों वर्ग कर लेता है। यदि कोई स्त्री प्रमाणित दुराचार का सिद्ध दोषी मानी जाती है,तो पुरूष को तलाक का अधिकार है।

तलाक शुदा स्त्री को पुनर्विवाह की जातीय अनुमति कुछ शर्तो पर मिल जाती है। क्रुक का यह मानना है कि छोटा नागपुर में प्रचलित घोटुल की प्रथा जिसका उल्लेख कर्नल डाल्टन करते हैं, मिर्जापुर के धांगरों में नहीं है। 2 विवाह इत्यादि प्रकरणों में विलियम क्रुक राम रहाई दिन धरना, मानर, खिचरी, सोहर,

---

1. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 265, Part - II
2. " The institution of the Bachelor hall, describe by Colonel Dolton among the oraons (Discribe Ethonology Page _ 247) does not prevail among the Mirzapur Dhangers.-" Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 267, Part II.

तोहार, अहिवात बढ़े जैसे शब्दों का उल्लेख करते हैं। 1 ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनका सूचक स्थानीय भोजपुरी भाषी रहा है अन्यथा सोनभद्र के धांगरों में इन प्रकरणों में इन शब्दों का प्रयोग नहीं होता। जहाँ तक धार्मिक चेतना का संबंध है, सोनभद्र के धांगर हिन्दू हैं, लेकिन किसी भी हिन्दू देवी-देवता की पूजा ये नहीं करते। इनकी आराध्या हैं- वरूणा भवानी, जिनके संबंध में वरूणा अथवा और वरूण देव की कल्पना क्रुक करते हैं। भवानी की पूजा धांगर वर्ष में एक बार करते हैं, और इस समय बकरे की बलि देते हैं अथवा सूअर चढ़ाकर पूजा पूरी करते हैं। एक दूसरे देवता का उल्लेख है जिसका संबंध पशुओं से है। वे देवता हैं - गौरेया, जिनकी पूजा कार्तिक पूर्णिमा को होती है। पशुओ में सुअर तथा सफेद व काले काक की बलि दी जाती है तथा जमीन पर मदिरा चढ़ाई जाती है। इनका बैगा गाँव के डीह बाबा की पूजा करता है। यदि गाँव में चेचक का प्रकोप हो तो स्त्रियां शीतला भवानी, की पूजा करती हैं। किसी बच्चे की बीमारी में हलुआ पूरी चढ़ाकर पूजा करती हैं तथा शीतला की चाँदी की मूर्ति बनाकर पूजा करते हैं। गाँव के डीह के अलावा यह पूजा गाँव के बड़े - बूढ़ो द्वारा संपादित होती है। धांगर होली नहीं जलाते, लेकिन फगुआ मनाते हैं। 2 महिलाओं में गोदना गुदाने की प्रथा है। धांगर स्त्रियाँ तीन लकीरों में गोदना गुदाती हैं। उनमें विश्वास है, कि अगर मदिरा का व्यवहार किया जाय तो मलेरिया का प्रयोग नहीं होता। क्रुक का मानना है कि जनपद की अन्य निरीह जनजातियों की तुलना में मिर्जापुर (सोनभद्र) के धांगर उतनी दयनीय स्थिति में नहीं हैं। धांगरों के संबंध में रसेल मध्य प्रान्त के बरार क्षेत्र के धांगरों की विस्तार से चर्चा करते हैं, जो निश्चित रूप से सोनभद्र के धांगरों से भिन्न है।

धरकार

धरकार शब्द की उत्पत्ति की चर्चा करते हुये क्रुक संस्कृत के धारा जिसका अर्थ रस्सी होता है, से जोड़ते हैं। कार का अर्थ है कर्ता या बनाने वाला। क्रुक यह मानते हैं कि रिस्ले महोदय द्वारा चर्चित बिहार के धरकारों में मिर्जापुर (सोनभद्र) के धरकार एकदम अलग हैं। 3 क्रुक के अनुसार सोन के दक्षिण रहने वाले धरकारों की चार प्रशाखायें हैं, जिन्हें कूरी कहा जाता है। अरिल, नेवरिया, दउरिहा और नगरहा। ये उपशाखायें समान महत्व की हैं, लेकिन वैवाहिक संबंधों में कुछ को छोड़कर बाकी प्रतिबंधित हैं। जिन विवाहों की स्वीकृति प्राप्त है उन्हें क्रुक महोदय गरवट कहते हैं, जिसे आज गुरउट कहा जाता है। इसका अभिप्राय है कि पारस्परिक रूप में एक कूरी के लोगों का दूसरी कूरी के भीतर विवाह संबंध। सोन के दक्षिण में इनका तीन उपखण्ड और मिलता है बेनवंश, बरूआ और डोम, जितनी दो उपशाखायें है खरिया और मतार।

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 268, Part II.
2 "They do not light the holy fire but they celbrate the Phagua." Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 270, Part II.

3. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 279, Part II.

सोनभद्र के धरकारों का मानना है कि उनके पूर्वजों को परमेश्वर ने जब बनाया तो उन्हें एक झांपी से ढक दिया और हाथ में बांकी (एक तरह का चाकू) दे दिया। इस तरह यह जाति आज भी अपने धर्म का निर्वाह करती है।

धरकारों की अपनी पंचायत होती है जिसका एक स्थायी प्रधान होता है, जिसे महतो कहते हैं। इसके सहयोग के लिये एक और व्यक्ति होता है, जिसे दीवान कहते हैं। पंचायत में दीवान सारी बातें रखता है, जिस पर सारा निर्णय महतो का होता है। किसी गंभीर दण्ड के रूप में पूरे गोत्र को दो दिन तक भात और मांस खिलाना पड़ता है। यदि किसी का जाति से निष्कासन हो जाय तो पंचायत से बिना क्षमा पाये, उस घर में विवाह नहीं होता।

इस जाति में बहुपत्नीत्व की भी प्रथा है, लेकिन स्त्री एक से अधिक संबंध रखने पर दंडित होती है। जिन घरों में एक से अधिक स्त्रियाँ हैं, उनमें बड़ी स्त्री सब पर शासन करती है। किसी अनैतिक संबंध में आठ रूपया नगद तथा सबको मांस-भात खिलाने का दण्ड दिया जाता है। सामान्यतया धरकारों में बाल विवाह नहीं है। विवाह अधिकतर फूफा तय करते हैं। दुल्हन को आठ रूपया शुल्क देना निर्धारित है। एक धोती तथा पूड़ी देकर विवाह तय होता है। यदि लड़की किसी कारण किसी घर में रहना स्वीकार नहीं करती, तो उसके पिता को बधू मूल्य वापस करना पड़ता है। यदि पुरूष मना करता है तो बिरादरी उस पर ऐसा न करने का दबाब डालती है। यदि दोनों ही व्यभिचार के आदी हैं, तो महतो की स्वीकृति से तलाक की अनुमति है। यदि ऐसी स्त्री जाति में रहना चाहती है तो इनमें पुनर्विवाह नहीं होता, लेकिन एक विकल्प है, जिसे धरौना कहते हैं। पिता को दउआ, माँ को दाई, दादी को नड़की दाई, पिता के बड़े भाई को बड़का आदि नामों से बुलाया जाता है। इस जाति में लगभग संस्कार वही प्रचलित हैं, जो आस-पास के हिन्दुओं में दिखायी पड़ते हैं। विलियम क्रुक इनके संबंध में कहते हैं कि एक शताब्दी बाद भी धरकार थोड़ी उच्चारण भिन्नता के साथ वही बोलते हैं। मुर्दो के जलाने व गाड़ने दोनों की प्रथा है। ये अपने को हिन्दू कहते हैं। इनके स्थानीय देवता है पहाड़ पांडव, बहिया वीर और देवनाथ, साथ ही दूल्हादेव भी इनके पूज्य हैं। स्त्रियां पैरी, चूड़ी और चुरला पहनती हैं। टिकुली, तरकी इत्यादि इनके प्रिय आभूषण हैं। चूंकि यह जाति बांस की टोकरी आदि बनाने का कार्य करती है, इसलिये उससे जुड़ने वाली शब्दावली भी इनमें प्रयुक्त होती है।

गोंड़

गोड़ों के संबंध में चर्चा करते हुये कुक एक संभावना प्रकट करते हैं और मानते हैं कि गोंड़ जाति का संबंध गउड देश से है। 1 कुक का मानना है कि मध्य भारत तथा झांसी और ललितपुर में निवास करने वाले गोड़ों से भिन्न सोनभद्र के गोड़, मांझीं और खरवार की तरह उस महान गोड़ जाति के प्रतिनिधि हैं, जिनमें अपने जातीय गुण अब भी सुरक्षित हैं। यह जाति बारह उपशाखाओं में विभाजित

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 430, Part II.

है। इनमें राजगोड़, रघुवाल, दादव, कटुल्य, पादाल, धोरी, ओभीचाल, धोत्याल, कोलाघुटाल, कोयकोपाल, कोलाम और माद्याल प्रमुख हैं। 1 कुछ विद्वान इस जाति को पुलस्त्य ऋषि का वंशज कहते हैं तथा यह मानते है कि मध्यकालीन साम्राज्यों के पतन के बाद इस जाति का प्रभुत्व सोनभद्र में स्थापित हुआ। सोन क्षेत्र की भीतरी और वाहरी सीमा पर जब अनके जातियों - जनजातियों के बीच एक दूसरे को पीछे ढकेलने के लिये द्वंद मचा था और प्रवल जन अपने आधिपत्य विस्तार में लगे थे, और केन्द्रीय शक्ति कमजोर पड़ गयी थी, त्रिपुरी के कलचुरी वंश का अंत हो रहा था और चंदेल वंश पनप रहा था, तब तेरहवी सदी के प्रारम्भ में पश्चिमी सीमा पर एक नयी जनजाति ने दस्तक देना शुरू किया। अपने को पुलस्व्य के वंशज कहने वाले ये गोंड़, द्रविड़, आदि जन थे; जिनकी राजनैतिक छाया धीरे - धीरे सोन क्षेत्र के दक्षिण - पश्चिमी क्षितिज पर छा गयी। 2 गोंड़ जाति की शारीरिक संरचना के संबंध में विद्वानों ने जो लिखा है,उसमें आज की तिथि तक कोई अन्तर नहीं आया। विलियम क्रुक हिसलप महोदय को उनके संदर्भ मे Islands of Central India Page 156 के आधार पर यह लिखते हैं कि यूरोपियन की तुलना में इनका रंग सामान्यतया काला है। इनकी शारीरिक रचना का संतुलन थोड़ा ठीक है लेकिन इनका स्वरूप बहुत आकर्षक नहीं है। गोला सिर, नीचे दबी नाक, फैले ओठ, लंबा तना शरीर, काले बाल और चेहरे पर विरल दाढ़ी - मूंछ। यह अनुमान है कि मध्य भारत के आदिवासी गोड़ों का शरीर विशेपतः सिर घने बालों से ढका है। हिसलप स्पप्टतः यह कहते हैं कि इस तरह के घुंघरालें बालों वाले गोंड़ को उन्होंने हजारों में भी नहीं पाया है। मिस्टर हिसलप निश्चयपूर्वक यह मानते हैं कि गोड़ों के केश और उनकी आकृति मंगोलों से मिलती है। कैप्टन फोरसिथ ने इस जाति की महिलाओं का विवरण अलग से दिया है। 3 उनका यह मानना है कि गोंड़ स्त्रियां अपने निचले हिस्से और ऑखों की संरचना में बंदरों के अधिक निकट हैं यद्यपि कम उम्र की लड़कियों में प्रथम दृप्टतया आकर्षण दिखता है,लेकिन आयु के बढ़ने के साथ कठोर शारीरिक परिश्रम के कारण इनका आकर्षण उतना नहीं रहता।

स्त्रियों में विवाह की आयु आने के साथ गोदना का प्रचलन है, जो शरीर के अधिकांश भाग में गोदा जाता है। अपने दोनों हाथ व पांव में ये स्त्रियॉ मोटे कड़े पहनती हैं। संभव हुआ तो चांदी के,नहीं तो गिलट के। 4 गोड़ जाति में विवाह तथा अन्य संस्कार अन्य आदिवासी जातियों की तुलना में थोड़े भिन्न हैं। इनमें विवाह की सात विधियॉ प्रचलित हैं। विवाह का निश्चय होने पर अपनी बहन के वच्चों में लड़की के वर का चुनाव सबसे पहले किया जाता है। संभव न होने पर गोंड़ किसी अन्य की बात करता है। ऐसा न होने पर स्थिति उल्टी होने पर बहन भाई के लड़के को प्राथमिकता देती है। इसके पीछे खर्च कम हो, यह प्रवृत्ति रहती है। लड़के जब दस वर्ष की आयु होते हैं तो गॉव के व्यक्तियों की पंचायत बैठती है तथा व्यवहार का निर्णय होता है। यदि कोई निर्धन परिवार का व्यक्ति रहता है,तो लड़की के पिता के घर 6 महीने से लेकर तीन वर्ष तक उसका काम करता है। इसे पंचायत परीक्षण अवधि मानती है, तथा इस अवधि में सफल न होने पर विवाह टूट भी जाता है। एक दूसरी विधि यह भी है कि महिला अपने लिये पुरूष स्वयं चुनती

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 431, Part II.
2. सोन के पानी के रंग - देव कुमार मिश्र पेज 63
3 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 432, Part II.
4. Island of Central India - Hislap, Page 276.

है और घर से भाग जाती है।लेकिन ऐसा कम ही होता है। जाति पंचायत को यह हक है कि लड़की के चाहने पर भी वह जबरदस्ती उसे प्रेमी के घर से लाये व भांजे या भतीजे से विवाह कर दें। किसी - किसी निर्धन परिवार में यदि इस तरह के संबंध नहीं मिलते,तो पंचायत के सदस्यों को भोज - भात देकर इसकी अनुमति मिल जाती है। विधवा - विवाह का इनमें चलन है तथा गोड़ों की प्रथायें प्रकरण में दो स्थितियों का संकेत देती हैः-

1 देवर से विवाह की, जो जाति पंचायत से स्वीकृति होता है।

2. इस जाति की स्त्री जिस परिवार में जाकर रहना पंसद करती है,जाति के लोग उसकी अनुमति दे देते हैं।

गोड़ जाति में मृतक के बड़े भाई से विधवा का विवाह पूर्णतः वर्जित है। परिवार में पत्नी की संख्या गौड़ के संसाधन पर निर्भर है, इसमें कोई कठोरता नहीं है। गोड़ में मृतक व्यक्ति का वड़ा आदर है और सम्मान के साथ उसकी अन्तयोष्टि क्रिया की जाती है। इनमें वृद्ध को जलाने तथा बालकों और स्त्रियों को दफनाने की प्रथा है। 1 प्रारम्भ में गौड़ जाति मृतक को उसी घर में दफना देती थी, जिसमें मृत्यु होती थी।बाद में इस तरह गॉव के निकट,कब्रगाह में लाशों को गाड़ने का प्रचलन हुआ। इनमें दाह कर्म कभी - कभी होता है। कब्र इस तरह खोदी जाती है कि मृतक का सिर उत्तर की तरफ हो। यह मान्यता है कि पिता की मृत्यु के बाद यह संभावना रहती है कि घर के शेष लोगों का कुशल नहीं होगा। इसलिये कब्र के सिरहाने दो वर्ष तक प्रतिदिन भोजन चढ़ाया जाता है। वस्त्र के खूंट में हल्दी की गांद बाधकर बैगा घर के चारों ओर घूमता है। भेड़ या सुअर के मांस को लाश के सिरहाने चढ़ाता है, ग्राम देवता की पूजा करता है। गॉव के बड़ों व संबधियों को भोजन दिया जाता है, इस तरह यह क्रिया समाप्त होती है। इस जाति में अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग स्थानीय देवताओं का प्रचलन है। दूल्हा देव, नारायण देव, माता, देवी, खैरमाता, घनश्याम देव इनके उपास्य हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि ये सारे देवी देवता हिन्दुओं से संबंधित हैं,जो इनमें भी समान रूप से प्रचलित हो गये हैं।

खरवार

खरवार के संबंध में यह मान्यता है कि यह कृषि व्यवसाय से संबंधित है तथा स्वयं की भूमि की मालिक द्रविड़ परम्परा की एक जाति है जो सोनभद्र में निवास करती है। चूंकि इस जाति के लोगों के पास पर्याप्त भूमि हैं,इस कारण इनके प्रभेदों की सामाजिक स्थिति का वर्णन सरल नहीं है तथा इनकी स्थिति अन्य लोगों की तुलना में ऊंची है। कर्नल डाल्टन का अभिमत है - इस जाति की टोटेम पद्धति के विश्लेषण ये यह सिद्ध है कि इसका संबंध द्रविड़ परम्परा से है तथा ये जिसके सर्वाधिक निकट हैं, वे हैं चेरो जनजाति के लोग। 2 इनके संबंध में संथालों में प्रचलित एक लोक कथा का उल्लेख आवश्यक है। कथा है, एक जंगली जीव समुद्र से निकलकर प्रकाशवान दीप अहीरी - पिपरी में पहुँचा और वहाँ दो अण्डे दिये। इनसे

---

1. " The Male is that, if possible, men over 50 should be burried. Old man always burnt, women are always burried" Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 435, Part II.

2. Discriptive Ethonology - Dalton - Page 127

एक नर का जन्म हुआ दूसरे से मादा का। ये दोनों ही संथाल जाति के आदि पुरूष बने। अहीर पिपरी से एक शाखा हरदत्ती की ओर प्रस्थान कर गयी, जिसने कालान्तर में बड़ा विकास किया। इन्हीं को खरवार कहा गया है। कर्नल डाल्टन इस कथा का समर्थन करते हैं। 1 डाल्टन यह मानतें है कि जिन्हें हम संथाल कहते हैं, उन्हें प्रारम्भ में खरवार कहा जाता था। 2 मिस्टर रिस्ले दक्षिण के लोहार डागा स्थान का उल्लेख करते हुये इनकी उत्पत्ति के संबंध में खर घास का उल्लेख करते हैं, जो इनका टोटेम है। इस कारण ये बढ़ती खर (घास) को नहीं काटते। जहाँ तक सोनभद्र में रहने वाले खरवारों का प्रश्न है, विलियम क्रुक के शताब्दी पूर्व किये गये विश्लेषण के अनुसार ही ये लोग अपनी टोटेम परम्परा भूल गये थे तथा अपने जाति के नामकरण के संबंध में ये मानते हैं कि खर बनाने के कारण इन्हें ये नाम मिला। इस जाति के लोग अपना मूल स्थान खैरागढ़ बताते हैं। कर्नल डाल्टन ने खैरागढ़ को बिहार के हजारीबाग से जोड़ा है, जबकि सोनभद्र के खैरवार खैरागढ़ को छत्तीसगढ़ से जोड़ते हैं। खैरवार यह भी मानते हैं कि ये रींवा तथा सिंगरौली से विस्थापित होकर सोनपार क्षेत्र में आये। इस जाति का जातीय प्रतीक चिन्ह कोट कहा जाता है जो पुराने मिर्जापुर जनपद के सिंगरौली परगना का हिस्सा रहा है। यहाँ ज्वालामुखी देवी का मंदिर है, जहाँ चैत रामनवमी को खैरवार इकट्ठे होते हैं तथा पूजा करते हैं। इनके पुरोहित ऐसे अवसरों पर ब्राम्हण होते हैं, जो सिंगरौली तथा पलामू जिले से आते हैं। 3

सोन नदी के दक्षिण बसे हुए खैरवारों की एक दूसरे से संबद्ध चार उप शाखायें हैं - 4

i. सूरजवंशी - जिनकी व्युत्पत्ति सूर्य से बताई जाती है।

ii. दुआलबंधी- इनका दूसरा वर्ग, जो दुआल शब्द से संबंधित है जिसका अर्थ सिपाही होता है।

iii. पातबंधी- इसके पीछे यह मान्यता है कि कभी ये बहुत धनी थे और ये रेशमी वस्त्र पहना करते थे।

iv. बेनवंशी- इनका संबंध राजा बेन से बताते हैं। विलियम क्रुक ने इनमें से एक को सिंगरौली रियासत का राजा बताया है। जहाँ तक इनकी शरीर रचना का प्रश्न है, इस जाति से संबंधित लोग यहाँ के अन्य आदिवासियों से भिन्न हैं। कर्नल डाल्टन इनकी तुलना संथालों से करते हैं और लिखते हैं कि ये लोग काले, दबी नाक वाले, मोटे तथा चौड़े होठं वाले, चपटी हड्डी वाले हुआ करते हैं। क्रुक के अनुसार दक्षिणी मिर्जापुर अर्थात वर्तमान सोनभद्र में अन्य द्रविड़ जातियों के साथ रहते हुये इस जाति के लोग आसानी से अलग नहीं होते, लेकिन खैरवार अपने नाम की बनावट और भुइयार अपनी नासिक्य ध्वनियों के उच्चारण के कारण सहज रूप से अलग दिखते हैं। 5 सोनभद्र के दुद्धी क्षेत्र में तीन जातीय पंचायते है जो गौड़ा, बजिया और बभनी में केन्द्रित हैं। जाति का मुखिया या महतो जाति के किसी व्यक्ति के संबंध में सूचना मिलने पर पहले

---

1. Discriptive Ethonology - Dalton - Page 209
2. Discriptive Ethonology - Dalton - Page 210
3. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 238, Part II. (Published - 1886)
4. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 238, Part III.
5. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 240, Part III.

स्वयं जानकारी लेता है, जब भी किसी पर आरोप लगता है तो सही बोलने की शपथ ली जाती है। यदि पंचायत को साक्ष्य पर विश्वास नहीं रहता तो पांच लोगों की उपसमिति बनती है, जिसे पचकुटी कहते हैं। सिंगरौली में पर्याप्त भोजन और मदिरापान की व्यवस्था करके पंचायत बुलाने की व्यवस्था है। गॉव के मुखिया को गवहॉ कहते है। किसी अभियोग के समय एक गवहॉ कई गॉव में गवहॉ लोगों को बुलाकर निर्णय करता है। जहॉ तक वैवाहिक संबंधों की बात है, खैरहा उपशाखा के अलावा अन्य शाखाओं में आपस में विवाह की अनुमति है, लेकिन मामा और फूफा के परिवार में संबंध निषिद्ध है। इस जाति में बहुपत्नीत्व की प्रथा प्रचलित है। विधवा-विवाह भी स्वीकृत है। अन्य हिन्दू परिवारों की तरह अन्य परम्परायें इनमें प्राप्त हैं। आदिम जातियों की तरह मिर्जापुर के खैरवारों में कुछ अति प्राचीन प्रथायें भी प्राप्त हैं। मंगनी अथवा बरेखी के लिये एक दिन निश्चित होने पर लड़के का पिता तीन या चार हड़िया शराब तथा पॉच रूपये नकद के साथ पूआ (खाद्य) लेकर जाता है। उसके साथ बिरादरी के चार - पॉच लोगों का होना जरूरी है। लड़के और लड़की का पिता आमने - सामने बैठते हैं तथा लड़के का पिता लड़की के मूल्य को थाली में रखकर लड़की के पिता को देता है, फिर थाली शराब से भर दी जाती है तथा उसका आदान - प्रदान किया जाता है। यह काम चार बार और होता है। इसके बाद वर पक्ष के लोग घर से बाहर जाकर जमीन पर बैठ जाते हैं फिर लड़की की एक या दो सहेलियॉ उनके पास आती हैं और कहती हैं कि लड़की का पिता आपका सम्पूर्ण सत्कार नहीं कर सकता, इसलिये उसने चौराई का साग भेजा है। उन्हें उत्तर मिलता है कि हमारा संबंध हर तरह से समधी के साथ है, फिर साथ में लाये बकरे को, लड़की के पिता को दे दिया जाता है जो इससे मांसाहार बनवाता है, जिसे सभी स्वीकार करते हैं। इनमें कलश, दूब, महावर जैसे प्रसाधन अन्य जातियॉ की तरह प्रयुक्त हैं। द्वारपूजा, टीका, जनवासा, कोहबर जैसी प्रथाये अन्य हिन्दू जातियां के समान प्रचलित मिलती हैं। जहॉ तक अन्त्येष्टि क्रिया का संबंध है मरणासन्न व्यक्ति को मरते समय खुली हवा में इस जाति के लोग रख देते हैं तथा मृत्यु के दिन, घर व आंगन में कोई नहीं सोता। विलियम क्रुक पश्चिमी लेखक टाइमर की पुस्तक **Primitive Culture भाग – 1** में उल्लिखित एक उदाहरण के आधार पर मानते हैं कि यह प्रथा कांगो के नीग्रो जाति से मिलती जुलती है। 1 मृत्यु के दसवें दिन मृतक के नाम पर बकरे की बलि देने की प्रथा इनमें प्रचलित है। खरवार अपने को हिन्दू कहते हैं, लेकिन सूर्य के अतिरिक्त अन्य देवता की पूजा नहीं करते। इनके जातीय देवता है - राजा लाखन तथा कोटा की ज्वालामुखी देवी। विलियम क्रुक यह मानते हैं कि कांगड़ा घाटी में नारकोट स्थान परप्राप्त ज्वालामुखी देवी से खैरवारों की देवी भिन्न हैं। लाखन की पूजा सावन में होती है। जहॉ हवन करते हैं और बकरे की बलि दी जाती है। ज्वालामुखी देवी की भी पूजा सावन में होती है। इसके अतिरिक्त डिहवार बाबा, धरती भाई तथा महादेव की भी उपासना खैरवार करते हैं तथा बैसाख महीने में बैगा बकरे की बलि देकर इन्हें प्रसन्न करता है। यदि किसी खैरवार को एक से अधिक पत्नियॉ हैं तो सबसे ज्येष्ठ को ही इस तरह की पूजा में सम्मिलित होने का अधिकार है। घर के दक्षिण- पश्चिम कोने का घर इनका देवधर (देवगृह) होता है, जिस घर पर भूलकर भी कोई बात नहीं चलाता। घर में नई दुल्हन के आने पर रसोई-घर के सामने दूल्हा देव की पूजा होती है। इस जाति में मूछक रानी नाम की एक स्थानीय देवी का भी उल्लेख है जो जाति से चमाइन थी, लेकिन इस परिवार में पूज्य है। इस जाति का मुख्य पर्व भादों

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 246, Part III.

महीने में मनाया जाता है, जब करम वृक्ष की डाल काटकर इस जाति के लोग आंगन में गाड़ते हैं। धांगर जाति के ही लोगों की तरह इस जाति के लोग रंगीन वस्त्र पहनते हैं तथा पुरूष व स्त्री आमने - सामने पंक्तिवद्ध होकर खड़े हो जाते हैं। उस समय मादर बजाकर ये लोग मंडलाकार नृत्य करते हैं। इस बीच इनमें से ही कोई देवीय शक्ति से प्रभावित हो जाता है, और रूक - रूक कर, अस्फुट रूप में शब्दों का उच्चारण करता है। इस समय इनके कृषि देवता वघेसर की पूजा बैगा करता है। मुर्गा तथा एक उजली मुर्गी की बलि आदि चण्डी देवी के नाम से अर्पित करता है। विलियम क्रुक बंगाल के मुण्डा परिवार के लोगों से इसकी तुलना करते हुये इस प्रथा को उसी प्रकरण से जोड़ते है। 1 इस जाति के लोगों में एक स्थानीय संगठन मिलता है जिसे एका कहा गया है।

कोल

विन्ध्य-श्रृंखला की कैमूर शाखा के आसपास कोल जाति के लोगों का पर्याप्त संख्या में निवास है। विलियम क्रुक के अनुसार यह जाति द्रविड़ कुल से संबंध रखती है। 2 कोल का शाब्दिक अर्थ है सूअर। लोहार डागा के मुण्डाओं से आकृति सादृश्य का उल्लेख करते हुये कर्नल डाल्टन मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाली कोलों की शरीर रचना के प्रति टिप्पणी करते हैं और यह मानकर चलते हैं कि इनकी लंबाई लगभग 5.5 फीट की होती है और और आर्यों के रक्त से इनका काफी सकरण हो गया है। कुछ कोलों की नाक लम्बी भी मिलने लगी है। स्त्रियाँ आकर्षक दिखती हैं, पुरूषों में मंगोल जाति का सादृश्य अधिक है तथा अपने काले घुघरालें वालों के कारण कोल संथालों के निकट दिखायी पड़ते हैं। इनका रंग तांबई है। माथा आगे की ओर उभरा हुआ। सोनभद्र में निवास करने वाले कोल गाढ़े रंग के है और इनकी देह रचना खैरवारों के करीब है।

इनकी वंश उत्पत्ति को लेकर जनश्रुति है कि चन्द्रवंश के राजा ययाति ने अपने राज्य को पाँच बेटों मे बाँट दिया तथा उनकी दसवीं पीढ़ी के चार भाई पाण्डय कोरल, चोल व कोल ने मिलकर वंशानुक्रम में राज्य बांट लिया। वर्तमान कोल इसी कोल वंश के वंशज है। 3 इस क्रम में सिंगबोंगा की भी चर्चा है जिन्होंने पुरूष - स्त्री के रूप में युग्मों को पैदा किया जो इस जाति के आदि पुरूष थे। 4 मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाले कोल रीवां राज्य के समीपवर्ती छोटे राज्य वर्दी के क्यूतली नामक स्थान से विस्थापित होकर आकर बसे। इस बात का उल्लेख विलियम क्रुक करते हैं। 5 आने वालों में नान्हू नामक कोई व्यक्ति था, जो इनका पूर्वज था जिसने चुनार के निकट अपना उपासना क्षेत्र बनाया, जिनकी देवी थी विरन्हा देवी। कुआर अथवा चैत के महीने में हवन द्वारा इनकी पूजा होती है तथा बकरे की बलि दी जाती है।

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 252, Part III.
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 294, Part III.
3. Asiatic Researches Page 91, Part IX "- K. Willford. " Reference - Ethnology - K. Dolton Page - 161.
4. Mirzapur District Gaztaier Page 101.
5. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 296, Part III.

कर्नल डाल्टन के अनुसार इनके जातीय उपास्य हैं राजा लाखन अथवा लाखन देव। मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर के अनुसार भी इनके मुख्य देवता राजा लाखन हैं। यह चर्चा है कि सक्तेसगढ़ और कोलना परगना (दोनों चुनार तहसील के महत्वपूर्ण स्थान) के शासक थे ये कोल। बनारस में एक परगना है कोलअसला। यह इन्हीं कोलों के नाम पर है। मिर्जापुर में यह सन्दर्भ इसी रूप में प्राप्त हैं। सोनभद्र में निवास करने वाले कोल अपना अलग टोटेम मानने वाले लोग हैं। गॉव में इन्हें दहइत भी कहते हैं, जिसका एक अलग ही रूप है - महतियान या महतो। थाकुरिया, बनज, बरवार बिन, बिन्द, हरबरिया, रजबरिया इनकी उपशाखायें हैं। कोलों में ये लोग अपने को चेरों भी कहते हैं लेकिन सोनभद्र में दोनों में भिन्नतायें है। इनकी अपनी जातीय पंचायत है जिसमें परिवार का मुखिया और इनका मुखिया बैठता है जो विवाह और नैतिकता के प्रकरणों में निर्णय करता है। पंचायत का चौधरी आनुवंशिक रूप में निर्धारित होता हैं। गंभीर अपराधों में संबंधित व्यक्ति को जाति से बाहर कर दिया जाता है, जिसे एक निश्चित खान-पान की व्यवस्था के बाद शामिल कर लिया जाता है। इनमें वैवाहिक संबंध अपनी कूरी में होता है, लेकिन नाना और बुआ के निकट संबंधों पर विचार करने के बाद ही निर्णय होता है। शताब्दी पूर्व विलियम क्रुक के सर्वेक्षण के समय वधु का मूल्य कुल चार आना तय था। आज वह केवल प्रतीक भर रह गया है। खरवाँस को छोड़कर बाकी महीनों में इनमें विवाह का प्रचलन है। दूल्हे के मित्र दुल्हन द्वारा बनाई खिचरी खाते हैं तथा उसे भेंट देते हैं। स्त्रियाँ कठिन परिश्रम करती हैं। परिवार में बहुपत्नीत्व की प्रथा है जिसमें अन्य पत्नियों के चुनाव अथवा अन्य प्रकरण में बड़ी पत्नी ही निर्णय करती है। इनमें जो लोग बधू मूल्य नहीं दे पाते, उनमें अपवाद रूप में कुछ अविवाहित भी मिल जाते हैं। जाति से बाहर देह संबध वर्जित है। बाल विवाह इनकी प्रथा में नहीं है। लड़की जब तक सयानी नहीं होती, इस जाति के लोग सामान्यतया उसका विवाह नहीं करते। इनमें तलाक के संबंध में एक निश्चित धारणा है। कोई भी पुरूष तथा स्त्री जो किसी कारणवश जाति से बाहर कर दिया गया है, उसे तलाक दिया जा सकता है। जिन स्त्रियों के बच्चे हैं, बिना प्रमाण के उन्हें तलाक नहीं दिया जाता। यदि किसी महिला को अभिचार के कारण तलाक मिलता है तो वह स्थायी रूप में जाति से निष्कासित होती है और उसे पुर्नविवाह का अवसर नहीं मिलता। बच्चे के जन्म अथवा अन्य प्रकरणों में इनमें स्थानीय अन्य सवर्णों की तरह अन्य प्रथायें प्रचलित हैं। क्रुक ने मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) के वर्तमान संदर्भ को उधृत करते कहा है कि चूंकि इस क्षेत्र में वधू मूल्य बढ़ गया है, इसलिए इन प्रकरणों में थोड़ा अन्तर आया है। विवाह में सुग्गा, मांनर, मटमंगरा, कोहबर जैसे प्रकरण सामान्य हैं। मृत्यु के समय कोल व्यक्ति को जमीन पर लिटा देते हैं। इनमें शवदाह की प्रथा हो गयी है। केवल छोटे बच्चे जमीन में दफनायें जाते हैं। सोन नदी के उत्तर रहने वाले कोल मृतक को गाड़ते भी है। शवदाह के बाद घर लौटकर सभी थोड़ा - थोड़ा दूध पीते हैं। कुश से जल छिड़कते हैं। क्रुक ने लोहे के एक टुकड़े को लोटे में रखकर पीपल के वृक्ष में घण्ट बांधने की बात मिर्जापुर के कोलों के संबंध में लिखी है।

कोल अपने मृत पुरखों की भी पूजा करते है। जिनमें सिंगबोंगा प्रमुख है। बंगाल के मुण्डा लोगों की तरह ये सूर्य की भी पूजा करते हैं। 1 कोल भूत - प्रेत भी मानते हैं, उनसे डरते भी हैं। डिहवार बाबा, बड़ा देव या बड़का देव की भी पूजा इनमें होती है। पूजा घर के अगल - बगल ये लाल भांग गाड़ते हैं तथा बलि देकर देवता को प्रसन्न करते है। इनके पर्व त्यौहारों के संबंध में रिस्ले को उधृत करते हुये

---

1. Mirzapur District Gaztteer Page 101.

क्रुक का मानना है कि मिर्जापुर सोनभद्र के कोल मुण्डा लोगों की तरह त्यौहार मनाते हैं। लेकिन नवरात्र, खिचड़ी, नागपंचमी जैसे पर्व भी इनमें प्रचलित हैं। स्त्रियाँ गोदना गुदाती हैं। इनकी दृष्टि में गाय का हर रोआं देवता है। इस कारण कोलारियन शाखा के अन्य जातियों की तरह दूध के प्रयोग के प्रति इनमें पूर्वाग्रह है। ये सबका छुआ नहीं खाते। माँसाहार इनमें प्रचलित है। कृषि इनका मूल व्यवसाय है और खेती से जुड़े ये लोग जगल जलाकर भूमि तैयार करते हैं और खेती करते हैं।

कोरवा

कोरवा का उल्लेख मिर्जापुर के दक्षिणांचल अथवा वर्तमान सोनभद्र के लिये होता आ रहा है, लेकिन दुद्धी तहसील के कुछ स्थानों के अतिरिक्त इस जाति के लोग अन्यत्र प्राप्त नहीं हैं। क्रुक ने सोन के दक्षिण सरगुजा के आस - पास इनका निवास बताया है और यह कहा है कि दो पीढ़ी पहले ये सरगुजा से आकर दुद्धी के पठार में आकर बसे थे। 1 क्रुक के बाद लगभग 100 वर्ष की अवधि बीत गई है। इसमें चार पीढ़ी और की संभावना की जा सकती है। इस जाति की उत्पत्ति के संबंध में कई तरह की अन्तर्कथायें मिलती हैं। छोटा नागपुर के क्रूर लोगों से भी इनका संबंध जोड़ा गया है। क्रुक इन्हें कोल से भी जोड़ते हैं। कोरवा की जो अन्य उपशाखायें बंगाल में मिलती हैं जैसे अगरिया कोरवा, दंद कोरवा, डीह कोरवा, पहरिया कोरवा, उनका कोई भी चिन्ह सोनभद्र में नहीं है। सोनभद्र (पुराना मिर्जापुर) में प्राप्त इस जाति की दो उपशाखायें, कोरवा और कोराक का उल्लेख विलियम क्रुक ने कर्नल डाल्टन के आधार पर किया है। उनके अनुसार कोरवा - दुद्धी तथा सरगुजा के दक्षिणी हिस्से में रहते हैं तथा कोराक सरगुजा की घाटियों में। कोरवा सदैव धनुष बाण लिये रहते हैं। क्रुक का यह मानना है कि मिर्जापुर के कोरवा पुरूषों की कोराकु व महिलाओं को कोरिक बोलते है। 2 जाति के लोग खेती नहीं करते। जंगली पशुओं की तरह निवास करते हैं। चूंकि महिलायें अधिक परिश्रमी हैं इसलियें इनकी प्रभुता परिवार में अधिक है। क्रुक ने इनकी जातीय पंचायत को भइयारी कहा है। कोरवा जाति के दो प्रधानों सोमचन्द्र कोरवा का उल्लेख विलियम क्रुक ने किया है। जब भी किसी अभिचार के संबंध में निर्णय करने के लिये जाति पंचायत बैठती है तो इस जाति की प्रत्येक बालिग स्त्री को उसके बैठने का अधिकार प्राप्त है। यहाँ दण्ड के रूप में केवल दावत देने की व्यवस्था है और यदि कोई आज्ञा नहीं मानता तो उसे दावत देने तक जाति से बाहर रखा जाता है। मिर्जापुर - सोनभद्र की चर्चा करते हुये क्रुक का मानना है कि इस जाति में उपशाखा नहीं है। मामा व फूंफा को छोड़ विवाह की स्वीकृति है लेकिन कभी - 2 चार पीढ़ी तक यह संबध नहीं बनाया जाता। जनजातियों की यह अकेली जाति है जिसमें एक पत्नी-व्रत की बात की जाती है। लड़के के विवाह की आयु तथा लड़की की दस वर्ष स्वीकृत है। पत्नी के चयन में उसके रूप की तुलना में उसकी कार्य-क्षमता को अधिक महत्व है। 3 बहू का मूल्य एक मन चावल और पाँच मन चावल तय है। विवाह तय होने के बाद किसी शारीरिक कारण या अन्य कारणों मे विवाह नहीं तोड़ा जा सकता। जहाँ तक तलाक का संबंध है, इस

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 322, Part III.
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 323, Part III.
3. There is in Mirzapur no Exogamons subdivision selecting the wife working capability are more refered then beauty. - Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 323, Part III.

जाति का व्यक्ति डोम, चमार या धरकार के हाथ का छुआ खा लेता है तो पुरूष या स्त्री किसी को भी तलाक पाने का अधिकार है। तलाकशुदा स्त्री को पुनर्विवाह का अधिकार नहीं है। इनमें विधवा विवाह स्वीकृत है। सवा रूपये देकर विधवा को पत्नी के रूप में रखा जा सकता है यदि मृतक का छोटा भाई विधवा से विवाह का इच्छुक है तो वह स्त्री किसी बाहरी व्यक्ति में विवाह नहीं कर सकती। यदि विधवा का कोई दूधपीता बच्चा है तो उसे वह अपने नये पति के यहाँ ले जाती है। बड़े बच्चे पति के यहाँ ही रहते हैं। किस घर में लड़का अथवा लड़की ब्याही जाय इसके अतिरिक्त यह जाति अन्य संबंध नहीं जानती। विलियम क्रुक ने संबंध सूचक कुछ शब्दों का उल्लेख किया है जो आज भी प्रचलित हैं। पिता को आया, दादा को तदन्ता, परदादा को दादी पुत्र को धेपोन, नाती को कुटी और पुत्र के नाती को बघेतु कहा जाता है। वैवाहिक प्रकरणों में लड़के का पिता जाकर लड़की देखता है और जब विवाह तय करता है। वधू जब घर आती है तो घर का बुजुर्ग उसे समझाता है कि तुम इसकी पत्नी व इसकी पतोहू हो गयी हो। इसमें मृतक को जलाने व गाड़ने दोनों की प्रथायें है। मृत्यु के दिन ये पूरे समूह को खबर देतें हैं जिसे खोइया या खउर देतें हैं। ये न तो अपने को हिन्दू कहते है न ही इनकी धार्मिक क्रिया में किसी ब्राहम्ण का संबंध है। फागुन के महीने में मुर्गा, सिन्दूर व फूल चढ़ाकर ये अपने जातीय देवता राजा चंडोल की पूजा करते हैं। यह क्रिया इनका बैगा सम्पन्न कराता है। बैगा बूंद - बूंद मदिरा गिराते हुए गाँव से बाहर जाता है ताकि गाँव के भूत गाँव से बाहर चले जाँय। गंभीर अस्वस्थता के अतिरिक्त कोरवा अपने पूर्वज की पूजा नहीं करता। स्थानीय देवताओं में डीह देवता, ग्राम देवता और गृह देवता की पूजा करते है। गाँव में यदि चेचक व कालरा का प्रभाव होता है तो गुड़ व घी से बैगा हवन करता है। यह जाति शिकारी व मांसाहारी है लेकिन ये सबका मांस नहीं खाते। भालू, बंदर सूअर की मांस इन्हें प्रिय है। ये मदिरा गांजा, तंबाकू लेते हैं। महुआ इनका प्रिय भोजन है। जंगली फलों में पियार जिससे चिरोंजी बनती है, अधिक खातें हैं। जड़े खोदकर उनका व्यवहार भोजन के रूप में अधिक है। जंगली बस्तुओं को आस-पड़ोस से विनिमय कर ये अन्य वस्तुयें भी ले लेते हैं। कम से कम कपड़ा इनके शरीर पर देखा जा सकता है। कोरवा स्त्री हॉथ में गिलट का कड़ा व पैर में पैरी पहनती है। ये टांगी व भाला चलाने मे निपुण होते हैं। सूखे बांस को रगड़कर उससे आग निकाल लेना इनकी मुख्य कला है। क्रुक कोरवा को प्राचीन जनजाति मानते हुये यह कहते है कि प्रान्त की यह सबसे असहाय निर्धन जाति है। 1 क्रुक अथवा कर्नल डाल्टन ने गुलाम भारत में इस जाति का सर्वेक्षण किया था लेकिन एक शताब्दी बाद भी कोरवा के स्वभाव, संस्कार तथा सामाजिक, आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

मझवार

मझवार, माझीं अथवा गोड़ द्रविड़ जाति से संबंधित एक ऐसी परम्परा है जो दक्षिण सोनभद्र में निवास करती है। 2 माझी अथवा मझवार की उत्पत्ति विद्वानों ने संस्कृत मद्य शब्द से की है, जिसका संथालों अथवा मुण्डा जाति में अर्थ होता है मुखिया। जिला गजेटियर मिर्जापुर के अनुसार मझवार गोड़ जाति की उपशाखा है।[3] प्रथम दृष्टतया मझवार गोंड़ की तरह दिखाई पड़ता है। इनका विवरण प्रस्तुत करते

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 334, Part III.
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 413, Part III.
3. Mirzapur District Gaztaier Page 102.

हुए क्रुक ने कैप्टन फोरसीथ को उधृत किया है, जिनके अनुसार माझी पूर्णतः नंगा ,.. तथा कभी - कभी शरीर के मध्य भाग में एक पतली पट्टी लपेटे दिखायी पड़ता है जिससे इसे आदिवासी मानने में कोई कठिनाई नहीं है। इनका गठन सामान्य तथा छोटे कद का है। इनमें कोई - कोई पांच फुट दो इंच से बड़ा मिलता है। इनका रंग काला - भूरा है। अधिकांशतः काला लेकिन यह काला रंग नीग्रो प्रजाति के लोगों के निकट नहीं है। इनका चेहरा चौड़ा है माथा नीचा। नाक चपटी व दबी हुई ओठ भारी, लम्बे, लेकिन जबड़ा नीग्रो जाति की तरह नहीं है। चेहरे परबाल न के बराबर तथा सिर पर घने बाल कंधे चौड़े, नीचे की तरफ पांव पतला दिखने में हंसमुख। इनमें अधिकांश एक छोटी कुल्हाड़ी लेकर चलते हैं, जिसके बिना मझवार जंगल में जाते ही नहीं। 1 इस संदर्भ के साथ सोनभद्र के मझवारों का सिर थोड़ा बड़ा, नाक थोड़ी दबी, जो कोल व पनिका से उन्हें भिन्न करती है। माझी लोगों की नाक विशेष बड़ी, आकार में पतली तथा नुकीली दिखती है, जो इन्हें गोंड़ों से अलग करती है। जहाँ तक वस्त्र का संबंध है सोनभद्र में निवास करने वाले माझियों का वेश मध्य भारत के गोंड़ माझियों से अच्छा है। 2 वर्तमान समयमेंमाझीं पूरे शरीर में कपड़ा पहनता है। क्रुक के अनुसार मिर्जापुर के दक्षिणाचंल (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाला मझंवार पांच उपशाखाओं में विभाजित है, जिनमें अलग - अलग जातीय टोटेम की प्रथायें प्रचलित हैं। इनका मानना है कि कभी गोंड़ मझवार के किसी पूर्व पुरूष की पांच संताने थीं, जिसकी ये वंशज हैं। ये पांच उपशाखायें हैं-

1. पोइया 2. तेकाम या तेकमा 3. भराई 4.ओईका या वाइका 5. ओल्कु

मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर में इसका उल्लेख है। इनकी दूसरी उपशाखा तेकाम अथवा तेकमा मरपची नेताम, पोसाम, बरियाम, सेन्ट्रल, ओइमा, दादाइची, कोआइची, उलंगावती और कारगोती हैं। इन मझवारों की परम्परायें तथा टोटेम पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के जबलपुर के आसपास सोननदी और नर्मदा से जुड़े हैं। इनका मानना है कि ये इन नदियों के आसपास के गढ़ों से होकर पश्चिमी विन्ध्य श्रृंखला और पहाड़ियों में आये। इनके पांच भाइयों में भराइ महानतम था जिसने मण्डलगढ़ या मण्डला पर शासन किया और किले का निर्माण कराया। 3

तमाम अन्तः साक्ष्यों से प्रमाणित है कि यह जाति एक ही टोटेम से जुड़ी है। एक अर्न्तःकथा है- इनके पूर्वजों में पांच भाई नदी पार कर रहे थे, जिनमें दो नदी नहीं पार कर पाये। एक कछुये ने पीठ पर बैठा कर उन्हें नदी पार कराई। यही दो लोग पोइया व तेकाम उपशाखा के आदि पुरूष थे। इस कारण इस शाखा के मझवार कछुये की पूजा करते हैं तथा न तो कछुआ मारते हैं न घायल करते हैं। इनका मानना है कि दस पीढ़ी पहले ये सरगुजा से सोनभद्र के सिंगरौली या दुद्धी आये। अपनी आदि भूमि से, अपना संबंध जोड़ने के लिये ये मझवार सारगगढ़ तथा मरूआगढ़ में स्थापित प्रतिभाओं की पूजा करने जाते हैं। इनमे एक कथा है कि जब राम ने जनक के प्रसिद्ध धनुष को तोड़ा, उसका एक टुकड़ा नर्मदा के तट पर भी गिरा। यह स्थान मझवारों की तीर्थ भूमि है। मझवार जहाँ भी हैं, इनके जातीय देवता हैं बूढ़ा देव या मिंगो और उसकायह स्थान मझवारों की तीर्थ भूमि है। मझवार जहाँ भी हैं इनके जातीय देवता है बूढ़ा देव या मिंगो और

---

1. Island of Central India- Capitan Forsyth- Page 125.
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 414, Part III.
3. Central Province Gazetteer - Dalton - Page 191.

उसका सेवक बाघीया। इनका मानना है कि नर्मदा के तट पर इनके भी मंदिर हैं। साल वृक्ष में माझी बूढ़ादेव का निवास मानते हैं। इसलिये ये साल का वृक्ष नहीं काटते। टोटेम से जुड़ा होने के कारण इनके वैवाहिक संबंध आपस में नहीं होते। इनमें पोइया वंश के लोग अपने को श्रेष्ठतम मानते हैं। इसलिये दूसरों में ये विवाह नहीं करते। इनकी अपनी जातीय पंचायत है, जो विवाह या अन्त्यकर्म के समय जुटती है। विवाह, व्यभिचार, भोजन जैसे प्रकरणों में इस जाति का गौहा (या मुखिया) निर्णय करता है। इनमें बाल-विवाह प्रचलित नहीं है। किसी निर्धन व्यक्ति को, यदि वह विवाह का मूल्य नहीं दे पाता, तो घर जंवाई बनकर ससुराल में रहना पड़ता है। विवाह तय होने पर दोनों पक्ष के पिता हाथ में दोना भर मदिरा लेकर विवाह निर्णय की घोषणा करते हैं। इस जाति में भी दुल्हन खरीदी जाती है। सोनभद्र में लड़की के लिये धोती या साड़ी तथा तीन मन चावल देकर यह निर्णय किया जाता है। लड़के की ओर से एक कुण्डा (मिट्टी का बर्तन) पूड़ियों से भरा तथा पांच रूपया नकद भेजकर यह क्रिया पूरी होती है। एक प्रकरण यहाँ उल्लेखनीय है कि विवाह में दूल्हा उजले कपड़े पहनकर ही जाता है। रंगीन कपड़ो का प्रयोग निषिद्ध है। 1 इनमें दूल्हा उठाकर विवाह करने की प्रथा है। विवाह के बाद कोहबर की प्रथा इनमें प्रचलित है। मझवारों में हिन्दू विवाह पद्धति की सामान्य क्रियायें भी अपनायी जाती हैं। विवाह के देवता हैं दूल्हादेव, जिनकी उपासना माझी उत्सव की तरह करता है। इनमें विधवा-विवाह का भी प्रचलन है, जिसमें मृतक के छोटे भाई का विधवा से विवाह का पहला अधिकार प्राप्त है। ऐसा न होने पर कुरी के भीतर दूसरा व्यक्ति उससे विवाह कर सकता है। ऐसा व्यक्ति धागे से बनी पहुँची, पान का पत्ता दो मन चावल तथा धोती या साड़ी भेजता है। फिर विवाह का निर्णय होता है। इनमें तलाक की भी प्रथा होती है। आदिवासियों में मंझवार ऐसी जाति है जिनमें उत्तराधिकार के नियम बताये गये हैं। विधवा के साथ ही लड़की के उत्तराधिकार की चर्चा यहाँ है। यह जाति अन्यों की तुलना में थोड़ी अधिक विकसित है। जहाँ तक अन्य क्रियाओं का संबंध है, माझी भी मृतक को जलाने या दफनानें का कार्य करता है। चेचक में मरे व्यक्ति को जलाया जाता। अविवाहित बच्चों को भी नहीं जलाते। मरने वाले व्यक्ति के मुँह में चावल, दही और चाँदी का टुकड़ा मंझवार डाल देता है। मृत्यु की संध्या को घर से बाहर पत्तल में खाना निकाला जाता है, जिसके पीछे विश्वास है कि मृतात्मा इस दिन आती है। मंझवारों की क्रियायें पठारी जाति के लोग कराते हैं अथवा ब्राहम्ण। इनमें महादेव, बड़ादेव, निर्गोबाधिया, बूढ़ादेव की उपासना प्रचलित है। मांझी भूत प्रेत पर पूरा विश्वास करता है। मझवार का प्रिय नृत्य है करमा, जो करम वृक्ष की डाल को आगन मे डालकर संपन्न होता है। पुरुष तथा स्त्रियों का समूह पंक्तिबद्ध आगे जाकर फिर पीछे जाकर नृत्य करता है। इनका एक वाद्य है जिसे ये मांदर कहते है, जिसे बजाते हुये समवेत रूप में ये करमा गाते हैं। जब भी कोई महिला पीपल के वृक्ष के नीचे से गुजरती है तो अपना सिर झुका देती है। साल वृक्ष से मिलते किसी वृक्ष को माझी नहीं काटता। इनके कुछ विश्वास, इनकी प्रचलित प्रथायें हैं। कृषि इनका मुख्य व्यवसाय है। इनमें पारिवारिक एकता दिखाई पड़ती है। जहाँ तक मंझवार के आधुनिक जीवन का प्रश्न है, सोनभद्र में इन जातियों में अन्य की तरह काफी परिवर्तन हो गया है तथा स्थानीय औद्योगिक विकास ने इनके वेश और पहनावे को पूरा बदल दिया है। चूँकि आरक्षण के नियम इन पर लागू हैं, इसलिये ग्राम पंचायत, विधायक आदि पदो पर इस जाति वर्ग के लोग चुने जाने लगे हैं।

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 421, Part III.

जनजातियों के संबंध में प्रचलित विचार तथा आधुनिक संदर्भः–

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली जातियों को लेकर जो भी मान्यतायें आज प्रचलित हैं, उनमें कुछ बातें वड़ी स्पष्ट हैं : -

- जिन्हें हम आदिवासी कहते हैं, आज की भाषा में उन्हें अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति कहा जाता है।
- इन आदिवासियों जातियों में अधिकांश का संबंध सोनभद्र के दक्षिणांचल से है तथा इनकी बहुसंख्यक आवादी कैमूर घाटी के ऊपर, नीचे तथा सोनपार क्षेत्र में निवास करती है।
- इस क्षेत्र में निवास करने वाली प्रायः सभी जातियों के संबंध में पश्चिमी विद्वानों विशेषतः **रिस्ले** व **क्रुक** ने इनकी सामाजिक संरचना पर सम्पूर्ण प्रकाश डाला है। भारतीय विद्वानों में **प्रोफेसर मजमूदार** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। **डाल्टन** का नाम भी इस प्रकरण में लिया जा सकता है। यहाँ यह सूचना योग्य है कि 19 वीं शती में इन विद्वानों ने इन जातियों के संबंध में जो भी विवरण दिया है, एक शताब्दी बाद उनमें पर्याप्त परिवर्तन आ गया है और केवल भाषा ही नहीं, अपने जनजातीय आचार व व्यवहार भी ये जातियाँ भूलने लगी हैं।
- पश्चिमी विद्वानों के निष्कर्ष के अनुसार इन जातियों में अधिकांश की उत्पत्ति द्रविड़ियन कही गयी है। इससे यह पता लगता है कि सोनभद्र के दक्षिणाचंल में आर्य जातियों से संबंधित सवर्ण जातियों का निवास अपनी प्रारम्भिक स्थिति में नहीं के बराबर रहा है।

वर्तमान अवधि में सर्वेक्षणों के उपरान्त इन जातियों से संबंधित लोग अपनी उत्पत्ति के संबंध में न तो यह वता पाते हैं कि ये द्रविड़ हैं, न ही इनका जनजातीय मूल क्या है? अतः आज इन जातियों में पारस्परिक मिश्रण अथवा संकरता भले ही नहीं है, लेकिन शुद्ध रूप की पहचान उतनी सरल नहीं रह गई है। जहाँ तक इनमें प्रचलित प्रथाओं की बात है, कुछ जातियों की अपनी विशिष्ट पहचान ही है। जैसे-विलियम क्रुक के अनुसार मझवार जाति के लोग मृतक पुरूषों को जलाते थे तथा स्त्रियों को दफन किया करते थे। आज यह भिन्नता नहीं है। वर्तमान समय में मृतक पुरूष हो या स्त्री दोनों ही जलाये जाते हैं। आज के वर्तमान में इनके पर्व - त्यौहार, प्रथायें व विश्वास काफी कुछ स्थानीय आर्य-जाति की परम्पराओं के निकट आ रहे हैं और एक सांस्कृतिक संक्रमण देखा जा सकता है।

....— — — — — — ....

जनपद-सोनभद्र

प०
मी र जा पु र
वा रा ण सी
म ध्य प्र दे श
बि हा र
चोपन
ओबरा
दुद्धी
म्योरपुर
बभनी
तहसील सीमा
विकास खण्ड सीमा
जिला मुख्यालय
तहसील मुख्यालय
अवधी
भोजपुरी
सीमान्त रेखा

अध्याय 2
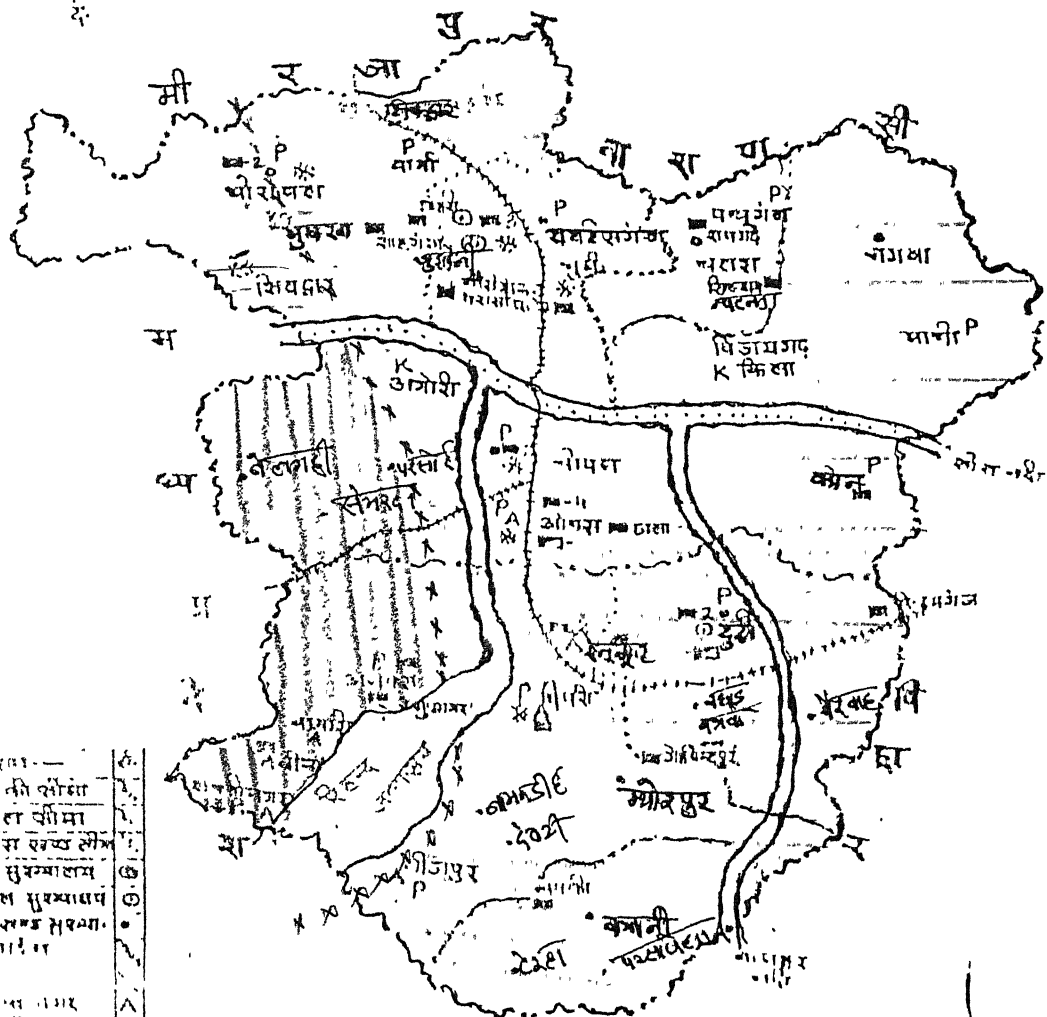
भाषिक भूगोल

सोनभद्र का भाषिक भूगोल

भाषिक भूगोल की प्रस्तावना पश्चिम की है। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में ही अमेरिका में भाषिक सर्वेक्षण का जो स्वरूप तैयार किया गया उसमें दो बिन्दु स्पष्ट होकर सामने आये। एक था डाइलेक्ट ज्यागर्फी का और दूसरा था डाइलेक्ट एटलस का। डाइलेक्ट एटलस के अन्तर्गत अमेरिका के सुदूर क्षेत्र में बसे अफ्रीकन मूल तथा रेड इडियन के आवासों को चिन्हित करते हुये नक्शें तैयार किये गये और उनसे भाषिक रूपों की विविधतायें तय की गई। बोली और भूगोल का कार्य तुलनात्मक रूप में जटिल होता है और भाषिक अध्ययन की वह प्रक्रिया अथवा स्थिति है जिसमें एक क्षेत्र विशेष की सारी सीमाओं को, साथ ही भाषिक भिन्नता और शब्दकोश की विविधताओं अथवा गठनात्मक संदर्भों को, अनेकता को, स्पष्ट आकार के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

जहाँ तक भारतीय अध्ययनों का प्रश्न है इस दिशा में किये जाने वालें कार्य उंगली पर गिने जा सकते हैं। इस प्रकरण में जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का प्रथम उल्लेख हो सकता है, जिन्होंने भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण करते हुये मिर्जापुर जनपद (वर्तमान सोनभद्र) की भाषाओं का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया है, और सोनभद्र **जनपद** के सोनपार की भी चर्चा की है। इस प्रकरण में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रस्तुत दो शोध-प्रबन्धों का उल्लेख प्रासंगिक है। एक है **" अवधी व भोजपुरी की संक्रान्ति भाषा का अध्ययन "** प्रस्तोता - डा० अमर बहादुर सिंह और दूसरा है **" मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन "** प्रस्तोता - डा० मूलशंकर शर्मा। इन दोनों शोध प्रबन्धों में मिर्जापुर के सम्पूर्ण परिक्षेत्र तथा उसके दक्षिणांचल (वर्तमान सोनभद्र) की विस्तृत चर्चा हुई है तथा आर्य-बोलियों की सीमा रेखा तय करते हुये उन पर प्रकाश डाला गया है।

जहाँ तक सोनभद्र का प्रश्न है, इसका भाषिक-संदर्भ बहुरंगी तथा जटिल भाषिक प्रयोगों से युक्त है। कारण बहुत स्पष्ट है, इस पूरे परिक्षेत्र के वक्ताओं को तीन वर्गो में बाँटा जा सकता है-

1. पहला वर्ग उन वक्ताओं का है, जो सोनभद्र के विकास के मध्य-काल में इस क्षेत्र में उत्तर की ओर से पहुँचे हैं और सोनभद्र में या तो भोजपुरी बोलते हैं, या अवधी। इसी श्रेणी में उन वक्ताओं को भी लिया जा सकता है, जो रीवां सम्भाग से प्रभावित होने के कारण बघेली बोलते हैं।
2. दूसरा वर्ग सोनभद्र में निवास करने-वाले उन बोलने वालों का है जो इस जनपद के या तो आदिवासी हैं या आदिवासी वर्ग से संबंधित हैं और विस्थापित होकर सोनभद्र में बसे हैं। इनकी जनसंख्या का वितरण अपने ढंग का है। कहीं पूरे गाँव में एक ही जाति के मूल से जुड़ने वाले लोग बसे हैं, कहीं एक गाँव में कई आदिवासियों का मूल बसा है। इस तरह इन आदिवासियों का निवास अवधी क्षेत्र में भी है, बघेली क्षेत्र में भी है

व भोजपुरी क्षेत्र में भी है। इन अलग - अलग क्षेत्रों में निवास करने वाला आदिवासी या तो भाषिक संक्रमण से प्रभावित है या अपनी भाषा का मूल रूप भूल चुका है। फिर भी ऐसी जातियों का निवास सोनभद्र में अब भी है, जिनकी मूल भाषा अब भी सुरक्षित है। इस तरह बोलने वाले इस वर्ग को वक्ताओं के स्वभाव के आधार पर तीन उपवर्ग में बॉटा जा सकता है-

(क) वे वक्ता, जो अपनी मूल भाषा पूरी तरह भूल चुकें हैं।

(ख) वे वक्ता, जो अपनी मूल भाषा के साथ उस भाषा का भी प्रयोग करतें हैं जो उनके क्षेत्र में बोली जाती है। जैसे : भोजपुरी क्षेत्र में निवास करने वाला अपनी मूल भाषा के कुछ शब्दों के साथ भोजपुरी बोलता है। उसी जाति का आदिवासी यदि बघेली क्षेत्र में है, तो अपनी मूल भाषा के साथ बघेली बोलता है।

(ग) तीसरा उपवर्ग आदिवासी समूह से संबंधित उन बोलने वालों का है, जो अपने बीच अपने मूल जातीय भाषा का प्रयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में यह समूह द्विभाषी है। अपने बीच में यह अपनी मूल जातीय-भाषा बोलता है तथा दूसरों से सम्पर्क भाषा के रूप में यह भोजपुरी, बघेली अथवा अवधी का व्यवहार करता है।

3. तीसरा वर्ग सोनभद्र का आधुनिक समाज है। औद्योगिक विकास के कारण देश के अलग - अलग प्रान्तों से बहुत बड़ी जनसंख्या सोन के दक्षिणांचल में आकर बसी है तथा संयुक्त भाषिक आकार का एक उदाहरण सोनभद्र का दक्षिणी परिक्षेत्र बन गया है।

सोनभद्र जनपद के आदिवासियों के बोली भूगोल की पहचान करने से पूर्व इस जनपद में बोली जाने वाली आर्य भाषाओं का परिचय देना आवश्यक है। क्योंकि आर्यभाषायें ही आज की तिथि में यहाँ की मुख्य भाषा हो गयी हैं और आदिवासी परिवारों के साथ इनकी भाषायें पूरे परिक्षेत्र में बिखर गई हैं। इन आर्य-भाषाओं की विवेचना के दो प्राचीनतम संदर्भ प्राप्त हैं - एक है, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का भाषा सर्वेक्षण जिसमें खण्ड 6 व 8 में अविभाजित मिर्जापुर तथा सोनभद्र के दक्षिणांचल सोनपार की आदिवासी भाषाओं पर टिप्पणी की गयी है। डा० ग्रियर्सन ने सोन के दक्षिणी क्षेत्र को सोनपार कहा है तथा इधर बोली जाने वाली भाषा को सोनपारी नाम दिया है। डा० ग्रियर्सन इसे कोलारियन नाम भी देते हैं। इसके साथ ही उन्होंने जनपद में बोली जाने वाली अवधी, भोजपुरी तथा बघेली का भी उल्लेख किया है। इन प्राचीन संदर्भों में मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर भी उल्लेखनीय है जिसमें 62 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या को भोजपुरी भाषी बताया गया है। 1 गजेटियर में 56 ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो मुण्डा या कोलारियन परिवार की भाषा बोलते हैं। इनके लिये जिप्सी शब्द का प्रयोग किया गया है। 2 ग्रियर्सन का अभिमत डिस्ट्रिक गजेटियर से थोड़ा अधिक स्पष्ट है। वे लिखते हैं ' सोनपारी क्षेत्र की भाषा बघेली है'। यह क्षेत्र बहुत विलम्ब से आर्यो के सम्पर्क में आया। यहाँ की आदिवासी जातियाँ अपनी बोली का प्रयोग अब छोड़ चुकी हैं। उनमें से कुछ आज भी कोरवारी बोलती हैं लेकिन यहाँ रहने वाली जाति कोल, जैसा कि अध्ययन से स्पष्ट हैं, बघेली भाषा का ही व्यवहार करती हैं। 3

---

1. Mirzapur District Gaztteer Page 116.
2. Mirzapur District Gaztteer Page 116.
3. भारत का भाषा सर्वेक्षण - ग्रियर्सन, भाग - 6, पेज - 116

जिन भारतीय विद्वानों अथवा प्रशासनिक एजेंसी के माध्यम से इस क्षेत्र के भाषा की विवेचना हुई है, उनके अध्ययन की भी बड़ी निर्णायक भूमिका है। भारतीय जनगणना प्रतिवेदन का नियमित एवं क्रमबद्ध प्रकाशन इधर नहीं हो रहा है। इसका आखिरी क्रमबद्ध रूप 1961 का है जिसमें दो महत्वपूर्ण आदिवासी बोलियों का संकेत किया गया है- वे बोलियाँ हैं धांगरी व गोंड़ी। 1 धागरी भाषा आदिवासियों में महत्वपूर्ण जाति धांगरों की अपनी भाषा है,जबकि गोंड़ी का सम्बन्ध गोंड़ जाति के लोगों से हैं।

इस प्रकरण में भारतीय विद्वानों में जिनका उल्लेख हो सकता है, वे हैं डा० बाबूराम सक्सेना,जिन्होंने अपने शोध प्रबन्ध ' Evolution of Avadhi ' में सोनभद्र में बोली जाने वाली बघेली का परिचय दिया है। दूसरे विद्वान हैं, डा० उदय नारायण तिवारी, जिन्होंने अपने शोध प्रबन्ध ' भोजपुरी का उद्‌भव व विकास ' (मूल अंग्रेजी) में भोजपुरी का उल्लेख करते हुये सोनभद्र के दक्षिणाचंल तक फैले उसके संदर्भों को उल्लिखित करना चाहा है। इस प्रकरण में तीसरा नाम डा० अमर बहादुर सिंह का है। डा० सिंह ने अवधी व भोजपुरी की संक्रान्ति रेखा पर प्रयुक्त होने वाले व्याकराणिक रूपों की विवेचना की है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इस दिशा में किया गया आखिरी कार्य डा० मूल शंकर शर्मा का है,जिन्होंने अपने शोध प्रबंध *' मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन '* में न केवल अवधी, बघेली और सोनभद्र की मुख्य भाषा भोजपुरी पर प्रकाश डाला है अपितु आदिवासियों में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं पर भी सक्षिप्त निष्कर्ष दिया है।

इतनी विवेचनाओं के बाद भी केवल आर्य बोलियों का ही बोली भूगोल निर्धारित हो सका है। आदिवासियों के जनसंख्या वितरण और भाषिक-प्रयोगों की पहचान आज भी गंभीर रूप से अपेक्षित हं। इस स्थिति में,आर्य भाषाओं के भूगोल की विवेचना के बिना इस परिक्षेत्र में प्रचलित आदिवासियों के भाषिक क्षेत्र की पहचान कराना एक जटिल कार्य है। विद्वानों द्वारा अपनी विवेचनाओं के माध्यम से यह स्पप्ट है कि आर्य परिवार की भाषाओं में अवधी तथा बघेली के साथ भोजपुरी सोनभद्र जनपद की प्रमुख भाषा है। इस संबध में डा० अमर बहादुर सिंह के विचार एक स्पप्ट दृप्टि का परिचय देते हैं- " मध्य प्रदेश के सरगुजा जिले में 83 अंश पूर्वी देशान्तर पर मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) की सीमा से 5 मील दक्षिण में ग्राम- सरना, पो०-पड़री से उत्तर-दक्षिण में रीवां और मिर्जापुर की सीमा के सहारे उत्तर में सोननदी की सीमा का अनुगमन करती यह रेखा 82 अंश पूर्वी देशान्तर तक पहुँचती है। सरना के पूर्व में बघेली बोली जाती है। " 2 इस संदर्भ से स्पप्ट है कि सोनभद्र जनपद की तीन प्रमुख भाषायें हैं-

1. पश्चिमी भोजपुरी 2. बघेली 3. अवधी

अपने शोध प्रबन्ध में डा० मूलशंकर शर्मा इस जनपद का भाषिक मानचित्र प्रस्तुत करते हुये और स्पष्ट करते हैं। वे लिखते हैं " जिले में भोजपुरी भाषा कनहर नदी के दोनों किनारों के सहारे सोन नदी के किनारे तक पहुँचती है। सोन नदी के उत्तरी भाग को छूती हुई यह पूरब की ओर बहती है जहाँ से पश्चिम मुड़कर ग्राम-मंदहा के

---

1. भारतीय जनगणना प्रतिवेदन- 1961, पेज - 8,
2. अवधी व भोजपुरी की सीमावर्ती बोलियों का अध्ययन- डा० अमर बहादुर सिंह पेज - 8, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

आसपास से उत्तर की ओर निकलने लगती है तथा राजगढ़ के पास होती हुई सीधे उत्तर हो जाती है। इसी के सहारे वह बनारस जिले तक आती है। इस रेखा के उत्तर - पश्चिम में अवधी, दक्षिण - पूर्व में भोजपुरी तथा दक्षिण में बघेली बोली जाती है। घोरावल तहसील के मंदहा के पास से यह रेखा चुनार तहसील के खटखरिया ग्राम तक आती है और वहाँ से पश्चिम मे चुनार तहसील की सीमा के सहारे उत्तर की ओर बढ़ती है। इस रेखा के पास वस्ती वड़ी सामान्य है। इसी सीमा के सहारे भोजपुरी की सीमा गंगा नदी को स्पर्श करती है और पश्चिम की ओर बढ़ती है तथा विकास क्षेत्र मझवा के पास से जिले की उत्तरी सीमा तक जा मिलती है। " 1

इस तरह सम्पूर्ण सोनभद्र जनपद में भोजपुरी के दो रूप प्राप्त हैं -

(क) भोजपुरी का वह रूप, जो अपने दक्षिणवर्ती क्षेत्र में पलामऊ और रोहतासगढ़ के भाषा रूप से प्रभावित है।

(ख) वह रूप, जो अपने क्रिया पदों तथा अन्य रूपों में इससे भिन्न है तथा इसके लिये डा० मूल शंकर शर्मा द्वारा केन्द्रीय भोजपुरी नाम दिया गया है।

सोनभद्र के उत्तरी परिक्षेत्र में प्रचलित रूप बनारस में प्रचलित भोजपुरी के निकट है, जिसमें सम्पूर्ण चुनार तहसील में जनपद मिर्जापुर का भाग है।

जहाँ तक बघेली का संबंध है, यह सोन से दक्षिणी क्षेत्र में सोनभद्र जनपद के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र में प्रचलित है जो सोनभद्र जनपद में घोरावल तहसील के पश्चिमी - उत्तरी अंचल तक फैला है।

आर्य भाषाओं के इस सीमांकन का वर्तमान संदर्भ में और सरल रूप प्रस्तुत किया जा सकता है। सम्पूर्ण जनपद तीन तहसीलों में विभाजित है।

1. राबर्ट्सगंज तहसील
2 दुद्धी तहसील
3. घोरावल तहसील

इनमें प्रथम दो तहसीलें अविभाजित मिर्जापुर का हिस्सा रहीं। इनमें घोरावल तहसील का सृजन सोनभद्र की स्वतंत्र घोषणा के बाद हुआ है। इसमें सोननदी से दक्षिण जनपद की आखिरी सीमा तक दुद्धी की सीमा फैली है। इस तहसील में, इसके दक्षिण - पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र में एक ही आर्य भाषा बोली जाती है वह है पश्चिमी भोजपुरी। तहसील के पश्चिम - दक्षिण भाग में एवं पश्चिम-उत्तर भाग में बघेली का व्यवहार होता है। यही स्थिति घोरावल तहसील की है। घोरावल तहसील में उसके सुदूर दक्षिण - पश्चिम में बघेली व अवधी का संक्रान्ति क्षेत्र है तथा तहसील के उत्तर पश्चिमी भाग में अवधी तथा पूर्वी भाग में भोजपुरी बोली जाती है।

---

1. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 11,
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

सोनभद्र की भाषिक विवेचना का सघन व गंभीर क्षेत्र है- सोन नदी के दक्षिण का क्षेत्र, जिसे ग्रियर्सन महोदय ने सोनपारी क्षेत्र कहा है। इस क्षेत्र में दो भारतीय आर्य भाषायें बोली जाती हैं। सोनपार के पूर्वी क्षेत्र की भाषा है भोजपुरी तथा पश्चिमी क्षेत्र की भाषा है बघेली। डा० ग्रियर्सन इसी क्षेत्र में कोलारियन समूह की भाषा का उल्लेख करते हुये केवल बघेली का उल्लेख करते हैं। लेकिन अपने शोध-प्रबन्धों में डा० अमर बहादुर सिंह तथा डा० मूलशंकर शर्मा भोजपुरी की चर्चा इन क्षेत्रों में करते हैं। वर्तमान सर्वेक्षण से यह अभिमत पुष्ट है कि बघेली के साथ भोजपुरी भी सोनपार की भाषा है। ग्रियर्सन साहब के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि बघेली सोन के उत्तर नहीं बोली जाती है। अपने शोध-प्रबंध के पृष्ठ संख्या 13 पर चार सूचकों द्वारा प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते हुये डा० मूल शंकर शर्मा ने यह सिद्ध करना चाहा है, कि बघेली सोन के उत्तर भी बोली जाती है, तथा सोनपारी क्षेत्र, भाषिक विविधता का एक अद्भुद उदाहरण है। वे लिखते हैं, इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि ये जातियां (आदिवासी) जो सोनपारी क्षेत्र में राबर्ट्सगंज तहसील में निवास करती हैं, वे पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से भोजपुरी से प्रभावित हैं। इन गाँवों में रहने वाले ब्राह्मण भोजपुरी भाषा के उसी रूप का प्रयोग करते हैं, जो सोन के उत्तर की भाषा है, किन्तु यहाँ की आदिवासी जातियाँ अपने सहज रूप से जिस भाषा को बोलती हैं, उसमें भोजपुरी का पुट नहीं रहता। 1 भोजपुरी के साथ बघेली की चर्चा करते उन्होंने लिखा है - ' सामान्य रूप से प्रचलित धारणा है कि बघेली सोनपार की ही भाषा है। बघेली भाषा सोन के दक्षिण में ही नहीं, उत्तर में भी बोली जाती है, जब कि उसके चारों ओर भोजपुरी का प्रचलन है। विकास खण्ड राबर्ट्सगंज में खैरवार, गोंड़, पटारी, तुरिया तथा विकास खण्ड नगवां में यहीं जातियाँ जिसमें धसिया, बियार और अगरिया भी सम्मिलित हैं, बघेली बोलती हैं। इन तथ्यों से यह निष्कर्ष साफ निकलता है कि बघेली मुख्य रूप से सोनपार की बोली है विशेषतया आदिवासी जातियों की। ये आदिवासी जातियाँ सोन के उत्तर जहाँ भी जाकर बसी हैं, वहीं अपने साथ बघेली ले गई हैं। 2 सोनपार क्षेत्र जंगल और पहाड़ों से भरा हुआ है। इसमें समतल मैदान खोजना सरल नहीं है। रिहन्द बाँध के बंधने के बाद आदिवासी जातियों का बहुत बड़ा समूह विस्थापित होकर इसी क्षेत्र में जंगलों में आकर बस गया है। इस कारण रेलमार्ग से यात्रा करते समय घोर जंगल के बीच दो-चार घरों की बस्ती साफ दिखाई पड़ती है। इस परिक्षेत्र में जिन जातियों का निवास है, उनमें सबसे महत्वपूर्ण है कोरवा जाति, जो दुद्धी क्षेत्र के सुदूर दक्षिण मे कभी रहती थी। अब तककी सूचनाओं के अनुसार, यह मध्य-प्रदेश राज्य की सीमा के सरगुजा क्षेत्र में निवास करने लगी है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियें में पनिका, गोंड़, पटारी, अगरिया, मझंवार, बसवार, खरवार, कोल प्रमुख हैं। ये जातियां जहाँ बसी हैं, आज के भाषिक सर्वेक्षणों से यह ज्ञात होता है, कि इनके मूल रूप न तो अपने सांस्कृतिक संदर्भ में विद्यमान हैं, न ही भाषिक संदर्भ में। इनके बीच या तो इनका टोटेम से संबंधित आचार - विचार बचा है या तो कुछ शब्द। ये आदिवासी सोनपार के पूर्वी - दक्षिणी क्षेत्र में भोजपुरी से प्रभावित हो गये हैं तथा दक्षिण - पश्चिमी क्षेत्र में बघेली से। फिर भी इनके जो भी संदर्भ उपलब्ध हैं, उन्हें अगले अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

---

1. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शकर शर्मा, पेज - 14, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)
2. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 15, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

सोनभद्र की भाषिक स्थिति और आदिवासियों का वर्तमानः—

सोनभद्र में निवास करनेवाले आदिवासियों में धांगर अकेली ऐसी जाति है, जो अपने भाषिक-संदर्भ के कारण आज भी चुनौती बनी हुई है। धांगर जाति राबर्ट्सगंज एवं दुद्धी तहसील के कुछ गॉवों में निवास करती है। प्राप्त विवेचनाओं के आधार पर यह सिद्ध है कि यह छोटा नागपुर के कुरूक्षेत्र अथवा उरॉव जाति से ही संबंधित है जो सोनभद्र में धांगर नाम से जानी जाती है। दुद्धी तहसील में इस जाति से संबंधित लोगों को उरांव तथा राबर्ट्सगंज में इन्हें धागर कहा गया है। पूरे जनपद में यह अकेली ऐसी जाति है जिसके संदर्भ चाहे वे संस्कृति से संबंधित हों, या लोक परम्परा के, या भाषा रूपों के, आज भी सुरक्षित मिल रहे हैं। इस जाति की दो मौलिक भाषिक प्रवृतियाँ दिखाई पड़ती हैं -

1 आपस में यह जाति धांगरी भाषा का प्रयोग करती है।

2 दुद्धी क्षेत्र में निवास करने वाला उरांव या तो स्थानीय लोगों के बीच में या तो भोजपुरी बोलता है या बघेली, तथा राबर्ट्सगंज क्षेत्र में यह भोजपुरी के माध्यम से अन्य लोगों से सम्पर्क स्थापित करता है। धांगर के संबंध में जार्ज ग्रियर्सन ने स्वतंत्र उल्लेख नहीं किया है, इससे यह लगता है यदि उन्हें धांगर के संबंध में कोई सूचना प्राप्त हुई थी तो इस जाति की भाषा को उन्होंने कोलारियन नाम देकर अपना मंतव्य प्रकट कर लिया है। धांगरों के संबंध में विवरण देते हुए देते हुये अपने शोध-प्रबन्ध में डा० मूलशंकर शर्मा ने इन्हें द्रविड़ जाति की एक शाखा से जोड़ा है तथा अपने तथ्य के समर्थन में उन्होंने विलियम कुक की उधृत किया है। जो शब्दावली उन्होंने शोध प्रबन्ध में दी है, उसमें पॉच वाक्य उधृत हैं-

आस असमा मोक्खादस -	वह रोटी खाता है।
आस असमा माल्ा मोक्खना -	उसने रोटी नहीं खाई।
निंगहा एड़पा निकइया रइ-	तुम्हारा घर कहाँ है ?
वाबुस बरादस -	लड़का आता है।
मार्या बरालगी -	लड़की आती है।

और यह निष्कर्ष दिया है कि लड़की के लिये प्रचलित /मार्यों/ शब्द में भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित /मइयों/ शब्द का संकेत अवश्य है। 1 इस प्रकरण में उन्होंने इस जाति में प्राप्त जिन संख्या वाची विशेषणों का प्रयोग किया है, वे कुल एक से छ तक हैं। इससे यह सिद्ध है कि यह जाति इससे अधिक संख्यावाचियों का प्रयोग नहीं करती। डा० उदय नारायण तिवारी धागरी या कुरूख भाषा को द्रविड़ परिवार की बोली मानते हैं। 2 धांगरी का

---

1. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 16, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

2. Indian lingustive- Volume - 26, 1955 - Dr. Uday Narayan Tiwari.

स्वभाव योगात्मक है। प्रकृति - प्रत्यय को स्वतत्र रूप में पहचानना सरल नहीं है। भाषा में 1/2 व 1/4 के लिये /ओनकोचा/ व /ओनटूका/ प्रयोग प्राप्त हैं। इसमें दोनों ही शब्दों में ओन - पद समान है तथा - उपसर्ग की तरह प्रयुक्त हुआ है। - टूका, टुकड़े की प्रतीति करा रहा है। भोजपुरी क्षेत्र में इसे /टुक्का/ कहा जाता है। आधे के लिये /कोचा/ शब्द प्रयुक्त है। प्रत्येक संख्यावाची में ट इस बात का प्रतीक है कि इस पर द्रविड़ प्रभाव अधिक है। एक लिये /ओन्टा/, दो के लिये, /एन्टाड़/ तीन के लिये /मूंटाड/ शब्दों में -टा- तीनों में है। यानी ओ-, ए-, और मून- ही संख्या की भिन्नता प्रकट करते हैं। संख्यावाची विशेषण पांच के लिये प्रयुक्त शब्द पंचे स्पप्टतः आर्य भाषा का शब्द है। इन प्रयोगों से यह पता चलता है कि जो जाति 6 से अधिक संख्या का प्रयोग करना जानती ही नहीं थी, वह कितनी प्राचीन हो सकती है। इस जाति में परिमाणवाची, क्रमवाची अथवा आवृत्तिवाची विशेपण हैं ही नहीं। साथ ही यह जाति जिस शब्दावली का प्रयोग करती है, उसका प्रचलन जनपद की किसी अन्य जनजाति में नहीं है। इसकी शब्दावली आर्य-बोलियों (स्थानीय भोजपुरी तथा बघेली) से एकदम भिन्न है। सर्वनामों में कुछ ऐसे भी प्रयोग हैं, जिनसे इनके सांस्कृतिक-समाजशास्त्र का परिचय मिलता है, पुरूषवाची सर्वनाम में दो प्रयोग एक साथ दिखाई पड़ते हैं।

आस - वह
आद - वह

दोनों ही प्रयोग एक ही अर्थ में हैं, लेकिन /आस/ का प्रयोग केवल पुरूषों के लिये होता है, जबकि /आद/ का प्रयोग स्त्री तथा तथा पशुओं के लिए किया जाता है। इसी तरह पुरूषवाची सर्वनामों के अन्य रूपों को देखा जाय तो यह स्पप्ट है कि इनका प्रयोग न तो किसी अन्य स्थानीय जाति में है, न ही आर्य भाषा - भाषी लोगों में।

यथा -

पुरूषवाची सर्वनाम

	एकवचन	बहुबचन
उत्तम पुरूष	एन (मैं)	एम (हम)
मध्यम पुरूष	नीन (तुम/तू)	नीम (तुम सब)
अन्य पुरूष	आस (वह)	आर (वे)

इस तरह स्पष्ट है कि /म/ धांगरों के बीच में बहुबचन बोधक प्रव्यय है और /न/ एकबचन बोधक। ए-, नी- और आस - प्रातिपदिक की तरह प्रयुक्त हैं। बहुबचन बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला प्रत्यय - म प्रातिपदिक से जुड़कर, [illegible] योगात्मक स्थिति में प्रयुक्त हुआ है। विभक्ति की इस योगात्मकता की प्रकृति धाँगरा भाषा के अतिरिक्त जनपद की न तो किसी आदिवासी भाषा में है, न ही अन्य आर्य भाषा में। भोजपुरी में - न प्रत्यय का व्यवहार बहुबचन बोधक के रूप में होता है।

जैसे -

हमन।

तोहन।

ओन्हन।

लेकिन यह स्थिति अपवाद ही है। इस तरह सोनभद्र की भाषायी स्थिति में धांगरी अकेली ऐसी भाषा है, जो भाषिक संकरण से मुक्त है तथा अपनी स्वतंत्र पहचान रखती है।

धागरी का वर्तमान अब मिश्रण की ओर बढ़ने लगा है और उसमें स्थानीय भोजपुरी के शब्द भी घुसने लगे हैं। भाषा में उधार ग्रहण करने की प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। इस प्रवृत्ति के कारण धांगरी में कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो, स्थानीय भोजपुरी में भी प्रचलित हैं। जैसे स्त्री के अर्थ में /कनियाँ/, बूढ़े व्यक्ति के लिये /बुढ़रा/, वस्त्रों को /नरखा/, और /माड़ी/ ऐसे ही प्रयोग हैं। /नरखा/ मूलतः भोजपुरी का शब्द नहीं है, लेकिन यह कुर्ताकेआकार का कुछ होना चाहिये। भोजपुरी क्षेत्र में नरखा, कुर्ता शब्द का प्रयोग एक साथ होता हैं। यह या तो समानार्थी है या अधोवस्त्र। सामान्य प्रयोगों से लगता है कि नरखा कमर के ऊपर पहनने वाला कोई वस्त्र है। निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि इन शब्दों का प्रयोग धांगर किस भाषा से उधार लेकर करतें हैं। जहाँ तक /कनियाँ/ का प्रश्न है, यह उच्चारण में कन्या के निकट है, लेकिन अर्थ समानता नहीं है।

धांगर जाति के अतिरिक्त इस जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियों में गोड़ और बसवार प्रमुख हैं। गोड़ों की जातीय भाषा गोंड़ी है। गोड़ों की बहुत बड़ी संख्या दुद्धी तहसील में है तथा एक छोटा सा समूह राबर्ट्सगंज तहसील में भी मिलता है। इस जाति के लोग अपनी भाषा भूल चुके हैं लेकिन कुछ ऐसे शब्द यहाँ प्रचलित हैं, जो इनकी स्वतंत्र पहचान कराते हैं। खैरवारों में लड़का व लड़की के लिये /डौका/ व /डौकी/ शब्द प्रचलित है। गोड़ /डौका लकिरा/ व /डौकी लरिका/ का प्रयोग करतें हैं। /ढेकना/ खटमल के अर्थ में, /बिड़रा/ गिलहरी के अर्थ में, /बेंगचा/ नेवले के अर्थ में। बड़ी बहन के पति को /माटो/, अरवी के लिये /पेकची/ और रूपये को /ढीवा/ बोलते हैं। ये शब्द स्थानीय किसी अन्य आदिवासियों में प्रयुक्त नहीं हैं।

गोड़ किसी भी मृतक को चारपाई से नीचे नहीं उतारते और उसे उसी चारपाई पर श्मशान ले जाते हैं जिस पर उसकी मृत्यु होती है। अर्थी की तरह प्रयुक्त होने वाली इस चारपाई को गोंड़ /रंथी/ कहतें है। रथा शब्द का प्रयोग किसी अन्य स्थानीय भाषा में नहीं है। 1

गोड़ी में एक ऐसा शब्द प्रयुक्त है जिसका प्रचलन न तो कोई आदिवासी करता है न ही आर्यभाषी। शब्द है /खोंपा/ जिसका अर्थ है स्त्री केशपाश या जूड़ा। इस शब्द का प्रयोग सबसे ऊंचे स्थान के रूप में भोजपुरी क्षेत्र में है, लेकिन केशपाश के अर्थ में नहीं। (पद्मावत के मानसरोदक

---

1. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 20, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

खण्ड में जायसी इस शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्हें यह शब्द कहाँ से मिला, यह विचारणीय है।) 1 गोंड़ मोर के लिये /मजूर/ अथवा /झलया मजूर/ शब्द का प्रयोग करते हैं। पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्र में इस पक्षी को मोर कहा जाता है। गोड़ उसे मोर नहीं कहता /मजूर/ कहता है। स्पष्टतः यह संस्कृत मयूर का परिवर्तित रूप है। /य/ के स्थान पर /ज/ के प्रयोग की प्रवृत्ति मध्यकालीन भाषाओं की रही है। इस तरह के प्रयोग गोंड़ जाति के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक अतीत का परिचय देते हैं।

गोंड़ जाति के उल्लिखित शब्दों को छोड़ दिया जाय तो इनकी व्याकरणिक संरचना भोजपुरी अथवा बघेली से भिन्न नहीं है। गोड़ों की तरह पठारी में भी कुछ शब्द मिलते हैं। जैसे कंघी के लिये पठारी - /चिरनी/ बोलता है, खरवार - /बांगुर,/ बसवार - /घाप/। धांगर को छोड़कर अन्य आदिवासी जातियां /ककही/ या /ककई/ का प्रयोग करती हैं। ककही शब्द का प्रयोग भोजपुरी या बघेली में भी है, लेकिन शेष का प्रयोग इन आर्य-भाषाओं में नहीं है। खरवार खटमल को /ढेकुना/ बोलता है। यह उसका अपना शब्द है। भोजपुरी में इसे /खटकिरवा/ तथा बघेली बोलने वाले आदिवासी इसे /खरगोड़ा/ कहते हैं। इनमें खरवारों में प्रचलित /ढेकुना/ ही अप्रचलित है। खैरवार भोजपुरी के कुछ अल्पप्राण प्रयोगों को महाप्राण के रूप में उच्चरित करता है।

यथा -

नाक - नाख

इस तरह आदिवासियों का बोलीगत संदर्भ तीन स्थितियों का परिचय देता है -

1. पहली स्थिति धांगरों की है, जिनकी अपनी मूल-भाषा पूर्णतः सुरक्षित है तथा दूसरी स्थानीय आर्यभाषा चाहे भोजपुरी हो चाहे बघेली, इनके लिये संपर्क भाषा है।

2. दूसरी स्थिति खैरवार और गोंड़ जैसी जातियों की है, जिनकी मौलिक शब्दावली के कुछ रूप ही उनमें बचे हैं तथा जो स्थानीय भोजपुरी या बघेली में इन्हें समाहित करके बोलते हैं।
जैसे-

" एक अदमी के चारि लइका रहईं। जब वह अदमी मरइ लागिस त वह आपन चारो बेटवन के बलाइ के कहेसि कि जवन खेत के तुहरे जोतत बाह, खेत में एक बहुत बड़ा रूपया क हंडा गाड़ल हवे। "

(सूचक - रामधनी, जाति - पठारी)

---

1. सरवरि तीर पद्‌मिनि आई। खोंपा छोरि केस मुकुलाई।
पदमावत् - मानसरोदक खण्ड - जायसी, दोहा - ५ , चौपाई - 1

(एक आदमी को चार लड़के थे। जब वह आदमी मरने लगा तब उसने अपने चारों बेटों को बुलाकर कहा कि जिस खेत को तुम जोतते - बोते हो, उसमें रूपये का बड़ा खजाना है।)

यदि गोंड़ व खैरवार की भापा को देखा जाय तो भोजपुरी और बघेली का एक मिश्रित भापायी रूप इनकें प्रयोगों में विद्यमान दिखता है -

" एक ठे नमहा रहे, अ एक ठे बाघ रहे। त दूनउ जोरी मीत, तँवघवा कहेसि के भाई महू जाब बने।"

(सूचक - हरिया, जाति - गोड़, ग्राम पनारी - चोपन से 10 मील दक्षिण पश्चिम।)

यदि इस वाक्य पर विचार किया जाय तो साफ है कि इसमें एक संख्यावाची विशेषण भोजपुरी की ही तरह प्रयुक्त है। चोपन के आसपास का भोजपुरी भाषी संख्यावाची विशेषण के बाद /ठे/ लगाता है। जबकि सोन के दक्षिण तथा दुद्धी तहसील का भोजपुरीभाषी /गो/ का प्रयोग करता है।

एक गो।

दू गो।

अगर यह खैरवार दुद्धी का होता तो निश्चित रूप से गो का प्रयोग करता। भोजपुरी भाषी खरगोश को लमहा कहता है। गोंड़ /ल/ की जगह /न/ का उच्चारण करता है। यह उसकी जातीय प्रवृत्ति है। तीनों वाक्यों में /रहे/ /जोरी/ और /कहिस/ तीनों ही क्रियायें बघेली की हैं। इससे स्पष्ट है कि गोड़ की अपनी जातीय स्वतंत्र भाषा नहीं है।

इसी तरह खैरवार को भी लिया जा सकता है। चोपन के पास ही एक गाँव है सिन्दूरिया। उसमें रहने वाला खैरवार बोलता है -

" एक चिरई रहे, त खोतों छावल रहे। "

(एक चिड़िया थी, उसका घोंसला छाया हुआ था)

दोनों ही वाक्यों में /रहे/ बघेली की क्रिया है, लेकिन छावल शब्द भोजपुरी में भी इसी रूप में प्राप्त है। इससे यह प्रतीत होता है कि सोनभद्र का आदिवासी स्थानीय आर्य-भाषाओं के मिश्रित रूप को बोलने लगा है। इस स्थिति को और स्पष्ट करने के लिये कुछ संबंधवाची शब्द अथवा अन्य शब्दों के उदाहरण अलग - अलग जातियों में उच्चरित रूपों की भिन्नता के साथ प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिनसे तथ्यों के समर्थन में सरलता हो सकती है।

खड़ी बोली रूप	धागर जाति में उच्चारित रूप	धरकार जाति में उच्चारित रूप	अगरिया जाति में उच्चारित रूप
माँ	आयो एंगियों	दाई	दाई
बाप	बहोय	दादा	दउआ
भाई	एंदादस ऐगड़िस (छोटा भाई)	भइया	भाई

खड़ी बोली रूप	धागर जाति में उच्चारित रूप	धरकार जाति में उच्चारित रूप	अगरिया जाति में उच्चारित रूप
बहन	एंगड़ी (छोटी बहन) एंगदीदी (बड़ी बहन)	बहिन	बहिन
लड़का	कुक्कोस	बिहटेना	लड़िका
लड़की	कुके	बिहटिनी	लड़की
स्त्री	एंखई	डौकी / डउकी	डौकी / डउकी
पुरूष	मेटर	डौका / डउका	डौका / डउका
भांजा	भांजा	भांचा	भांचा
दुल्हन	खईद	कनया	दुलहिन
मुँह	मोच्चा	मुँह	मूँह
कल	चेरो	कालि	कालू
आज	इन्ना	आजू	आजू
चावल	तीखिल	चाउर	चाउर
भात	मंडी	भात	भात
रोटी	असमा	रोटी	रोटी
पानी	अम्म	पानी	पानी
हाथ	खेख	हॉथ	हाथ
पैर	खेद	गोड़	गोड़

खड़ी बोली	गोंड़ जाति में उच्चारित रूप	खरवार जाति में उच्चारित रूप	भुइया जाति में रूप उच्चारित रूप
माँ	दाई	माई	मइया
वाप	दादा	बाबू	दादा
भाई	भाई	भइया	भाई
बहन	बहिन	बहिन	बहिन
लड़का	बाबू	लेरका	डौका / ड३का
लड़की	मइया	लेरकी	डौकी / ड३की
स्त्री	डौकी	डौकी / ड३की	मेंहरारू
पुरूप	डौका	डौका / ड३का	अदमी
भाजा	भांचा	माचा	भैने
दुल्हन	कनया	कनया	दुलही
मुँह	मूँह	मूँह	मूँह
कल	काल्हू	कालू	कालि
आज	आजू	आजू	आजु
चावल	चाउर	चाउर	चाउर
भात	भात	भात	भात
रोटी	रोटी	रोटी	रोटी
पानी	पानी	पानी	पानी
हाथ	हाँथ	हाँथ	हाँथ
पैर	गोड़	गोड़	गोड़

इन तुलनात्मक संदर्भो की समानान्तर विवेचना से यह बात सुस्पष्ट है कि जनपद में अकेली जाति जो केवल अपनी भाषा बोलती है, वह धांगर है। बाकी आदिवासियों में आज की तिथि में स्थानीय भोजपुरी या बघेली का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। यहाँ विशेष उल्लेखनीय यह है कि भोजपुरी और बघेली बोलती हुई भी ये जातियाँ अन्य सवर्ण वक्ताओं की तरह इस भाषा का प्रयोग नहीं करतीं। इनके उच्चारण व प्रयोग अपनी - अपनी जातियों में अलग - अलग हैं। जैसे - लड़का को धांगर कुक्कोस/ बोलता है जो उसकी जाति का अपना शब्द है। इसे धरकार। /बिहटेना/ कहता है जो भोजपुरी क्षेत्र में /बेहना/ रूप में भी बोला जाता है। व्यंजन ध्वनि का जो विपर्यय धरकार जाति में है,वह उसका अपना जातीय प्रयोग है। अगरिया इसे /लड़िका/ बोलता है। गोंड़ /बाबू/ खरवार लेरका/ तथा भुइयां या चेरों /डौका/ कहते हैं। इन शब्दों में /कुक्कोस/ और /डौका/ जातीय शब्द हैं,लेकिन शेष भोजपुरी के ही प्रयोग हैं जो उच्चारणगत भिन्नता के साथ प्रयुक्त हैं।-इससे स्पष्ट है कि आदिवासियों के बीच में भोजपुरी भी उसी रूप में नहीं बोली जाती जिस तरह अन्य स्थानीय सवर्णो में प्रयुक्त है।

भोजपुरी के संदर्भ और आदिवासियों में प्रयुक्त भोजपुरी के रूपः—

अध्याय के प्रारम्भ में जनपद में बोली जाने वाली भोजपुरी की सीमा रेखा की चर्चा की गयी है। भोजपुरी - भाषी क्षेत्र पूरे सोनभद्र जनपद में अपनी उत्तरी सीमा से दक्षिणी छोर तक फैला हुआ है। प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थितियों के कारण इस परिक्षेत्र में दो स्पष्ट विभाजक बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। एक है, सोन नदी और दूसरा है कैमूर पर्वत श्रृंखला का विस्तार और फैलाव जो घने जंगलों से अटा पड़ा है। जनपद का भोजपुरी - भाषी क्षेत्र दो सुदूर क्षेत्रों में बिखरा है। एक है सोननदी के उत्तर का परिक्षेत्र, दूसरा है, सोन के दक्षिण का वह भाग जो कोटा, कोन की तरफ से बढ़ता हुआ दुद्धी तहसील की ओर पहुँचता है। दुद्धी तहसील का बभनी, म्योरपुर ब्लाक और दुद्धी, सघन आबादी का क्षेत्र कहा जा सकता है। बाकी अन्य हिस्सा घने जंगलों से सटा है। भौगोलिक परिस्थिति तथा जनसम्पर्क के अभावों के कारण सोनभद्र में बोली जाने वाली भोजपुरी एक जैसी नहीं है।

डा० उदय नारायण तिवारी अविभाजित मिर्जापुर की भाषा (जिसमें सोनभद्र भी सम्मिलित है) पश्चिमी भोजपुरी मानते हैं। भोजपुरी के जो उदाहरण उन्होंने दिये हैं, वे आज की तिथि में प्राप्त नहीं हैं, लेकिन इसे पश्चिमी भोजपुरी कहने में कोई कठिनाई नहीं है।

डा० मूलशंकर शर्मा, डा० उदयनारायण तिवारी को उधृत करते हुये लिखते हैं- " भोजपुरी भाषा का अध्ययन करते हुये डा० उदयनारायण तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के संबंध में विस्तार से परिचय दिया है। आपने अवधी एवं भोजपुरी की सीमा भी निर्धारित की है, जो डा० ग्रियर्सन के मतानुकूल है। आदरणीय तिवारी जी ने भोजपुरी के अध्ययन में बलिया की भोजपुरी को आदर्श माना है और उसी का आधार मानकर शेष रूपों पर प्रकाश डाला है। यह अध्ययन काफी पुराना है और आज बोली रूपों में परिवर्तन हो गया है। डा० तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के संबंध में जो भी उदाहरण दिये हैं, वे आज कहीं भी प्राप्त नहीं होते हैं। " 1

डा० शर्मा ने सोनभद्र जनपद में बोली जाने वाली भोजपुरी को दो नाम दिया है। वे दुद्धी तहसील में बोली जाने वाली भोजपुरी को दक्षिणी, राबर्ट्सगंज में बोली जाने वाली भोजपुरी को केन्द्रीय भोजपुरी तथा चुनार तहसील (जनपद मिर्जापुर) में बोली जाने वाली भोजपुरी को उत्तरी भोजपुरी कहते हैं। मिर्जापुर जनपद मे सोनभद्र जनपद के अलग होने के बाद इसे केवल दो नामों से संदर्भित करना उचित है। एक सोन नदी के उत्तर बोली जाने वाली भोजपुरी (यानि उत्तरी भोजपुरी) और दो-

---

1. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का समकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, भूमिका भाग, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

सोन नदी के दक्षिण बोली जाने वाली भोजपुरी (दक्षिणी भोजपुरी)। भोजपुरी के दोनों रूपों के संदर्भ संज्ञा रूपों, सर्वनाम रूपों तथा क्रिया रूपों के साथ अन्य व्याकरणिक कोटियों में सोन के उत्तर एवं दक्षिण अलग - अलग हैं।

1. सोन के उत्तर लड़का - लड़की के लिये /लइका/ - /लइकी/ पद प्रयुक्त होता है। इस पद के दीर्घ रूप भी उत्तरी क्षेत्र में प्राप्त हैं। जैसे - लइकवा, लइकिया, जबकि दक्षिणी में इसके लिये बाबू और मइयाँ शब्द का प्रयोग होता है तथा इस संज्ञा-पद का दीर्घ रूप दक्षिणी भोजपुरी में प्रचलित नहीं है। यही कारण है, कि सोनभद्र की दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी लड़का व लड़की के लिये बाबू और मइयाँ पद का प्रयोग करता है, जबकि सोन के उत्तर का आदिवासी लइका, लरिका पद का प्रयोग संपरिवर्तक रूप में करता दिखाई पड़ता है।

संज्ञा रूपों के साथ यदि अन्य पदों को लिया जाय तो यह भिन्नता उभयपक्षी दिखाई पड़ती है। उत्तरी भाग में माँ को माई, मतवा, मतारी शब्दों से व्यक्त करते हैं, जबकि दक्षिणी में इसके लिये /मइया। शब्द का प्रयोग होता है। उत्तरी खण्ड में /मइया/ माँ के अर्थ में नहीं है।

2. उत्तरी क्षेत्र में बोली जाने वाली भोजपुरी में खड़ी-बोली में प्रचलित अकारन्त संज्ञायें इकरान्त रूप में बोली जाती है।

जैसे - ऑखि, (ऑख)
नाकि, (नाक)

दक्षिणी क्षेत्र में संज्ञा के ये इकारान्त रूप अकारान्त रूप में ही प्रयुक्त हैं। इसी कारण दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी भी इन संज्ञाओं का प्रयोग अकारान्त ही करता है।

3. इस क्रम में संख्यावाची विशेषणों का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

सोन के उत्तरी क्षेत्र में -

एक (1)
दूइ (2)
तीनि (3)
चारि (4)

बोलते हैं, यानि खड़ी बोली के ये विशेषण सोनभद्र के उत्तरी खण्ड में इकारान्त रूप में उच्चरित हैं, जबकि दक्षिणी में ये अकारान्त रूप में ही बोले जाते हैं।

एक (1)
दू (2)
तीन (3)
चार (4)

इन संख्याओं का व्यवहार करते हुये उत्तरी क्षेत्र में।ठे।पद का व्यवहार विशेषण के बाद होता है।

जैसे - एक टे।
दूइ ठे।
तीनि टे।
चारि ठे।

उत्तरी क्षेत्र में बोलने वाला बिना /ठ/ लगाये संख्यावाचियों का प्रयोग नहीं करता। यह प्रयोग तभी होता है,जब कभी कोई जीवधारी विशेष्य आगे प्रयुक्त होता है। लेकिन यह प्रवृत्ति सामान्य नहीं है। इस संदर्भ में जव हम सोन के दक्षिण में बोली जाने वाली भोजपुरी पर विचार करते हैं, तो -ठे पूर्णतया लुप्त दिखाई पड़ता है तथा संख्यावाची के बाद - गो - का प्रयोग प्रचलित मिलता है।

जैसे - एक गो।
दू गो।
तीन गो।
चार गो।

सम्पूर्ण जनपद में प्रयुक्त होने वाले भाषा-संदर्भों में सार्वनामिक पद-रचना केवल भौगोलिक अन्तराल के कारण ही भिन्न नहीं है, आदिवासी जातियों में इनके प्रयोग की अलग स्थिति एक स्वतंत्र संदर्भ का निर्माण भी करती है। सार्वनामिक पद-रचना में लिंग, वचन तथा कारक का अपना महत्व है। पूरे परिक्षेत्र में पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग के दो ही रूप प्राप्त हैं। वचन भी दो हैं, तथा कारकीय संरचना विकारी एवं अविकारी रूपों के साथ अपना रूप बनाती है। पूरे परिक्षेत्र में पुरूषवाची, निश्चयवाची, संबधवाची, अनिश्चयवाची एवं निजवाची रूप प्राप्त हैं। पुरूषवाची सर्वनामों में उत्तम पुरूष में /म/ का प्रयोग कहीं नहीं है लेकिन /म/, /मा/, /मय/, /महूँ/ जैसे रूप प्रयोग में हैं। जिन्हें मैं का ही संक्षिप्त अथवा विकृत रूप कहा जा सकता है। इन रूपों का प्रयोग गोड़, खैरवार, बसवार तथा अन्य आदिवासी करते हैं। सोन के उत्तर एवं दक्षिण दोनों ही भाग में /हम/ उत्तम पुरूष, बहुवचन के रूप में प्राप्त है। लेकिन इस रूप का बहुबचन बनाने में सोन के उत्तर की भोजपुरी तथा दक्षिण की भोजपुरी में अन्तर है। उत्तरी भोजपुरी में /म/ का द्वित्व करके तथा बहुवचन बोधक प्रत्यय /न/ को जोड़कर पदगठन की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

जैसे - हमन, हम्मन

इसके समानान्तर सोन के दक्षिण में केवल एक ही रूप प्राप्त है, वह है - /हमहने/। इस क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी /हमरन/ शब्द का भी प्रयोग बहुवचन अर्थ में करता है।

मध्यम-पुरूष में आदरवाची और अनादरवाची अथवा सामान्य, दो रूप प्राप्त हैं। अनादरवाची सर्वनाम है - /तोंय/, जो /तैं/, /तूं/, /तंय/, /तू/, /तहूँ/ रूप में भी बोला जाता है। इस सर्वनाम का बहुवचन बनाने में उत्तरी क्षेत्र में दो विकल्प प्राप्त है - /तोहन/ अथवा /तोन्हन/, जबकि दक्षिणी क्षेत्र में /तू लोगन/, /तुहरे/ /तुहरने/ /तू पचे/ रूप भी प्राप्त हैं। गोंड़ इसके स्थान पर /तइये/ रूप का भी प्रयोग करते हैं।

आदिवासियों में प्रयुक्त क्रिदन्तों तथा क्रिया-रूपों के अध्ययन से भी यह बात स्पष्ट है, कि परिक्षेत्र की दृष्टि से चाहे सोन का उत्तरी अंचल हो, या सोन के दक्षिण फैला हुआ लम्बा भूभाग, इस परिक्षेत्र में प्रचलित भोजपुरी रूपों में आदिवासी समान भाषाधर्मी नहीं हैं। उसमें दो प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हैं - पहली यह है, कि आदिवासी भोजपुरी के कुछ रूपों को ज्यों का त्यों प्रयुक्त करता है, तथा दूसरी यह है, कि कभी वह मूल-रूप बदल के बोलता है और कभी प्रत्यय में परिवर्तन कर देता है। भोजपुरी की कालरचना, उसका कारकीय-प्रयोग, उसमें प्रयुक्त क्रियार्थक-संज्ञायें, साथ ही सहायक क्रियायें व समापिका क्रियायें कभी प्रचलित रूप में और कभी सामान्य अन्तर के साथ प्रयुक्त हैं। विशेष परिवर्तन क्षेत्र का स्पष्ट दिखता है। सोन के उत्तरी अंचल में खड़ी बोली के /हैं/ रूप के लिये /ह/, /हवइ/, /बा/, /बाड़/ रूप प्रचलित हैं, जबकि सोन के दक्षिण में /बा/ के स्थान पर /बड़इ/ तथा /ह/ के स्थान पर /होखस/ रूप मिलाता है। अपने मूल उच्चारण के साथ थोड़ा ध्वन्यात्मक परिवर्तन करके

आदिवासी इन क्रियाओं को अपने ढग से बोलता है। यह क्रिया पुरूष एवं वचन की दृष्टि से भिन्न होकर पूरे क्षेत्र में बोली जाती है।

		एकवचन	बहुबचन
उत्तरी क्षेत्र			
	उत्तम पुरूप	हई	हई
(मैं हूँ)			
दक्षिणी क्षेत्र		हियें	हियें

आदिवासियों में /अही/ /ही/ तथा /हों/ रूप उल्लिखित प्रचलित भोजपुरी क्रियाओं के समानान्तर प्राप्त हैं। मध्यम पुरूप, एकवचन, आदरार्थ एवं निरादरार्थ, दोनों में काल-बोधक प्रत्यय जोड़कर रूप बनायें जाते हैं।

		एकवचन	बहुबचन
उत्तरी क्षेत्र			
	मध्यम पुरूप		
	अनादरार्थ	हए	हवें
	आदरार्थ	हवें	हवें
दक्षिणी क्षेत्र			
	मध्यम पुरूप		
	अनादरार्थ	होरवें	होंरवन
	आदरार्थ	होंरवें	होंरवन

आदिवासियों का समूह उत्तरी परिक्षेत्र में उत्तरी रूप का तथा दक्षिणी क्षेत्र में उल्लिखित दक्षिणी रूप का प्रयोग बिना किसी परिवर्तन से करता है। यह परिवर्तन लिंग भेद के साथ भूत निश्चयार्थ में और भी स्पष्ट है।

	अन्य पुरूप	एकवचन	बहवचन
उत्तरी क्षेत्र	पुल्लिंग –	रहल्	रहनें
	स्त्रीलिंग	रहली/रहलि	रहली
दक्षिणी क्षेत्र	पुल्लिंग –	रहलन्	रहलन्
	स्त्रीलिंग	रहलिन	रहलिन

उल्लिखित दोनो रूपों के समानान्तर दक्षिणी क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी - /रहे/, /रहें/ का पुल्लिंग प्रयोग तथा /रहिल/, /रही/ का स्त्रीवाची रूप सुविधानुसार व्यवहार में ले आता है। इससे यह पता लगता है कि ये क्रियायें आदिवासियों में ज्यों की त्यों भी प्रयुक्त हैं और जातीय परिवर्तनों के साथ भी प्रचलित मिलती हैं,लेकिन पूरे जनपद में धांगर जाति के अतिरिक्त आदिवासियों में कोई दूसरी ऐसी जाति नहीं है,जो भोजपुरी या बघेली से भिन्न,व्याकरणिक कोटियों को प्रयोग मे ले आती है।

सोनभद्र का भाषिक-भूगोल स्पष्टतः तीन खण्डों में विभाजित देखा जा सकता है - एक है, बघेली प्रभावित क्षेत्र,जो जनपद के दक्षिणी - पश्चिमी हिस्से से संबंधित है। रिहन्द जलाशय के बनने के बाद इस क्षेत्र का बहुत बड़ा भाग स्थायी रूप से जलमग्न हो गया है। इस तरह इस क्षेत्र मे निवास करने वाले आदिवासी जब विस्थापित हुये हैं,तो अपनी जातीय-शब्दावली स्थानीय बघेली भाषा को लेकर दूर तक फैले हैं। लेकिन तब भी एक सीधी विभाजक रेखा देखी जा सकती है। यह रेखा है,रेण नदी की,जो रिहन्द जलाशय से निकल कर सोन में आकर गिरती है। इस तरह सोन से दक्षिण व रेण नदी से पश्चिम का भूभाग,जो कैमूर की छोटी पहाड़ियों और जंगल से सटा है, आदिवासियो का निवास बना है। बघेली इसी पूरे क्षेत्र को आपस में जोड़े हुये है। इस पूरे क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी,जो जंगल में बीच - बीच में घर बनाकर बसा हुआ है, बघेली भाषा का सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहार करता है।

सोन नदी के दक्षिण तथा रेण नदी के पूर्व का भूभाग भी काफी लम्बा चौड़ा है। यह क्षेत्र भी दुर्गम है। एक ही मुख्य मार्ग है,जो इस क्षेत्र में आपसी सम्पर्क का माध्यम है। वाराणसी - शक्तिनगर राजमार्ग से एक दूसरा उपमार्ग दुद्धी तहसील मुख्यालय तक ले जाता है। दुद्धी तहसील की स्थिति को केन्द्रीय कहा जा सकता है। दुद्धी ब्लाक, बभनी ब्लाक तथा म्योरपुर ब्लाक घने जंगलों से भरा है तथा जंगल का यह विस्तार सोन नदी तक चला आता है। ऊँची - नीची पहाड़ियाँ, छोटे नाले, तथा अपनी प्रखर धारा के लिये प्रसिद्ध कनहर नदी,जो उत्तराभिमुख होकर सोन में आकर गिरती है, इस क्षेत्र को आज की तिथि में भी दुगर्म बनाये हुए है। कुछ अपवादों को छोड़,शेष गाँवों में आदिवासी बसे हुये हैं। गोड़, पठारी, धांगर (जिन्हें इस क्षेत्र में उरांव कहा जाता है) घसिया, अगरिया, कोल और अपनी अल्प जनसंख्या में ही सही कोरवा,इसी क्षेत्र के निवासी हैं। यह सारा क्षेत्र सोनभद्र में बोली जाने वाली दक्षिणी भोजपुरी का प्रयोग करता है, क्योंकि सोनभद्र से सटे बिहार प्रान्त के दो जिले - गढ़वा/पालामऊ तथा रोहतासगढ़ भोजपुरी-भाषी हैं। इस क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासियों की भाषा भी यही भोजपुरी है।लेकिन आदिवासियों के अपने जातीय प्रयोग भी हैं,जो इसी भोजपुरी में मिश्रित होकर सामने आते हैं। इस परिक्षेत्र में भी धागर अथवा उरांव अकेली ऐसी जाति जो दक्षिणी भोजपुरी का व्यवहार केवल अन्य जातियों के साथ सम्पर्क-भाषा के रूप में करती है,अन्यथा आपस में वह अपनी भाषा बोलती है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि सोनभद्र जनपद में सोननदी

के उत्तर के भाग में पश्चिम - उत्तर की ओर अवधी तथा पूर्व - उत्तर की ओर भोजपुरी बोली जाती है। इस क्षेत्र का आदिवासी भी इन्हीं भाषाओं को संम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करता है, लेकिन इस क्षेत्र में धांगर, वसवार, खैरवार जाति के लोग काफी संख्या में हैं। इनमें कोलों की संख्या सवसे अधिक है। आज की तिथि में वसवार, खैरवार तथा कोल भी स्थानीय भाषा बोलते हैं, लेकिन इनका उच्चारण, स्वराघात, एवं अभिव्यक्ति का तौर - तरीका थोड़ा अलग है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली धांगर जाति आपस में अपनी भाषा बोल रही है, लेकिन वह वहुत दूर तक भोजपुरी से प्रभावित हो गयी है। गंभीर गवेषणा, विवेचना, एवं विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट है कि धांगर जाति अकेली ऐसी जाति है जिसकी अपनी भाषा है और वह भी धीरे - धीरे लुप्त हो रही है। इस स्थिति में इस जाति की अपनी सास्कृतिक परम्परा, इसमे प्रचलित लोकशिल्प तथा लोकसाहित्य का संग्रह जितना आवश्यक है, उससे अधिक अपरिहार्य है इस जाति में प्रचलित भाषा-रूपों और व्याकरणिक कोटियों की सुरक्षा। क्योंकि वह समय दूर नहीं, जव औद्योगिक विकास तथा समानान्तर चलने वाली संस्कृति से प्रभावित होकर यह जाति, जनपद के अन्य आदिवासी जातियों की तरह अपनी पहचान भी खो रही है।

अध्याय 3

ध्वनिग्रामिक संरचना

3.1 स्वर ध्वनिग्राम

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली आदिवासी जाति उच्चारण की दृष्टि से विकसित समाज का प्रतिनिधि नहीं है। इस कारण संस्कृत भाषा में प्रयुक्त /ऋ/ अथवा /लृ/ ध्वनियाँ इसमें नहीं पायी जाती। धांगर जाति कुल आठ स्वरों का प्रयोग करती है। धांगर के अतिरिक्त शेष जातियों में /आ/, और /औ/ ध्वनियाँ प्राप्त हैं, जब कि धांगर में इनका प्रचलन नहीं है। ये स्वर ध्वनियाँ स्वल्पान्तर युग्म बनाकर अर्थभेदक तो हैं, लेकिन इस तरह के बहुत उदाहरण प्राप्त नहीं हैं। ध्वनि रूप में /इ/, /ई/, /ए/, /ऐ/, /अ/, /ऊ/, /उ/, /ओ/, /औ/, तथा /आ/ स्वर विशेष रूप में प्रचलित हैं। मानक स्वर उच्चारण प्रक्रिया को ध्यान में रखा जाय तो इनका उच्चारण निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।
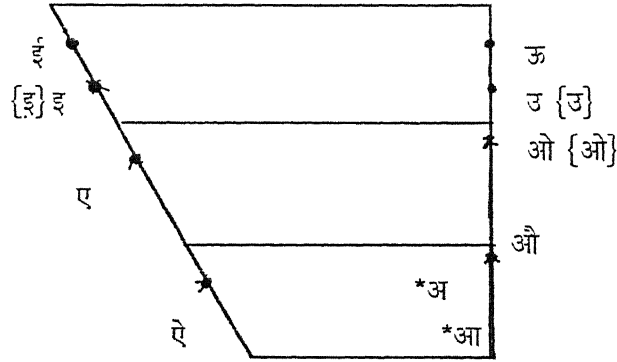
मूल स्वर - /अ/, /इ/ /ई/, /उ/, /ऊ/, /ओ/, /औ/

3.1.1 स्वर ध्वनिग्रामों का वितरण तथा उनके सहस्वन–

(१) /ई/ - यह अवृत्ताकार, संवृत, दीर्घ अग्रस्वर है। प्रयोग की दृष्टि से यह शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आता है।

धांगरी भाषा	खड़ी बोली रूप
ईरींग	इनका
नीनिंग	आप ही
तन्नी	थोड़ा

(२) /इ/ यह अवृत्ताकार, संवृत, ह्रस्व अग्रस्वर है। इसका प्रयोग धांगरों की बोली में शब्द के आदि, मध्य व अन्त तीनों में होता है।

धांगरी भाषा	खड़ी बोली रूप
इवग्गे	इतना ही
इदितरा	इस ओर
पेंरि	सबेग

/इ /यह /इ/ का सहस्वन है तथा घोरावल तहसील में निवास करने वाले आदिवासियों में यह फुसफुसाहट की ध्वनि की तरह उच्चरित होता है। धांगर जाति के लोग इस स्वर का प्रयोग नहीं करते हैं। अवधी भाषा क्षेत्र में निवास करने वाला खरवार अथवा बसवार आदिवासी, जब भी इस ध्वनि को बोलता है, तो आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होकर यह स्वर लुप्त हो जाता है।

यथा -

भागि, भागि, - गवा, भाग्गवा

(३) /ए/- यह अर्ध-संवृत, अवृत्ताकार, अग्रस्वर है। यह धांगरों में, शब्द के आदि, मध्य व अन्त तीनों स्थितियों में होता है।

धांगरी भाषा	खड़ी बोली रूप
एनम	ऐसे ही
कुकेर	लड़की
उबग्गे	उतना

(४) /ऐ/- यह अवृत्ताकार, अर्धसवृत अग्रस्वर है। धागर जाति का आदिवासी, प्राप्त उदाहरणों से ऐसा पता लगता है, कि इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करता है। अन्य जातियों में यह ध्वनि प्राप्त है। लेकिन सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण /ऐ/, /अइ/ रूप में /औ/, /अउ/ रूप में बोला जाता है।

जैसे - /पइसा/,

/नउआ/

/कउआ/

(५)/अ/- यह अर्ध विवृत पश्चस्वर है। भोजपुरी तथा बघेली में इस ध्वनि का उच्चारण शब्दान्त में नहीं है। इस कारण सोन के दक्षिण निवास करने-वाला आदिवासी, चाहे वह भोजपुरी बोलता है, या बघेली, शब्द के अन्त में, इस ध्वनि को नहीं बोलता। जनपद में निवास करने-वाली धांगर जाति भी इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के प्रारम्भ तथा मध्य में ही करती है। भोजपुरी के कुछ क्रिया रूप अकारान्त हैं।

जैसे - चल
उठ
वइठ

यह खड़ी बोली में व्यंजनान्त रूप में अनादरार्थ प्रयोगों में व्यवहत है-

जैसे - चल्, उठ्, बैठ्

आदरार्थ क्रियायें यहाँ भी स्वरान्त हैं, जैसे- चलो, उठो, बैठो। भोजपुरी के उल्लिखित रूपों का उच्चारण जब भी आदिवासी करता है, तो शब्दान्त में /ऊ/ अपने संवृत्त उच्चारण के साथ देखा जा सकता है। अन्यथा, इसका प्रयोग शब्द के प्रारम्भ में अथवा मध्य में प्रचलित है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
अड्डो	बैल
अल्ला	कुत्ता
अन्य आदिवासी जातियों में	
अनाज	अनाज
अकाल	अकाल
अपजस	अपयश

मध्य में -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
पारवल	पत्थर
राजस	राजा
अन्य आदिवासी जातियों में	
घर	आवास
बर	दूल्हा

(६) /ऊ/- यह संवृत, पश्च वृत्ताकार स्वर है तथा आदिवासियों एवं अन्य आर्यभाषी लोगों में शब्दों के प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है। धांगरों में सामान्तया इसका प्रचलन अन्त में नहीं है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
ऊयोन	रखना
पूना	नया

अन्य आदिवासी जातियों में

ऊख	ईख
बबूर	बबूल
कल्लू	कल्लू
घुरहू	घुरहू

(७) /उ/ - यह दीर्घ /ऊ/ की अपेक्षा मानस्वर के उच्चारण क्रम में कम उच्चस्थानीय तथा संवृत पश्चस्वर है। इस स्वर का प्रयोग जनपद की सभी आदिवासी जातियों में शब्द के आदि, मध्य व अन्त में होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
उबग्गे	उतना
अन्तुम	उसमे
अम्बु / **अम्म**	पानी

अन्य आदिवासी जातियों में

उप्पर	ऊपर
उधार	उधार
कउआ	कौआ
सासु	सास
मासु	मांस

(८) /आ/– यह विवृत, पश्चस्वर है, तथा इसका प्रयोग शब्द की प्रत्येक स्थिति में होता है।

जैसे –

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
आस	वह
नानस	नाना
एड़पा	घर

अन्य आदिवासी जातियों में	
आगी	आग
कपार	सिर
पइसा	पैसा

(६) /ओ/– यह संवृत पश्चस्वर है। यह जनपद के हर आदिवासियों में प्रचलित है तथा इसका प्रयोग शब्द के आदि, मध्य, अन्त तीनों ही स्थिति में होता है।

जैसे –

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
ओन्टा	एक
मनोय	मानो
नासगो	भाभी

अन्य आदिवासी जातियों में	
ओसार	बरामदा
घोड़ा	घोड़ा
लकठो	एक मिठाई

(१०) /औ/- यह अर्धविवृत पश्चस्वर है। जनपद के समस्त आदिवासी,जो बघेली अथवा भोजपुरी बोलते हैं, इस स्वर का व्यवहार शब्द के प्रारम्भ, मध्य व अन्त में करते हैं।लेकिन धांगर जाति इस स्वर का प्रयोग नहीं करती। सोनपार के दक्षिण में बोली जाने वाली भोजपुरी में /औरत/ या /चौपाया/ रूप प्रचलित हैं, लेकिन सोन के उत्तर यह आदिवासियों तथा अन्य लोगों में /अउ/ रूप में उच्चरित होता है। इस कारण यह यह कहा जा सकता है कि इस स्वर का प्रयोग जनपद की बहुसंख्यक आबादी नहीं करती।

स्वल्पान्तरयुग्म–

ध्वनिरूप तथा ध्वनिग्रामिक रूप का निरूपण करने के लिए स्वल्पान्तरयुग्म भाषा के मूल कारक बनते है। धांगर के अतिरिक्त अन्य आदिवासियों में इन युग्मों की पहचान बड़ी सरल है।

जैसे -

/इ/	मिल
/ई/	मील
/अ/	कम, नम
/आ/	काम, नाम
/ई/	घोड़ी
/अ/	बंल
/आ/	बाल
/ए/	बोल
/ऐ/	बैल
/ए/	बेल, मेल
/ऐ/	बैल
/ई/	मील

स्वरों के ये युग्म, इनकी ध्वनिग्राम्कि प्रक्रिया स्पष्ट कर देते हैं। जनपद में बोली जाने वाली धांगरी योगात्मक भाषा है, जिसके रूपतत्व तथा सम्बन्धतत्व एक में मिले प्राप्त होते हैं, लेकिन इस भाषा की प्राप्त शब्दावली में इस तरह के युग्म नहीं प्राप्त हो रहे है। इस कारण उल्लिखित स्वर ध्वनिग्राम रूपमें प्रचलित हैं, यह कहने में कठिनाई है। अतः यही कहा जा सकता है कि धांगर जाति में /अ/, /आ/, /इ/, /ई/, /उ/, /ऊ/, /ए/, /ओ/ तथा /आ/ स्वर ध्वनियॉं प्रयुक्त होती हैं।

स्वरों का वितरण और उनका प्रयोग इन आदिवासी जातियों में अलग - अलग दिखाई पड़ता है। धांगर जाति में नासिक्य व्यंजनों की कमी नहीं है, लेकिन इस जाति के लोग स्वरों को अनुनासिक नहीं करते। अनुनासिकता यहाँ अर्थभेदक भी नहीं है। जनपद में निवास करने वाली खैरवार, वसवार और गोड़ जातियाँ सामान्य स्वर को भी अनुनासिक करके बोलती हैं, लेकिन यह इनका जातिगत स्वभाव है।

स्वरों के उच्चारण, पूरे जनपद में एक जैसे नहीं हैं। सोनभद्र के बघेली अथवा अवधी भाषी क्षेत्र में जो स्वर अपने सहज मानक रूप में उच्चरित होते हैं, उनमें कुछ स्वरों का उच्चारण भोजपुरी भाषी क्षेत्र में विलम्बित रूप में बोले जाते है। /ऐ/ एवं /औ/ स्वर उन्हीं लोगों द्वारा प्रयुक्त है जो शिक्षित हैं। भोजपुरी क्षेत्र में पढ़े - लिखे लोग भी इन स्वरों का मूल रूप में उच्चारण नहीं करते और यह पहले ही कहा जा चुका है कि जनपद की एकमात्र जाति धांगर जो अपनी भाषा मूल रूप में आज भी बोल रहीं है, इन स्वरों का प्रयोग नहीं करती।

3.2 व्यंजन ध्वनिग्राम

स्वर के अतिरिक्त भाषा में बोली जाने वाली ध्वनियाँ अधिकांशतः व्यंजन होती हैं। इन ध्वनियों में प्राणत्व के आधार पर अथवा ध्वनियों में विद्यमान घोपत्व के आधार पर अर्थ व्यतिरेक भी होता है। यदि प्राणत्व को आधार बनाकर व्यंजनों का वर्गीकरण किया जाय तो स्पष्टतः दो वर्ग बनते है-

(क)- महाप्राण व्यंजन- फ्, भ्, थ्, ध्, ठ्, ढ्, छ्, झ्, ख्, घ्

यह गंभीर विपय है कि धांगरों में महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण की प्रवृत्ति नहीं है। संकलन में जो भी सामग्री प्राप्त हुई है, उसमें कंठ्य महाप्राण /ख/ और /घ/ तो प्राप्त हैं, लेकिन अन्य महाप्राणों का प्रयोग ये आदिवासी नहीं करते। जनपद के शेष आदिवासियों में भोजपुरी अथवा स्थानीय बघेली/अवधी के प्रभाव के कारण हर वर्ग की महाप्राण ध्वनियाँ प्राप्त है।

(ख)- अल्पप्राण ध्वनियाँ - प्, ब्, ट्, द्, ड्, च्, ज्, क्, ग्

इनके अतिरिक्त म्ह, न्ह और ल्ह महाप्राण ध्वनियाँ भी आदिवासियों में प्रचलित है। जैसे- कान्ह (कंधा) लेकिन धांगर जाति इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करता।

जिस तरह व्यंजन ध्वनियाँ प्राणत्व के आधार पर अर्थभेद का कारण बनती है, उसी तरह घोपत्व के आधार पर भी व्यंजन अर्थभेदक हो जाते हैं। सोनभद्र जनपद में निम्नलिखित घोष ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं-

अघोप- क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्

ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ठ्, द्, ध्, ब्, म्

इन व्यंजनों के अतिरिक्त ऐसी भी ध्वनियाँ प्राप्त हैं,जो घोषत्व अथवा प्राणत्व के आधार पर शब्दों का अर्थ नहीं बदलती हैं,लेकिन अपने स्वंतत्र प्रयोग में ये अर्थभेदक हैं।

क- नासिक्य ध्वनियाँ - /म्/, /म्ह/, /न्/, /न्ह/, /ङ्/
ख- पार्श्विक ध्वनियाँ- /ल्/, /ल्ह/
ग- लुंठित ध्वनियाँ- /र्/
घ- अर्ध स्वर- /य्/, /व्/

व्यंजनों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न को देखते हुए इन्हें निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

	द्वयोष्ठय	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	वर्त्स्यतालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब् फ्, भ्		त्, द् थ्, ध्	ट्, ड् ठ्, ढ्		क्, ग् ख्, घ्	
स्पर्शसंघर्षी					च्, ज् छ्, झ्		
नासिक्य	म्	ण्	न्			ङ्	
पार्श्विक			ल्				
लुठित			र्	ड़्, ढ़्			ह्
संघर्षी			स्				
अर्धस्वर	व्,				य		

3.2.1 व्यंजन ध्वनिग्रामों का वितरण

(१) /प्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्प प्राण, अघोष व्यंजन है तथा सारे आदिवासियों में शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
पच्चा	पुराना
एड़पा	घर
अन्य आदिवासी जातियों में	
पनही	जूता
कपार	सिर
वाप	पिता

(२) /फ्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, अघोष व्यंजन है। जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के आदि, मध्य स्वरपूर्व स्थिति तथा शब्द के अन्त में प्रयुक्त होता है, लेकिन धांगर इस व्यंजन का प्रयोग नहीं करते है।

जैसे -

फर	फल
साफ	स्वच्छ
फूफा	फूफा
गोफ	ऊपर

(३) /ब्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष व्यंजन है तथा जनपद की सारी आदिवासियों में शब्द के प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
बाली	द्वार
खेबदा	कान
अम्बु/अम्भ	पानी
अन्य आदिवासी जातियों में	
बबूर	बबूल
कब	कब

(४) /भ्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, घोष व्यंजन है तथा जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है लेकिन धांगर जाति के लोग इसका व्यवहार नहीं करते।

जैसे -

भोर	प्रातः
गाभिन	गर्भवती
लाभ	लाभ

(५) /त्/- यह दन्त्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन है तथा जनपद के आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

धांगरी जाति में	खड़ी बोली रूप
तीखिल	चावल
मेन्ताचसा	सुनाई

अन्य आदिवासी जातियों में

ताला	ताला
लता	लता

(६) /थ्/- यह अघोष, महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन है। जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है लेकिन, प्राप्त विवरणों के अनुसार धांगर इसका व्यवहार नहीं करता है।

जैसे -

थरिया	थाली
माथ	माथ
हाथ्	हाथ

(७) /द्/- यह घोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श व्यंजन है। वितरण की दृष्टि से इसका प्रयोग जनपद के हर आदिवासियों में शब्द के आदि मध्य व अन्त में होता है।

जैसे

धांगरी जाति में	खड़ी बोली रूप
दहोय	भइया
खद्दर	लड़का
रानिद	रानी

अन्य आदिवासी जातियों में

दाल	दाल
बादर	बादल

(८) /घ्/- यह घोष, महाप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श व्यंजन है। जनपद के सभी आदिवासियों में यह प्रत्येक स्थिति में होता है लेकिन प्राप्त सूचनाओ के अनुसार धांगरों में इसका प्रयोग शब्द के मध्य में होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
लघरना	जलना

अन्य आदिवासी जातियों में

घास	घास
कन्धा	कन्धा
बाघ	बाघ

(६) /ट्/- यह अल्पप्राण, अघोष, मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है। जनपद के सभी आदिवासियों में यह वितरण की दृष्टि से शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

धांगर जाति में

टठगा	आम
बटुरा	मटर
पिट्टी	चटाई

अन्य आदिवासी जातियों में

टमाटर	टमाटर
मटर	मटर
जटा	केश

(१०) /ठ्/- यह मूर्धन्य स्पर्श, महाप्राण, अघोष व्यंजन है। यह धांगर जाति के अतिरिक्त आज आदिवासी जातियों में शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

टोकर
कठोर
काठ
कठरा
लाठ्

(११) /ड्/- यह मूर्धन्य स्पर्श, अल्पप्राण, अघोष व्यंजन है। यह शब्द के आदि, मध्य एवं अन्त स्थिति मे प्रयुक्त होता है।

जैसे

धांगरी जाति में	खड़ी बोली रूप
ओन्डस	खाया
मंडी	भात

अन्य आदिवासी जातियों में

डेराहुक	डरा हुआ
हुड्ड	लम्बी चीज

/ड़/- यह /ड/ का सहस्वन है तथा यह शब्द के मध्य व अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

एड़पा	थर
गुड़	गुड़

अन्य आदिवासी जातियों में

पेड़	पेड़
सड़क	सड़क

(१२) /ढ्/- यह मूधंन्य स्पर्श, महाप्राण, घोष व्यंजन है। धांगर जाति के आदिवासी इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करते। शेष जातियों में यह शब्द के आदि के मध्य में प्रयुक्त होता है।

जैसे-

ढकना	ढक्कन
बुड्ढा	बूढ़ा

/ढ़/ यह /ट/ का ही सहस्वन है तथा उत्क्षिप्त स्पर्श व्यंजन है। इस ध्वनि का प्रयोग शब्द का प्रयोग शब्द के अन्त में प्रयुक्त दिखाई पड़ता है।

जैसे-

वाढ़ि	वाढ़
गाढ़	गाढ़ा

(१३) /च्/- यह तत्स्र्य, तालव्य, अल्पप्राण, अघोष व्यंजन है। धांगर जाति इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि व मध्य में करती है। अन्य जातियों में यह आदि, मध्य के साथ अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगरी जाति में	खड़ी बोली रूप
चेरो	कल
चींचना	पोछना
मोच्चा	मुँह
अन्य आदिवासी जातियों में	
चाकि	चाक
अचार	अचार
पच्च	सीधे

(१४) /छ्/- यह अघोप, वर्त्स्य, महाप्राण, तालव्य व्यंजन है। जनपद की धांगर से भिन्न जातियों में इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि व मध्य व अन्त स्थिति में होता है।

जैसे -

छिंउकी	चीटी
काछनी	कछनी
कांछ	कांछ

(१५) /ज्/- यह तालव्य, अल्पप्राण, घोष स्पर्श व्यंजन है। धांगर जाति के लोग आदि व मध्य में इसको प्रयुक्त करते हैं। अन्य जातियों में यह अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	
जरूर	अवश्य
इजो	मछली

अन्य आदिवासी जातियों में

जाल	जाल
सजाय	सजा
गाज	गाज

(१६) /झ्/- यह घोष, महाप्राण, तालव्य व्यंजन है। इस ध्वनि का प्रयोग केवल अन्य आदिवासी जातियाँ ही करती है। यद्यपि धांगर महाप्राणध्वनियों का प्रयोग नहीं करते है लेकिन /झ/ ध्वनि अन्य जातियों के सम्पर्क के कारण इनमें प्रचलित है। यह जाति /ज/ ध्वनि को भी /झ/ की तरह बोलती है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
झांझ	वाद्य यंत्र
झने	जने की जगह प्रयुक्त

(१७) /क्/- यह अघोष, अल्पप्राण, कंठ्य व्यंजन है। धांगर जाति के लोग प्रारम्भ व मध्य में प्रयुक्त करते हैं। अन्य जातियों में यह अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में

किया	नीचे
ढेक्का	मटका

अन्य आदिवासी जातियों में

कपार	सिर
लकड़ी	लकड़ी
पाकल	पका

(१८) /ख्/- यह अघोष, महाप्राण, कंठ्य, स्पर्श व्यंजन है। जो आदिवासियों में शब्द के प्रत्येक स्थिति में होता है।

जैसे -

धांगर जाति में

खोखा	पिछला
नेंखंग	किसी का
नेखा	किसका

अन्य आदिवासी जातियों में

खग्यिा	खारा
गखि	गख
लख	देखों

(१६) /ग/- यह सघोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्श व्यंजन है तथा यह आदिवासियों में शब्द के आदि व मध्य में प्रचलित है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
गुड्डी	गहरा
निंगहा	आपको
संगे	साथ

अन्य आदिवासी जातियों में

गाइ	गाय
पगड़ी	पगड़ी
लंहगा	लंहगा

(२०) /घ/- यह सघोष, महाप्राण, कंठ्य, स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द के प्रारम्भ व मध्य में धांगर जाति में प्रयुक्त होता है। अन्य जातियों में इसका व्यवहार अन्त में भी होता है।

जैसे -

धांगर जाति में

घेरमर	सब
लघरना	जलना

अन्य आदिवासी जातियों में

घाम	धूप
घंघरा	घाघरा
वाघ्	बाघ

(२१) /म/- यह द्वयोष्ठ, सघोप, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन है। धांगर जाति में यह शब्द के आदि व मध्य मे होता है। अन्य जातियों में इसका व्यवहार अन्त में भी होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
मोच्चा	मुँह
नीम	तुम सब
मामुस	मामा

(२२) /न/- यह वत्स्र्य, संघोप, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन है। वितरण की दृष्टि से यह आदिवासियों में शब्द भी प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धांगर जाति में	
नानस	नाना
तन्नी	थोड़ा
नीन	तुम
अन्य आदिवासी जातियों में	
परान्	प्राण
वान	बाण
नून्	नमक

(२३) /ल़/- यह वत्स्र्य, पार्श्विक व्यंजन है। जनपद की आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धांगर जाति में	
लवा	मारना
नचाहेलरा	नाचने लगी
पाखल	पत्थर

अन्य आदिवासी जातियों में	
लोटा	लोटा
लाल	लाल
चिल्लर	चिल्लर
बाल	बाल

(२४) /र/- यह वर्त्स्य, लुंठित व्यंजन है। जनपद की आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खड़ी बोली रूप
रादन	
एम्बराके	नहाकर
होरबरे	परसों
अन्य आदिवासी जातियों में	
रस्ता	रास्ता
खरर	सड़क
जहर	जहर

(२५) /स/- यह वर्त्स्य, अघोष, संघर्षी व्यंजन है तथा शब्द भी प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

धांगर जाति में	
सन्ने	छोटा
नासगो	भाभी
नानस	नाना
अन्य आदिवासी जातियों में	
सासु	सास
मसान	श्मशान
घास्	घास

(२६) /ह/- यह काकल्य, अघोष, संघर्षी व्यंजन है तथा हर आदिवासी जाति इस शब्द का व्यवहार शब्द के आदि, मध्य व अन्त में करती है।

जैसे -

धांगर जाति मे	
हे हो	सुनो
रहीकेरा	रहा
मेहो	बकरी
अन्य आदिवासी जातियो में	
हर	हल
महीना	महीना
रहिला	चना
लाह	लाख

(२७) /व/- यह द्वयोष्ठ, सघोष अर्द्ध व्यंजन है। वितरण की दृष्टि से यह शब्द के आदि में नहीं आता, केवल मध्य व अन्त में आता है। भोजपुरी क्षेत्र में आदिवासियों के साथ अन्य जनसंख्या भी इस ध्वनि का व्यवहार विकल्प रूप में करती है तथा इसके स्थान पर /अ/ का प्रयोग होता है। शब्दान्त में /व/ /अ/ की तरह उच्चरित होता है।

जैसे -

दुवार	दुआर
ताव	ताउ

धांगरों मे यह शब्द के मध्य व अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे-

लवा	मारना

(२८) /य/- यह तालव्य, सघोष, अर्द्ध व्यंजन है। भोजपुरी क्षेत्र में /य/ की जगह /अ/ का प्रयोग भी विकल्प से होता है।

जैसे-

सियार	सिआर
घरिया	घरिआ

3.2.2 व्यंजन स्वल्पान्तर तथा उपस्वल्पान्तर युग्म

जनपद में निवास करने वाली तथा योगात्मक भाषा रूप का व्यवहार करने वाली अकेली जाति है - धांगर। उल्लिखित व्यंजन ध्वनि इस जाति में व्यापक रूप में प्रयुक्त हैं, लेकिन इनके ध्वनिग्रामिक रूप भी विवेचना के लिये कुछ स्वल्पान्तर युग्म तो मिल जा रहे हैं, अन्यथा ऐसे युग्मों का प्रायः अभाव है। इसलिये ये ध्वनियाँ अर्थभेदक भी है या नहीं, यह कहने में कठिनाई है, लेकिन अर्थभेदकता की प्रवृत्ति इनमें प्राप्त है।

जैसे -

नीन (तुम) तथा नीम (तुम सब) शब्दों में /न/ और /म/, प्रत्यय की तरह प्रयुक्त हैं। /न/ एकवचन बोधक प्रत्यय है, जबकि /म/ बहुवचन बोधक। प्रयोग की दृष्टि से दोनों ही स्वतन्त्र ध्वनियाँ है और अर्थभेदक भी है। ऐसी स्थिति में /न/ और /म/ को ध्वनिग्राम कहा जा सकता है, लेकिन जो भी शब्द सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त हैं, उनमें इस तरह के स्वल्पान्तर युग्मों की संख्या कम है।

धांगर जाति की भाषा और उनके स्वल्पान्तर युग्म—

/च/	-	चाल्गी	द्वार
/ब/	-	बाल्गी	ऑगन
/ख/	-	खेख	हाथ
/स/	-	खेस	धान
/ड/	-	खेड्ड	पैर
/र/	-	रानिद	रानी
/न/	-	नानिद	नानी
/ए/	-	एम्बस	पिता
/इ/	-	निम्बस	उसके पिता
/न/	-	नीन	तुम
		एन्	मैं
/म/	-	नीम	तुम सब
	-	एम	हम सब
/स/	-	ईस	यह (स्त्रीलिंग)
	-	आस	वह (पुल्लिंग)
/द/	-	ईद	यह (पुल्लिंग)
	-	आद	वह (स्त्रीलिंग)
/ई/	-	ईबग्गे	इतना
/ऊ/	-	ऊबग्गे	उतना
/ए/	-	एन्ने	ऐसा
/अ/	-	अन्ने	वैसा
/क/	-	कन्ने	कैसा
/स/	-	कुक्कोस	लड़का
/र/	-	कुक्कोर	लड़की

/क/	-	कावग्गे	कितना
/ज/	-	जावग्गे	जितना
/म/	-	मनोम	होंगे
/त/	-	मनोत	होंगी
/न/	-	ओन्दरोन	लाऊँ
/त/	-	ओन्दरोत	लायें
/द/	-	दहोय	भइया
/व/	-	बहोय	पिता
/ए/	-	एम्बा	मीठा
/ट/	-	टेम्बा	गुच्छा

- धांगर जाति में प्राप्त स्वल्पान्तर युग्म **(Minimal Pair)** यह स्पष्ट करते हैं कि जनपद में अपने भाषिक प्रयोगों के लिए अब भी चुनौती बने हुए ये आदिवासी, ध्वनिग्रामिक संरचना से जुड़े हुए हैं, लेकिन कुछ बातें क्षेत्रीय भाषाओं अवधी, बघेली एवं भोजपुरी से भिन्न हैं -

१. धांगरों की भाषा में प्राणत्व के आधार पर अर्थभेद नहीं है। क वर्गीय महाप्राण इस भाषा में प्राप्त होते हैं, इसलिए यह तो नहीं कहा जा सकता कि ये आदिवासी महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग नहीं करते। लेकिन अन्य वर्गों से संबंधित महाप्राण ध्वनियाँ इस जाति में न के बराबर हैं। अतः कहा जा सकता है कि अल्पप्राण ध्वनियों का व्यवहार ही इस भाषा की मौलिक प्रवृत्ति है तथा जो महाप्राण ध्वनियाँ प्राप्त हुई हैं, प्राणत्व के आधार पर स्वल्पान्तरयुग्म में अर्थभेद नहीं करती हैं। ध्वनिग्रामिक संगठन में अर्थ-प्रक्रिया में इनका कोई महत्व नहीं है।

२. धांगर जाति अघोष ध्वनियो के साथ सघोष ध्वनियों का भी व्यवहार करती है, लेकिन घोषत्व भी इस भाषा में अर्थभेदक नहीं है।

३. अनुनासिक ध्वनियों में केवल दो ही ध्वनियाँ प्राप्त है - /न/ और /म/। ये दोनों ही अर्थभेदक हैं, इसलिए इन ध्वनियों का बड़ा महत्व है। ये दोनों ध्वनियाँ स्वतंत्र रूप में भी प्रयुक्त हैं तथा

दोनों ध्वनि स्वतंत्र पदग्राम भी हैं। प्रत्यय की तरह प्रयुक्त होकर ये ध्वनियाँ वचन-बोधक भी बनती हैं। जहाँ तक दीर्घता व अनुनासिकता का प्रश्न है, इन आदिवासियों में उच्चारण की प्रक्रिया अर्थभेदक नहीं है।

४. यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि जनपद में अन्य आदिवासी जातियाँ, जो बहुसंख्या में भोजपुरी बोलती हैं अथवा अवधी या बघेली का व्यवहार करती हैं, उनमें प्राणत्व, घोषत्व, अनुनासिकता और दीर्घता आर्यभाषाओं से सीधे प्रभावित होने के कारण अर्थभेदक है।

जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ तथा उनमें प्रचलित स्वल्पान्तर युग्म

१. स्पर्श व्यंजन

(अ) कंठय स्पर्श

/क्/ - कंरी लकड़ी
/ख्/ - खंरी खली
/ग्/ - गंरी नारियल
/घ्/ - घंरी घड़ी

(आ) तालव्य स्पर्श

चालि चाल
छालि छाल
जालि जाल
झालि झाल

(इ) मूर्धन्य स्पर्श

/ट्/ - टाटि टाट
/ठ्/ - ठाटि ठाट
/ड्/ - डालि डाल
/ढ्/ - ढालि ढाल

(ई) दन्त्य स्पर्श

/त्/ - ताली
/थ्/ - थाली
/द्/ - दान
/ध/ - धान

(उ) स्पर्श द्वयोष्ठ्य

/प्/	-	पर्र	गिरो
	-	पाप्	पाप
/फ्/	-	फंर	फल
/ब्/	-	बर्र	जलो
	-	बांप	पिता
/भ्/	-	भर्र	भरो

२. नासिक्य व्यंजन

/न्/	-	नानी	नानी
	-	कान	कान
/म्/	-	नामी	मशहूर
	-	काम	काम

३. लुंठित एवं पार्श्विक ध्वनियॉ

/र्/	-	सार्	साला
/ल्/	-	साल्	वर्ष
/ड़्/	-	साड़्	साला
/ल्/	-	लार्	लार

४. अर्ध स्वर

/य्/	-	यार	मित्र
/व्/	-	वार	हमला

3.3 खण्डेतर ध्वनिग्राम (Suprasegmental phoneme)

अवधी, बघेली एवं भोजपुरा बोलने वाले आदिवासी अनुनासिकता का व्यवहार करते हैं तथा यह अनुनासिकता अर्थभेदक होने के कारण स्वल्पान्तरयुग्म में अर्थभेदक है।

जैसे –	वांस	एक तरह की लकड़ी
	बास	एक तरह की सुरभि

गाज	फेन
गाँज	ढेर

आदिवासियों, विशेषतया गोंड़, खरवार व वसवार जातियों में सामान्य स्वरों को भी अनुनासिक करके वोलने की प्रवृत्ति है। आदिवासी अन्य स्थानीय वक्ताओं की तरह ही स्वरों का उच्चारण करते हैं, लेकिन भोजपुरी क्षेत्र क्रिया रूपों को जब स्वरान्त बनाता है तो शब्द के अन्त में प्रयुक्त /अ/ स्वर केवल क्रिया रूप में संवृत रूप में उच्चरित होता है, तथा यह अर्थभेदक होने लगता है।

जैसे -

चल्	और	चर्ल
जर्	और	जर्र

इस स्थिति में /चर्ल/ और /जर्र/ आज्ञार्थक क्रियायें हैं, जिसका अर्थ है - चलो तथा जलो। /जर्/ में वलाघात /ज/ पर है। इस कारण शब्द का अर्थ है - बुखार। /जर्र/ में वलाघात /र/ पर है, जिसका अर्थ है - जलो। इस तरह यह वलाघात भी अर्थभेदक दिखाई पड़ता है। दीर्घता आदिवासियों में नहीं मिलती।

3.4 स्वर संयोग

स्वर संयोग और धांगर जातिः

धांगरी भाषा कोलारियन समूह की भाषा है, तथा आज भी अपने योगात्मक रूप के साथ प्रचलन में है। जिस तरह भारतीय भाषाओं में प्राचीनतम भाषा संस्कृत में स्वर संयोग की प्रवृत्ति नहीं है, क्योंकि स्वर के बाद प्रयुक्त होकर स्वर, संधि प्रक्रिया के कारण रूपान्तरित हो जाता है, उसी तरह धांगर आदिवासियों की भाषा में स्वर संयोग नहीं है। भोजपुरी के प्रभाव के कारण जो शब्द इनमें प्रचलित हो गये हैं, उनमें /अउर/, अकेला ऐसा शब्द है जिसमे यह सयोग दिखाई पड़ता है। सर्वेक्षण के बाद जो सामग्री प्राप्त है, उसमे /भइया/ एकमात्र शब्द है जो धागरों का अपना शब्द है, जिसका अर्थ है /वहाँ/। भोजपुरी भाषा में यह शब्द माँ अथवा सास के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

स्वर-सयोग तथा जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँः

जनपद में निवास करने वाली प्रमुख जातियों में खरवार, बसवार, गोंड़, अगरिया व पनिका थोड़ी उच्चारण भिन्नता के साथ भोजपुरी अथवा बघेली का व्यवहार करते हैं। इनमें दो स्वर अथवा दो से अधिक स्वर भी एक साथ प्रयुक्त होते दिखायी पड़ते हैं।

अन्त्य स्वर सयोग

/इ/ /आ/	पइया	चावल का कीड़ा
/उ/ /आ/	पउआ	सेर
/आ/ /ऊ/	नाऊ	नाई
/ओ/ /इ/	होइ	हो
/ओ/ /उ/	होउ	हो
/ओ /आ/	खोआ	खोआ
/ओ/ /इ/	ओइ	स्वीकृति सूचक शब्द
/ऊ/ /ई/	सूई	सुई
/अ/ /ई/	दूइ	दो
/ई/ /आ/	दीआ	दीप
/आ/ /ई/	माई	माँ

स्वर संयोग मध्य स्थिति

/अ/ /इ/	भइल	हुआ
/ई/ /अ/	पीअर	पीला
	नीयरे	नजदीक
/इ/ /अ/	हरिअर	हरा
/अ/ /उ/	मउसी	मौसी

दो स्वर संयोग प्रारभिक स्थिति

/ओ/ /इ/	ओइसन	वैसा
/अ/ /इ/	अइसी	इधर से
	अइली	आया
/अ/ /उ/	अउर	और

तीन स्वर संयोग

आदिवासी भोजपुरी के प्रभाव के कारण ऐसे शब्दों का भी उच्चारण करते हैं, जिनमें तीन स्वर एक साथ प्रयुक्त होते हैं।

/अ/ /उ/ /अ/	मउअति	मौत
/अ/ /उ/ /आ/	कउआ	कौआ
/ओ/ /इ/ /उ/	ननिआउर	ननिहाल

/ओ/ /इ/ /आ/	चोइआं	चमड़ा
/अ/ /इ/ /आ/	पइआ	धान का कीड़ा

3.5 व्यंजन गुच्छ

व्यंजन-गुच्छ किसी भी भाषा की मौलिक प्रवृत्ति है। गुच्छों का निर्माण या तो उच्चारण सुख के कारण होता है, या संधि प्रक्रिया के कारण। दो या दो से अधिक व्यंजनों का एक साथ प्रयोग तथा उनके बीच में स्वर ध्वनि का न आना ही इस प्रक्रिया का मूल कारण है। बोलियों पर कार्य करने वाले डा० ग्रियर्सन ने यह माना है कि वर्गीय व्यंजनों के गुच्छ किसी भी भाषा में अधिक बनते हैं, लेकिन इससे भिन्न स्थिति भी होती है। आदिवासियों में जो शब्द आगत हैं, तथा उनके मूल उच्चारण में गुच्छ बनता है, उनमें स्वरागम करने की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे ब्लाक को /बलाक/ कहना। एक दूसरी प्रवृत्ति भी है। जिस व्यंजन से मिलकर पूर्व व्यंजन गुच्छ बनाता है, उसका लोप करके अंतिम ध्वनि का द्वित्व कर देना। जैसे - /कलेक्टर/ को /कलट्टर/ बोलना। ऐसे भी विदेशी आगत शब्द इन जातियों में आ गये हैं, जो गुच्छे से ही बने हैं, लेकिन अगर कोई संघर्षी ध्वनि प्रारम्भ में है, तो उसका लोप करके सरल रूप में शब्द के उच्चारण का प्रचलन है, जैसे - /स्टेशन/ को /टेशन/ कहना। सरलीकरण किसी भी भाषिक समुदाय की सहज प्रवृत्ति होता है।

सवर्गीय व्यजंन गुच्छ

सामान्यतया सवर्गीय स्थिति में स्पर्श के साथ स्पर्श व्यंजन ध्वनियाँ जुड़ती हैं या नासिक्य व्यजन के साथ नासिक्य ध्वनियां। यही स्थिति युग्मों की भी है। युग्म ध्वनियों में आदिवासियों में केवल दन्त्य 'स' उच्चरित है। इसलिये /स/, /स/ के साथ जुड़कर गुच्छ बनाता है। स्पर्श, + नासिक्य, स्पर्श + उष्म, स्पर्श + अर्ध स्वर या नासिक्य + अर्ध स्वर मिलकर भी गुच्छ बनाते हैं। व्यंजन-गुच्छ की स्थिति वितरण की दृष्टि से शब्द के आदि, मध्य, अन्त तीनों में संभव है, लेकिन जनपद के आदिवासी शब्द के आदि में व्यजंन-गुच्छ का प्रयोग नहीं करते। सामान्यतया यह गुच्छ दो स्वरों के बीच में ही उच्चरित हो पाता है क्योंकि शब्दान्त में भी संयुक्त व्यजनों का उच्चारण संभव नहीं होता।

धांगर जाति तथा उसमें प्रयुक्त व्यजंन गुच्छ

कंठ्य स्पर्श + कंठ्य स्पर्श	-	कुक्कोस	लड़का
	-	लक्कम	देखा करता था .

तालव्य स्पर्श + तालव्य स्पर्श	-	पच्चा	पुराना
	-	विच्चै	बीच में
	-	मोच्चा	मुँह
मूर्धन्य स्पर्श + मूर्धन्य स्पर्श	-	अड्डो	बैल
दन्त्य स्पर्श + दन्त्य स्पर्श	-	ओन्दरोन	साँड़
संघर्षी + संघर्षी	-	किस्स	सूअर
	-	गुस्सार्दी	नाराज होती हो
पार्श्विक + पार्श्विक	-	अल्ला	कुत्ता
	-	खल्ली	चाची
	-	पल्ल	दाँत
नासिक्य + नासिक्य	-	कन्ने	किधर
	-	कन्नू	किसी में
	-	अम्म	पानी
	-	सन्ने	छोटा

भिन्न वर्गीय व्यजंन गुच्छ

नासिक्य + स्पर्श	-	ओन्टा	एक
	-	ओण्डकन	खाया
	-	ओन्दरोन	साँड़
	-	गेम्वा	मीठा
नासिक्य + सघर्षी	-	खेन्सो	लाल

जनपद की अन्य आदिवासी जातियॉ तथा सवर्गीय व्यजंन गुच्छ

कंठ्य स्पर्श + कंठ्य स्पर्श	-	कक्का	चाचा
	-	पक्खा	घर का किनारा
	-	लग्गा	लकड़ी
	-	बग्घा	बाघ

तालव्य स्पर्श + तालव्य स्पर्श		–	चच्चा	चाचा
		–	लच्छी	लपेटी रस्सी
		–	धज्जी	चिंदा
		–	गुज्झा	टुकड़े
मूर्धन्य +	मूर्धन्य	–	खट्टा	खट्टा
		–	पट्ठा	मजबूत
		–	लड्डू	लड्डू
		–	बुड्ढा	बूढ़ा
दन्त्य स्पर्श +	दन्त्य स्पर्श	–	लत्ता	कपड़ा
		–	हत्था	हत्था
		–	गद्दी	गद्दी
		–	अद्धा	आधा
द्वयोष्ठ स्पर्श +	द्वयोष्ठ स्पर्श	–	कुप्पा	कुप्पी
		–	ठप्पा	ठप्पा
		–	फुफ्फा	फूफा
		–	अब्बर	कमजोर
		–	गब्भा	गहराई
संघर्षी +	संघर्षी	–	खिस्सा	किस्सा
		–	हिस्सा	भाग
पार्श्विक +	पार्श्विक	–	गल्ला	अनाज
			ढल्ला	ढेला
लुंठित +	लुंठित	–	कर्रा	भेड़िया
		–	भर्रा	छप्पर की लकड़ी
नासिक्य +	नासिक्य	–	नन्ना	नाना
		–	लम्मा	लंबा

भिन्नवर्गीय व्यंजन गुच्छ :

भोजपुरी भाषी क्षेत्र में आदिवासियों में भिन्नवर्गीय गुच्छों का अभाव है। क्योंकि सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण ऐसे गुच्छों में स्वरागम हो जाता है, अतः ऐसे गुच्छ प्रचलन में नहीं के बराबर हैं। जैसे- कुर्सी, बर्छी, जैसे शब्द कुरसी, बरछी रूप में उच्चरित होते हैं। स्पर्श ध्वनियों के कारण लुंठित ध्वनियाँ जहाँ खड़ी बोली में गुच्छ बना लेती हैं, वहीं भोजपुरीभाषी आदिवासियों में स्वरागम ही मूल प्रवृत्ति है।

जैसे - हरदी, बरधा।

आदिवासियों में प्रचलित इन व्यंजन गुच्छों को एक सारणी के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस योजना का व्यवहार, संदर्भ अग्रांकित है-

धांगर भाषा में प्रयुक्त व्यंजन गुच्छ

	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	घ	प	फ	ब	भ	न	म	स	ह	र	ल	य	व
क										X															X	X		
ख			X	X								X									X							
ग													X															
घ																												
च			X										X		X													
छ																												
ज																												
झ																												
ट																												
ठ																												
ड														V														
ढ																												
त																												
थ																												
द																												
ध																												
प		X																										
फ																												
ब																												
भ																				X		X						
न		X																										
म						X																						
स		X																										
ह		X																			X							
र		X																										
ल		X																										
य																												
व																												

अन्य आदिवासी जातियो मे प्रयुक्त प्रयुक्त व्यंजन गुच्छ

	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध	प	फ	ब	भ	न	म	स	ह	र	ल	य	व
क		x																										
ख																												
ग			x	x																								
घ			x																									
च					x	x																						
छ																												
ज							x	x																				
झ																												
ट									x	x																		
ठ																												
ड											x	x																
ढ																												
त													x	x														
थ																												
द															x	x												
ध																												
प																	x	x										
फ																												
ब																												
भ																			x									
न		x			x	x	x				x	x	x															
म											x		x	x			x				x	x	x			x		
स		x																			x	x	x					
ह																												
र		x														x	x	x					x					
ल		x																					x					
य		x									x						x					x						
व																												

अध्याय 4

संज्ञा

संज्ञा रूपतालिका

संज्ञा पद अपने गठनात्मक धरातल पर प्रकृति अथवा प्रातिपदिक के पश्चात् विभक्तियों के युक्त संक्रमण को स्वीकार करता है। इस तरह मूल अर्थबोधक प्रातिपदिक के बाद जब भी व्याकरणिक अर्थ प्रकट करने के लिये संज्ञा प्रातिपदिक के बाद विभक्तियां लगतीं हैं तो पद पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति में सक्षम हो जाता है। मूल प्रातिपदिकों से केवल मूल के सत्व का बोध होता है, लेकिन मूल प्रतिपदिक को वाक्य में प्रयुक्त करने की क्षमता नहीं होती। लिंग, वचन अथवा कारकीय स्थिति प्रकट करने के लिये जोड़ने वाली विभक्ति सत्व प्रधान इकाई अथवा प्रातिपदिक के साथ जुड़कर पद का निर्माण करती है। भोजपुरी क्षेत्र में ऐसे शब्द भी प्राप्त हैं जो पद धरातल तक शून्य विभक्ति से युक्त होते हैं, अर्थात पारंपरिक रूप में प्राप्त विभक्तियाँ, इनके साथ अलग से जुड़ी नहीं दिखायी पड़तीं। लेकिन यह शून्यता भी लिंग, वचन तथा कारक का व्याकरणिक अर्थ प्रकट करने में सक्षम होती है। अगर इस दृष्टि से प्रातिपदिकों का वर्गीकरण किया जाय तो दो स्थितियाँ सामने आतीं हैं -

क - संज्ञा प्रातिपदिक का मूल रूप

ख - संज्ञा प्रातिपदिक का व्युत्पन्न रूप

इन दोनों ही इकाइयों के बाद विभक्ति का संयोग होता है। संज्ञा प्रातिपादिक अपने प्रयोग में या तो स्वरान्त होते हैं या व्यंजनांत। पूरे परिक्षेत्र में जो भी आदिवासी जातियाँ निवास करती हैं अथवा भोजपुरी भाषी सवर्ण जाति के लोग रहते हैं, सामान्यतया शब्द के अन्त में /अ/ स्वर का प्रयोग नहीं करते। यह स्वर व्यंजनसंयोग से बनने वाले प्रातिपादिकों के अन्त में ही उच्चरित होता है। आदिवासियों में भाषिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण जाति धांगर संज्ञा प्रातिपादिकों के अन्त में ह्रस्व स्वरों का व्यवहार नहीं करती।

4. .क : धांगर जाति तथा उनमें प्रयुक्त स्वरान्त प्रातिपदिक :

		(हिन्दी अर्थ)
/अ/-	प्रयोग में नहीं	
/आ/-	अरामा	रोटी
	पागा	पगड़ी
	फड्डुआ	फावड़ा
/इ/-	प्रयुक्त नहीं	
/ई/ -	ऐंखई	पत्नी
	खल्ली	चाची
	ताची	बुआ

/उ/-	प्रयुक्त नहीं	
/ऊ/-	जम्बू	जामुन
/ए/-	प्रयुक्त नहीं	
/ओ/-	अड्डो	बैल
	नासगो	भाभी

स्वरान्त प्रयुक्त प्रातिपदिक पुल्लिंग भी हैं, स्त्रीलिंग भी हैं। इसलिये जाति की शब्दावली के विश्लेषण से यह नहीं कहा जा सकता कि किसी विशेष स्वर में समाप्त होने वाले पद पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग होते हैं।

स्वरान्त पुल्लिंग प्रातिपदिक:

		(हिन्दी अर्थ)
/आ/-	मोच्चा	मुंह
	फड़ुआ	फावड़ा
	ठेक्का	मटका
/ओ/-	अड्डो	बैल

स्वरान्त पुल्लिंग प्रातिपदिक:

/आ/-	असमा	रोटी
	पागा	पगड़ी
/ई/-	ताची	चाची
	एंखई	पत्नी
/ओ/-	नासगों	भाभी

व्यंजनान्त प्रातिपदिक:

धागर जाति में कुछ अपवादों को छोड़कर व्यंजनान्त प्रातिपदिकों का अभाव है। कुछ संज्ञा प्रातिपदिक ऐसे हैं, जो संस्कृत तत्सम हैं और धांगर जाति में अपने मूल अर्थ में प्रचलित हैं। चूंकि इनमें उच्चारणगत परिवर्तन है, इसलिये इन प्रातिपदिकों को तद्भव कहा जा सकता है।

जैसे- /अम्म/ (पानी) संस्कृत रूप - अम्बु

बाल के लिये धांगरों में व्यंजनान्त संज्ञा प्रातिपदिक /कच/ प्रयुक्त है, जो संस्कृत से आया है। सामग्री संकलन के समय /खेख - हाथ/, /तीखिल - चावल/, /पाखल- पत्थर/ ऐसे प्राप्त शब्द हैं जो व्यंजनान्त हैं, अन्यथा प्राप्त संज्ञा प्रातिपदिकों के रूप अधिकांशतः स्वरान्त हैं।

4. खः जनपद की अन्य आदिवासी जातियॉ तथा उनमे प्राप्त संज्ञा प्रातिपदिक

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां संज्ञा प्रातिपदिकों का व्यवहार मूल रूप में करती हैं। इन रूपों में लिंग अथवा वचन का परिचय देने वाली विभक्तियॉं नहीं जुड़तीं, अथवा इन प्रातिपदिकों को शून्य विभक्ति युक्त माना जा सकता है।

		(हिन्दी अर्थ)
जैसे-	घाम	धूप
	चाम	चमड़ा
	लात	पैर
	गोड़	पैर

जनपद की आदिवासी जातियॉं ऐसे प्रातिपदिकों का भी व्यवहार करती हैं जिनमें व्युत्पादक परप्रत्यय को जोड़कर भी रूप निर्मित होता है तथा संज्ञा प्रातिपदिक का मूल रूप तथा व्युत्पन्न रूप साथ ही प्रयुक्त होता है।

जैसे -

मूल रूप - ऑखि, नाकि, मुँह
व्युत्पन्न रूप- अंखिया, नकिया, मुहँवा

स्वरान्त प्रातिपदिक

/अ/- जनपद के आदिवासी /अ/ स्वर का व्यवहार प्रातिपदिक के अन्त में नहीं करते, लेकिन जहां व्यंजन संयोग मिलाते हैं, ऐसे स्थानों पर /अ/ का व्यवहार देखा जा सकता है।

जैसे- कान्ह (मिट्टी के भंडार का कंधा)

कंधे के अर्थ में कान्ह/कान्हि, दो रूप संपरिवर्तक रूप में प्रचलित हैं तथा गोड़ और बसवार इसे अकारान्त रूप में ही बोलते हैं।

/आ/- दादा, बाबा, कनगा

दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी इनके स्थान पर कक्का, बबा रूप का उच्चारण करता है।

/इ/- आगि, राति, आंखि, कोसि
सोन के दक्षिण का आदिवासी इन रूपों को अकारान्त बोलता है।

/ई/- चाभी, माटी, धोती, गोजी, चाची

/ए/– दूबे, चौबे

/उ/– गांउ, आंसु, सासु

/ऊ/– नाऊ, गोरू, बछरू

व्यंजनांत प्रातिपदिक (अघोषान्त)

जनपद के आदिवासियों में धांगरों के अतिरिक्त अन्य जातियों में अल्पप्राण रूपों के महाप्राण रूप भी प्रचलित हैं। अतः स्पर्श व्यंजनों में नासिक्य ध्वनियों में कुछ को छोड़कर शेष व्यंजनों का व्यवहार संज्ञा प्रातिपदिकों के अन्त में मिलता है।

/क/–	कातिक्	एक महीना
	खटिक्	एक जाति
/ट/–	पेट्	पेट
	वेंट्	हत्था
	पाट्	पाट
/त/–	खेत्	खेत
	भात्	चावल
	जांत्	पीसने का यंत्र
/प/–	सांप्	सांप
	बाप्	बाप
/च/–	सोच्	सोच
	लोच्	मुलायम

व्यंजनांत प्रातिपदिक (सघोषान्त)

/ग/–	साग्	साग
	रोग्	व्याधि
	जोग्	योग

/ड/ड़/– ड का व्यवहार सामान्यतया आदिवासी शब्दान्त में नहीं करता लेकिन /ड़/ शब्दान्त में प्रयुक्त है।

जैसे-	पेंड़	पेड़
	रेड़	एक प्रकार का पेड़
/द/–	लाद	पेट
	गाद	परत
/ब/–	जवाब	जवाब
/ज/–	अनाज	अनाज
	भतीज	भतीजा

महाप्राण प्रातिपदिक (अघोषान्त)

/ख/–	पाख	पक्ष
/ढ/–	काढ़	लकड़ी
	लाठ	रास्ता
/थ/–	हांथ	हाथ
	मॉथ	माथा
/फ/–	गोफं	फुनगी
	भाफ	भाप
/छ/–	काछ	काछ

महाप्राण व्यंजनांत प्रातिपदिक (सघोषान्त)

/घ/–	बाघ	बाघ
	घाघ	घाघ

/ढ/–	ढ का प्रयोग शब्दान्त नहीं है। इसके स्थान पर ढ सहस्वन का प्रयोग होता है।	
/ध/–	दुसाध	एक जाति
	बाध	बाघ (रस्सी)
/भ/–	गाभ	अन्त में
/झ/–	सांझ	संध्या
	बांझ	बंध्या

भोजपुरी क्षेत्र में जिन नासिक्य व्यंजनों का व्यवहार होता हैं उनमें /न/ और /म/ प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त अन्य नासिक्य ध्वनियों का प्रयोग आदिवासी नहीं करतें।

/न/–	कान	कान
	धान	धान
/म/–	चाम	चमड़ा
	घाम	धूप
	साम	साम

संघर्षी व्यंजनांत प्रातिपदिक

/ह/–	नह	नाखून
	मुँह	मुँह
/ल/–	जेल	जेल
	तेल	तेल
/र/–	घर	घर
	जर	जर

संज्ञा प्रातिपदिक तथा उनके व्युत्पन्न रूप –

इस क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी भोजपुरी भाषा के प्रभाव के कारण संज्ञा रूपों का व्यवहार उसके मूल रूप के साथ उसके विकृत रूप में भी करता है जिसमें लघुरूप, दीर्घरूप और दीर्घतम रूप भी प्राप्त हैं। जैसे - चमार - चमरा - चमरवा।

इन रूपों का व्यवहार परसर्गों के पूर्व होता है, लेकिन यह प्रवृत्ति धांगरों में नहीं है। धांगर जाति के लोग संज्ञा प्रातिपदिक के मूल रूप का ही व्यवहार करते हैं। धांगरों के अतिरिक्त /आ/ या /वा/ जोड़कर रूप निर्मित होते हैं।

जैसे-	लोहार	लोहरा
	सोनार	सोनरा
	घर	घरवा
	खपड़ा	खपड़वा
	गाय	गइया
	राखि	रखिया

इस तरह के परिवर्तनों में एक और प्रवृत्ति भी दिखाई पड़ती है। मूल प्रातिपदिक के अन्त में प्रयुक्त होने वाला दीर्घ स्वर प्रातिपदिक का दीर्घरूप बनाते समय ह्रस्व स्वर हो जाता है।

जैसे-	फरसा	फरसवा
	खपड़ा	खपड़वा

अकारान्त, आकारान्त एवं व्यंजनान्त प्रातिपदिकों के मूल लघुरूप जब संज्ञा प्रातिपदिकों के दीर्घरूप बनाने लगते हैं, तो उनके अन्त में /वा/ प्रत्यय की तरह प्रयुक्त होता है।

जैसे-	घर	घरवा
	फर	फरवा
	फरसा	फरसवा
	खपड़ा	खपड़वा

वे प्रातिपदिक, जो अपने मूल लघुरूप में इकारान्त हैं वे दीर्घरूप बनाते समय आकारान्त हो जाते हैं।

जैसे-	गाइ	गइया
	राखि	रखिया

यहाँ यह विचारणीय है कि ऐसे प्रातिपदिकों का प्रथम दीर्घ स्वर सदैव ह्रस्व हो जाया करता है। यह स्थिति ह्रस्व अकारान्त तथा दीर्घ अकारान्त में भी है। /आ/ प्रत्यय जोड़कर इनके भी दीर्घरूप वनते हैं। यदि ऐसे प्रातिपदिक स्त्रीवाची हैं तो दीर्घरूप वनते समय प्रत्यय के पूर्व स्त्रीवाची प्रत्यय /इ/ का आगम होता है तथा व्युत्पन्न रूप में मूल रूप का प्रथम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाया करता है।

जैसे-	भालु	भलुइया
	आलू	अलुइया
	सासु	ससुइया

जहाँ तक व्यंजनांत संज्ञा मूल प्रातिपदिकों का प्रश्न है, उनके बाद भी /वा/ प्रत्यय जुड़ता है, लेकिन यदि मूल प्रातिपदिक के अन्त में अनुनासिक ध्वनि है तो व्युत्पन्न प्रातिपदिक का अंतिम स्वर भी अनुनासिक हो जाता है।

जैसे-	काम	कमवां
	घाम	घमवाँ
	चाम	चमवां
	कान	कनवां

इस तरह दीर्घ रूप बनाने की प्रवृत्ति भोजपुरी के प्रभाव के कारण जनपद के प्रत्येक आदिवासी समुदाय में है। केवल धांगर जाति इसकी अपवाद है। धांगर जाति के लोग संज्ञा प्रातिपदिक के मूलरूप का ही व्यवहार करते है।

स्वरान्त प्रातिपदिक (पुल्लिंग)

/अ/–	गिद्ध
/आ/–	बरदा
	बछवा
/इ/–	सामान्तया अप्राप्त
/ई/–	पानी
/उ/–	घाउ
/ऊ/–	नाऊ
/ए/–	दूबे
/ओ/–	कोदो

संज्ञा रूपों में /ऐ/ और /औ/ प्रातिपदिकों के अन्त में प्रचलित नहीं है।

व्यंजनान्त प्रातिपदिक (पुल्लिंग)

/क/–	कातिक
/ख/–	पाख
/ग/–	साग
/घ/–	बाघ
/च/–	खोंच
/छ/–	काछ
/ज/–	जहाज
/झ/–	झांझ
/ट/–	टाट
/ठ/–	काठ
/ड/ड़/–	डाड़
/ढ/ढ़/–	कोढ़
/त/–	लात
/थ/–	हाथ
/द/–	मवाद
/ध/–	दुसाध
/प/–	नाप
/ह/–	गोह
/ब/–	गरीब
/भ/–	गाभ
/ल/–	गाल
/र/–	लार
/स/–	नास
/ह/–	लाह
/न/–	कान
/म/–	नाम

स्वरान्त प्रातिपदिक (स्त्रीलिंग)

/अ/–	अप्राप्त
/आ/–	सरिआ
	बहिया
/इ/–	गाइ
	नाकि
	सांसि
/ई/–	ओसारी
	भांजी
	लकड़ी
/उ/–	सासु
	भालु
/ऊ/–	आलू

व्यंजनांत प्रातिपदिक (स्त्रीलिंग)

इस क्षेत्र का आदिवासी सामान्तया स्त्रीलिंग में व्यंजनांत प्रातिपदिकों का प्रयोग नहीं करता है।

....

4 ग : वचन .

सामान्यतया व्याकराणिक स्थितियों के निर्वाह में संज्ञारूपतालिका अपने मूल रूप में अपने वचन का परिचय देती है लेकिन यह परिचय वाक्य स्तर पर ही संभव होता है। प्रातिपदिकों में जुड़ने वाली विभक्तियाँ व्याकरणिक स्थिति को स्पष्ट करते हुये लिंग, वचन तथा कारकीय संरचना में सक्षम होती हैं। फिर भी संज्ञाओं में कितने ऐसे रूप प्राप्त होते हैं जिनमें विभक्ति दिखाई नहीं पड़ती, यानी शून्य विभक्ति से काम चलाया जाता है। आर्यभाषाओं में इस तरह प्रातिपदिकों के मूल अथवा विकृति रूप विभक्ति का संयोजन कर, पद निर्माण में सहायक होते हैं।

वचन बोधक विभक्तियों का संयोजन तथा धांगर जातिः

धांगर जाति में वचन बोधक प्रत्यय के रूप में केवल दो प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं-

एकवचन	बहुवचन
-स	-र

संज्ञा प्रातिपदिक के अन्त में इन्हें जोड़कर पद बनता है, और यह पद वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता धारण कर लेता है।

जैसे-

पुल्लिंग प्रातिपदिक

	एकवचन	बहुवचन
	कुक्को -स , कुक्कोस (लड़का)	कुक्को- र, कुक्कोर (लड़के)
स्त्रीलिंग प्रातिपदिक	कुक्के, (लड़की)	कुक्केर (लड़किया)

धांगर जाति में /-स/ प्रत्यय का व्यवहार पुल्लिंग एकवचन के लिये होता है, जबकि /-र/ बहुवचन व्यक्त करके के लिये पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त है। धांगर जाति स्त्रीलिंग एकवचन में /-द/ प्रत्यय का व्यवहार करती है।

जैसे -

रानिद	रानी
नानिद	नानी
खईद	दुल्हन

यह ध्यान देने की बात है कि /-द/ प्रत्यय का व्यवहार समान रूप से स्त्रीवाची सर्वनामों के साथ भी होता है तथा /-स/ का प्रयोग पुरूषवाची सर्वनामों के साथ। पुरूषवाची सर्वनाम, अन्यपुरूष एकवचन एवं पुरूषवाची सर्वनाम स्त्रीवाची एकवचन दोनों के लिये क्रमशः /-स/ और /-द/ आबद्ध रूप विभक्तियों की तरह प्रयुक्त हैं।जबकि बहुबचन संज्ञा रूप तालिका में सर्वत्र /-र/ विभक्ति की तरह प्रचलित मिलता है।

अन्य आदिवासी जातियाँ तथा उनकी वचन विभक्ति प्रकियाः

अन्य आदिवासी जातियों में कुछ संज्ञा प्रातिपदिक ऐसे हैं जिनमें संख्यावाची विशेषण लगाने के बाद ही वचन का परिचय मिलता है।

जैसे - एक रोटी।
दूइ रोटी।
ढेरइ रोटी।

यहाँ रोटी पद में लिंगबोधक शून्यविभक्ति तो है लेकिन वचनबोधक इकाई उसमें समाहित नहीं है। संज्ञा रूप तालिका अपने मूलरूप में /न/, /वन/, प्रत्यय जोड़कर बहुबचन बनाती है।

जैसे-

/न/-	कुक्कुर	कुक्कुरन
	बरदा	बरदन
	अदिमी	अदिमिन

ऐसे प्रयोगों में उच्चारणगत परिवर्तन दृष्टव्य हैं, जो संधि-प्रक्रिया का हिस्सा हैं। ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक जिनमें व्यंजन संयोग हैं, उनमें प्रत्यय जुड़ने के साथ एक व्यंजन का लोप हो जाता है। इसी तरह जिन प्रातिपदिकों के अन्त में दीर्घ स्वर हैं, वे ह्रस्व हो जाते है।

/अन/- अन प्रत्यय का व्यवहार /न/ प्रत्यय के संपरिवर्तक रूप में होता है।

जैसे-

मछरी	मछरिन /	मछरियन
आदमी	अदमिन /	अदमियन

/वन/- ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक जो दीर्घ रूप में प्रचलित होते हैं, उनके अन्त में /न/ परप्रव्यय /व/ के साथ प्रयुक्त होता है।

जैसे-

घोड़ा	-	घोड़वा	-	घोड़वन
नाधा	-	नधवा	-	नधवन

4 घः कारकीय संरचना

संज्ञा का मूलरूप वाक्य में अन्यपदों के साथ संवंध वनाते हुये जो रूपान्तर ग्रहण करता है, उसे कारक कहा गया है। यह रूपान्तरण सर्वनाम विशेषणों में भी होता है। गठन की इस प्रक्रिया में वाद में आने वाला प्रत्यय मूल रूप में भी ध्वन्यात्मक परिवर्तन करता है। इस कारण संज्ञा का मूलरूप तथा उसका विकारी रूप एक साथ देखा जा सकता है। आर्य भाषाओं में यह प्रवृत्ति आज की तिथि में सामान्य हो गयी है।

धांगर जाति की भाषा व उसकी कारकीय संरचनाः

धांगर जाति के प्राप्त भाषाई रूप और उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि यह जाति परसर्गो का व्यवहार करती है तथा प्रातिपदिक से लिंगबोधक प्रत्यय, बचनवोधक प्रत्यय तथा कारकीय विभक्तियाँ जुड़कर सवको एक इकाई बना देती है। भाषा के प्राचीतम रूप ... का प्रतिनिधि होते हुए भी धांगरी में संस्कृत भाषा की तरह एक ही विभक्ति से लिंग, वचन, कारक का परिचय नहीं होता। यह एक मौलिक स्थिति है कि आधुनिक आर्यभाषाओं की तरह इस भाषा में भी व्याकरणिक अर्थ का बोध कराने वाली लिंग, वचन, कारक की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले अलग - अलग प्रत्यय एक ही इकाई का हिस्सा वनकर योगात्मक रूप में प्रयुक्त होते हैं। धांगर जाति में कर्त्ता, कर्म, संप्रदान, संबंध व अधिकरण के एकवचन और बहुवचन रूप तो प्राप्त हैं, जिनके लिए स्वतंत्र परसर्ग प्रयुक्त होते हैं। करण तथा अपादान में भिन्नता नहीं है तथा इसके लिए /तुरू/ परसर्ग जोड़कर प्रसंग से अर्थ निकाला जाता है।

कर्त्ता	-स	-र
कर्म	-सिन	-रिन

करण के लिये /तुरू/, संप्रदान के लिये /गे/, संबंध के लिये /हां/, अधिकरण के लिये /नू/ परसर्ग जोड़कर मूल संज्ञा प्रातिपदिक में बिना किसी परिवर्तन के एकवचन तथा बहुबचन दोनों रूपों में धांगर जाति के लोग व्याकरणिक संदर्भो का निर्माण करते हैं।

जैसे-

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कुक्कोस (लड़का)	कुक्कोर (लड़के)
कर्म	कुक्कोसिन (लड़के को)	कुक्कोरिन (लड़कों को)
करण	कुक्कोसतुरू (लड़के से)	कुक्कोरतुरू (लड़को से)

सप्रदान	कुक्कोसगे (लड़के के लिये)	कुक्कोरगे (लड़को के लिये)
अपादान	कुक्कोसतुरू (लड़के से)	कुक्कोरतुरू (लड़को से)
संवंध	कुक्कोसहां (लड़के की)	कुक्कोरहां (लड़कों की)
अधिकरण	कुक्कोसनू (लड़के पर)	कुक्कोरनू (लड़कों पर)

स्त्रीवाची रूपों में कारकीय प्रक्रिया परसर्गों के संगठन में पुल्लिंग जैसी है। केवल कर्त्ता कारक रूप अलग हैं, जिसमें मूल प्रातिपदिक की भिन्नता इसे स्वतंत्र आकार देती है।
जैसे-

स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
	कुके	कुकेर

शेष रूप एकवचन तथा बहुबचन /सिन/, /तुरू/, /गे/, /हॉ/ तथा /नू/ परसर्ग जोड़कर तैयार होते हैं।

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां तथा उनकी कारकीय प्रक्रियाः

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां स्थानीय भोजपुरी तथा बघेली का व्यवहार करती हैं। भोजपुरी बोलने वालों में संज्ञा के लघु, दीर्घ तथा मध्यम रूप प्राप्त हैं तथा इनके मूल रूप में शून्य विभक्ति का ही प्रयोग होता है। विकारी रूप का एकबचन शून्य विभक्ति से बनता है। संज्ञा के वे रूप पुल्लिंग एकवचन अथवा स्त्रीलिंग एकबचन में प्राप्त हैं। उनमें बहुबचन बनाते समय एकबचन से भिन्न विभक्तियां प्राप्त होती हैं। पूरे परिक्षेत्र में /क/, /रे/, /ने/, /के/, /क/, /से/, /में/ परसर्ग प्राप्त होते हैं।

/के/, /रे/, /ने/- यह परसर्ग संज्ञा तथा सर्वनामों के बाद आता है।
संज्ञा पद - अदमी परसर्ग /के/- अदमी के।
/रे/ तथा /ने/- परसर्ग संपरिवर्तक के रूप में प्रयुक्त हैं जो पुरूषवाची सर्वनाम, उत्तमपुरूष तथा निजवाची सर्वनामों के बाद प्रयुक्त होते हैं। जैसे - हमरे, अपने।
/में/- संज्ञा पदों के बाद आकर यह परसर्ग काल, अवस्था तथा अधिकरण पर प्रकाश डालता है।

/म/- इस परसर्ग का व्यवहार गोंड़ व बसवार करतें हैं। यह/में/ अर्थ में ही प्रयुक्त है।

जैसे- बील म घुसस।
(बिल में घुसा)

/ने/- अहीर तथा बसवार/ में/ के अर्थ में/ने/का भी प्रयोग करता है।
जैसे - घरे ने
में का प्रयोग पूरे भोजपुरी भाषी क्षेत्र में है,जो संज्ञा तथा सर्वनाम दोनों के बाद प्रचलित है।
जैसे- घरे में
एम्में, ओम्में (इसमें, उसमें)

/से/- इस परसर्ग का प्रयोग संज्ञाओं में करण और संप्रदान दोनों स्थितियों में होता है।
जैसे- घरे से,
नाकी से
/क/- यह परसर्ग संज्ञा पदों के पश्चात् आता है। जैसे- लड़की क बावू (लड़की के पिता)
/बदे/- इस परसर्ग का व्यवहार/लिये/ के अर्थ में पूरे भोजपुरीभाषी क्षेत्र में है और आदिवासी इसी अर्थ में इसका व्यवहार करता है।
जैसे- लड़का बदे (लड़के के लिये)

कारकीय रचना का प्राप्त संदर्भ इस बात की सूचना देता है कि आदिवासियों में ह्रस्व स्वरान्त व दीर्घ स्वरान्त जो भी प्रातिपदिक रूप प्राप्त हैं अथवा व्यंजनांत हैं, वे परसर्ग लगने के बाद या तो दीर्घ स्वरान्त हो जाते हैं, या अकारान्त रूप एकारान्त हो जाते हैं।

जैसे-

मूल प्रातिपदिक	परसर्ग - क	निर्मित रूप
भालु-	"	भालू क (गोड़ जाति)
गाइ-	"	गाई क दूध
घर-	"	घरे क लइका
सांप-	"	सांपे क बच्चा

वे प्रातिपदिक जो मूलरूप में अकारान्त हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।
जैसे-

मूलरूप	परसर्ग - क	व्युत्पन्न रूप
घोड़ा		घोड़ा क सरिआ

पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग मूल एकवचन	मूल बहुवचन	विकारी एकबचन	विकारी बहुबचन
-आ	-आ	-आ	-अन्

इस वर्ग के अन्तर्गत उन प्रातिपदिकों को स्वीकार किया जा सकता है जो उल्लिखित विभक्तियों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे- बरथा, फरसा आदि।

पुल्लिंग			
मूल एकवचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुवचन
०	०	-ए	-एन

इस वर्ग के अन्तर्गत वे प्रातिपदिक हैं जिनके अन्त में व्यंजनसंयोग प्राप्त हैं तथा जो विकारी रूप में ही परिवर्तन लेते हैं। जैसे- गिद्ध

पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग			
मूल एकबचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुबचन
-ई	-ई	-ई	-अन्

इस वर्ग के अन्तर्गत ईकारान्त पुल्लिंग रूप आते है। जैसे- धोवी।

पुल्लिंग एवं स्त्रीलिग			
मूल एकवचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुबचन
-ऊ	-ऊ	-ऊ	-ऊन

इस वर्ग के अन्तर्गत वे प्रातिपदिक हैं, जो ऊकारान्त हैं। जैसे - नाऊ, बाबू, साधू। उल्लिखित विभक्तियां मूल प्रातिपदिकों के साथ जुड़कर पदों का निर्माण करती हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि परसर्ग सदैव पदों के बाद ही जुड़ते हैं, जबकि विभक्तियां प्रातिपदिकों के साथ जुड़कर पद का निर्माण करती हैं। पीछे जिन परसर्गो का उल्लेख हुआ है, उनका प्रयोग आदिवासी पदों के साथ करके भाषिक संरचना पूरी करता है।

अध्याय 5

सर्वनाम

सर्वनाम संज्ञाओं के प्रतिनिधि होते हैं तथा इनका व्यवहार संज्ञा के स्थान पर ही हुआ करता है। सर्वनामों का पद रूप विभक्ति प्रक्रिया से ही बनता है। पूरे परिक्षेत्र में सर्वनामों में दो ही रूप प्राप्त हैं- पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग। इसी तरह वचन को ध्यान में रखते हुये भी या तो एकवचन रूप प्रचलित हैं या बहुवचन। संज्ञा की तरह सर्वनामों में भी वाक्य-स्तर पर लिंग-निर्णय की स्थिति मिलती है, लेकिन जनपद की धांगर जाति इसका अपवाद है। धांगरों की भाषा में सर्वनामों का लिंग निर्णय क्रिया के आधार पर नहीं होता। संस्कृत की तरह इस आदिवासी जाति के वक्ता भी सर्वनाम के मूल प्रयोग से ही लिंग निर्धारण करने में सक्षम हैं। दूसरे शब्दों में धांगरी के क्रिया-पदों का लिंग संस्कृत भाषा के सार्वनामिक प्रयोग की तरह स्वंय में ही निर्धारित होता है। रूप, अर्थ एवं प्रयोग को ध्यान में रखते हुए पूरे परिक्षेत्र में प्राप्त सर्वनामों के ६ भेद हैं-

१. पुरूषवाची
२. निश्चयवाची
३. संबंधवाची
४. प्रश्नवाची
५. अनिश्चयवाची
६. निजवाची

धांगरों की भाषा तथा उनमें प्रचलित सर्वनाम रूपः

5 1.1 पुरूषवाची सर्वनाम

(क) उत्तम पुरूष – मूल

	एकवचन	बहुवचन
	एन (मैं)	एम (हम)
विकारी	एंगा (मुझको)	एमगा (हमको)
	एनतुरू (मुझसे)	एमतुरू (हमसे)
	एंगहागे (मेरे लिये)	एमहागे (हमारे लिये)
	एंगहा (मेरा)	एमहा (हमारा)
	एंगागे (मुझमें)	एमागे (हममें)

विभक्ति प्रक्रिया

कर्ता	एकवचन	बहुवचन
	-न	-म

मूल सर्वनाम /ए/ (मैं) के बाद उल्लिखित विभक्तियों के संयोग से एकवचन एवं वहुवचन रूप निर्मित होते हैं, लेकिन कर्त्ता-कारक के अतिरिक्त अन्य कारकों का प्रयोग करते हुये धांगर आदिवासी /ए/ मूल रूप के वाद /ग/ रूप जोड़कर ही उसके वाद विभक्तियां प्रयुक्त करने का अभ्यूस्त है। इसी कारण /एंग/ अन्य कारकों में स्पष्ट सुनाई पड़ता है। यह रूप केवल एकवचन के साथ है। वहुवचन में सर्वत्र इसके स्थान पर /म/ जोड़कर फिर विभक्ति लगाई जाती है।

(ख) मध्यम पुरूष - मूल रूप

एकवचन	बहुवचन
नी- न (तुम)	नी- म (तुम सव)

कारकीय संरचना में मध्यम पुरूप में भी उन्हीं विभक्तियों का प्रयोग होता है,जो उत्तम पुरूप में प्रचलित हैं।

(ग) अन्य पुरूष

धांगर जाति में अन्य पुरूष सर्वनाम का मूल रूप है /आ/, जिसके बाद /-स/ तथा /-द/ प्रत्यय प्रयुक्त होता है। /-स/ का प्रयोग पुल्लिंग के लिये होता है,जबकि /-द/ या तो स्त्रीवाची है या पशुओं के लिये प्रयुक्त होता है। बहुवचन-बोधक प्रत्यय अन्य-पुरूष में उत्तम-पुरूष तथा मध्यम-पुरूष की तरह नहीं हैं। इनके स्थान पर /-र/ प्रत्यय का व्यवहार होता है। जैसे-

अन्य पुरूष	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	आ - स (वह)	आ- र (वे)
स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
	आ- द (वह)	आ -र (वे)

अन्य-पुरूष में भी अन्य कारकों में उन्हीं विभक्तियों का प्रयोग होता है,जो उत्तम पुरूष तथा मध्यम पुरूष में प्रचलित हैं।

पुरूषवाची सर्वनाम तालिका

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	ए-	ए-
मध्यम पुरूष	नी-	नी-
अन्य पुरूष	आ-	आ-

सर्वनाम, बचन बोधक विभक्ति

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	-न	-म
मध्यम पुरूष	-न	-म
अन्य पुरूष	-स	-र

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	एन	एम
मध्यम पुरूष	नीन	नीम
अन्य पुरूष (पु.)	आस	आर
(स्त्री.)	आद	आर

5.1 2 **निश्चयवाची सर्वनाम**

प्राप्त संदर्भों के अनुसार अपने गठनात्मक संदर्भ में निश्चयवाची सर्वनाम में उन्हीं रूपों का व्यवहार होता है जो पुरूषवाची अन्य पुरूष में प्राप्त हैं। इन्हें दो वर्गों में रखा जा सकता है-

क- निकटवर्ती तथा ख - दूरवर्ती

क: **निकटवर्ती**

(पुल्लिंग) एकवचन	बहुवचन
ईस (यह़)	ईर (ये)

इसमें /ई-/ सर्वनाम है तथा /-स/ व /-र/ वचन बोधक प्रत्यय है।

(स्त्रीलिंग) एकवचन	बहुवचन
ईद (यह)	ईर (ये)

ख: **दूरवर्ती**

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	आस (वह)	आर (वे)
(स्त्रीलिंग)	आद (वह)	आर (वे)

5.1.3 **संबंधवाची सर्वनाम**

एकवचन	बहुवचन
आसिन (जो)	आसिम (जो लोग)

5.1.4 प्रश्नवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
ने (कौन)	X
एन्दरा (क्या)	X

5.1.5 अनिश्चयवाची सर्वनाम

कः पुरूषवाची

एकवचन	बहुवचन
नेखंग	X

खः वस्तुवाची

तन्नी (कुछ)	X

5.1.6 निजवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
एड. (अपना)	X

उल्लिखित सर्वनामों में धांगर जाति के लोग उन्हीं विभक्ति तथा परसर्गो का व्यवहार करते हैं, जो पुरूषवाची सर्वनामों के साथ प्रयुक्त हैं।

5.2 जनपद की अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित सर्वनाम

धांगर के अतिरिक्त शेष जातियॉं भोजपुरी तथा बघेली रूपों का व्यवहार करती हैं। अधिकांश जातियॉं भोजपुरी भाषी क्षेत्र में रहती हैं। इस कारण इनके भाषिकरूप भोजपुरी और बघेली से मिले-जुले हैं। जहॉं तक रूप और अर्थ तथा प्रयोगों की पृष्ठभूमि में सर्वनामों की भिन्नता का प्रश्न है, इन आदिवासियों मे पुरूषवाची, निश्चयवाची, संबंधवाची, अनिश्चयवाची, प्रश्नवाची, निजवाची सर्वनाम प्रचलित है।

5.2.1 पुरूषवाची सर्वनाम

क : उत्तम पुरूष

इस क्षेत्र में हम एकवचन में प्रयुक्त है लेकिन खैरवार /म/, बसवार /मंय/, गोड़ व पठारी /महुं/ रूप का एकबचन पुरूषवार्चा रूप में प्रयोग करता है तथा उनमें /हम/ तथा /हमन्/ बहुबचन रूप में प्राप्त है।

एकवचन	बहुवचन	
हम	हमन् /हमहन्/हमरन्	
म /मा	हक्षन	(धरकार व खरवार जाति)
मंय	हमरे /हमरन्	(बसवार व धरकार जाति)

जहाँ तक पद निर्माण प्रक्रिया का प्रश्न है, इन इकाइयों में कर्ता कारक में कोई अलग विभक्ति नहीं जुड़ती, केवल शून्य विभक्ति लगने के कारण यह इकाई स्वयं में एक पद है, लेकिन अन्य कारकों में प्रयोग के समय मूल प्रातिपदिक /म/ या /मा/ में परिवर्तन प्राप्त है। हम के बाद केवल उन्हीं परसर्गों का व्यवहार होता है जो संज्ञा रूप में प्रचलित हैं। इस तरह उत्तम पुरूष में होने वाले परिवर्तन उल्लिखित हैं-

मूलकारक/विकारी कारक	मूल कारक/विकारी कारक
एकवचन	बहुवचन
हम	हमन्
हमा	हम
म / मो	X (गोंड़, धरकार जाति)
मंय / म्वा	X

ख : मध्यम पुरूष

इस परिक्षेत्र में मध्यम पुरुष सर्वनाम में आदरवाची और अनादरवाची दोनों ही रूप प्रचलित हैं। अर्थ की प्रक्रिया में विशिष्टजनों के लिये आप/रउरे, सामान्यजनों के लिये।तूं।तथा छोटे बच्चों, सामान्य लोगों अथवा स्त्रियों के लिये एकवचन में।तौंय।सर्वनाम का प्रयोग मूल रूप में प्राप्त है,जिसके बाद बहुबचन प्रत्यय जोड़कर सर्वनाम के रूप व्युत्पन्न होते हैं।

निरादरार्थ

एकवचन	बहुवचन	
तोंइ	तोहन/तोन्हन	
तंय	तुहरे	(खैरवार जाति)
तंय/तहूं	तुहरने	(बसवार, गोंड़ जाति)
तू	तू पचे	(गोंड़,पठारी,खैरवार-दुद्धी तहसील)

आदरार्थ

एकवचन	बहुवचन	
तूं	तूं लोग/तूं लोगन	
तूं	तू सभे	(दुद्धी तहसील के आदिवासी)
तं	तोहरे	(बसवार जाति)
तंय	तुहरे	(अन्य जातियां)
तंय	तइए	

मध्यम पुरूप में सार्वनामिक रचना-प्रक्रिया के अन्तर्गत जब भी परसर्गों का व्यवहार होता है, मूल रूप में नीचे अंकित रूपान्तर हो जाते हैं।

मूल कारक/विकारी कारक	मूल कारक/विकारी कारक	
एकवचन	बहुवचन	
तूं/तूं	तूं लोग/तूं लोग	
तोह/तोह	X	
X /तह	तुह	(खैरवार जाति)
X /त्वा	X	(बसवार जाति)

ग: अन्य पुरूष/निश्चयवाची

रूप की दृष्टि से पुरूषवाची अन्य-पुरूष तथा निश्चयवाची सर्वनामों के रूप एक जैसे हैं।

निकटवर्ती:

इस कोटि में /इ/ और /ए/, /न/ बहुवचनबोधक प्रत्यय जोड़कर प्रयुक्त हैं। /ई/ के स्थान पर /हइ/ रूप भी प्रचलित है जिसके बाद बहुवचन बोधक प्रत्यय /न/ जुड़ता है तथा मध्य में प्रयुक्त होने वाला /इ/ स्वर /ए/ हो जाता है।

एकवचन	बहुवचन
ई	एन/एन्हन
हई	हेन/हेनन/हेन्हन

दूरवर्ती:

निकटवर्ती रूपों की तरह स्त्रीवाची तथा निरादरार्थ एकवचन एवं बहुवचन रूप तथा पुरूषवाची आदरार्थ एवं बहुवचन रूप मिलते हैं।

एकवचन	बहुवचन	
ऊ	ओन्हनन/ओन्हन	
हऊ	होन्हन	
ऊ	उन्हन	(दुद्धी क्षेत्र)
ऊ	उनहने	(गोंड़, पठारी जाति)
ऊ	ओ	(बसवार जाति)
ऊ	होकने	(खैरवार, धरकार जाति)
वह	ओइये	(गोंड़, पठारी जाति)

5 2 2 संबंधवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
	जे	जेन
संपरिवर्तक रूप		
	जवन	जवनन

5.2 3 प्रश्नवाची सर्वनाम

जनपद में आदिवासी जातियां तथा यहां के सवर्ण मनुष्यों के लिये तथा वस्तुओं के लिये अलग-अलग रूपों का व्यवहार करतें है-

क- मनुष्यों के लिए

	एकवचन	बहुवचन
सामान्य प्रयोग	के	केन
अनादरार्थ	कवन	कवनन

ख- वस्तुओं के लिये

	एकवचन	बहुवचन
	का	X

विकारी रूप

	कवन	X
	कथू	X
	केथू/कथुआ	X

5.2.4 निजवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
आपन	आपनन
अपुना	अपनुन (दुद्धी तहसील)
अपुआ	अपुअइं (खैरवार, बसवार जाति)

दुद्धी में निवास करने वाला आदिवासी राउर और रउआ का भी प्रयोग करता है।

5.2.5 अनिश्यवाची सर्वनाम

अनिश्चयवाची सर्वनामों में वस्तुओं तथा मनुष्यों के लिये अलग-अलग सर्वनाम रूप प्रचलित हैं।

मनुष्यों के लिए

एकवचन	बहुवचन
केउ	कवनों/कौनों

वस्तु.. वाची

कुछ	X

तिर्यक संपरिवर्तक-

संपरिवर्तक क्षेत्र में बोले जाने वाले सर्वनामों के ऐसे रूप हैं, जो परसर्गों से प्रभावित होने के कारण रूप लेते है।

सर्वनाम पुरूषवाची

उत्तम पुरूष-	(हम)	तिर्यक रूप	परसर्ग	ए.व. व्युत्पन्न रूप
		हम-	-इ	हमइ
		हमा-	-र, -रे	हमार/हमरे
		हम-	-के	हमके
			-से	हमसे
	सर्वनाम-(म)	मो-	-र, -रे	मोर, मोरे
			-के	मौके
		त्वा-	-र, -रे	त्वार, त्वारे

मध्यम पुरूष

(तोई)	तो-	-र, -रे	तोर, तोरे
		-के	तोके
		-से	तोसे
		-पर	तोपर
(तू)	तोह-	-र,-रे	तोहरे
		-के	तोहके
		-से	तोहसे
	तुह-	-र, -रे	तुहरा, तुहरे
	त्वा-	-र	त्वार

अन्यपुरूष निश्चवाची

(ए)	ए-	-के	एके
		-से	एसे
		-कर	एकर
		-में	एमें
		-पर	एपर
दूरवर्ती-(ऊ)	ओ-	-के	ओके
		-से	ओसे
		-कर	ओकर
		-में	ओमे
		-पर	ओपर
संबंधवाची सर्वनाम(जे)	जे-	-के	जेके
		-से	जैसे
		-पर	जेपर
		-कर	जेकर
प्रश्नवाची सर्वनाम(के)	के-	-के	केसे
		-से	केसे
		-पर	केपर
		-में	केमे
		-कर	केकर
संगतिमूलक सर्वनाम(ते)	ते-	-ते	तेते
		-से	तेसे
		-के	तेके
		-पर	तेपर

व्युत्पन्न बहुबचन रूपों की प्राप्ति के लिये तिर्यक संपरिवर्तक के बाद बहुबचन बोधक पर प्रत्यय न संयुक्त करने के पश्चात् परसर्गो का प्रयोग करते हैं। इस तरह बहुबचन रूप में तिर्यक रूप + बहुबचन बोधक पर प्रत्यय + परसर्ग का क्रम रहता है। यथा -

	तिर्यक रूप	बहुवचन बोधक प्रव्यय	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
के	के-	-न	-से	केनसे
	के-		-कर	केकर

5.3 1 सार्वनामिक विशेषण (धांगर जाति में)

सर्वनाम के प्रचलित रूप जब विशेषणों के पूर्व प्रयुक्त होते हैं तो एक नई व्याकरणित कोटि निर्मित होती है। इसे सार्वनामिक विशेषण कहा गया है। सार्वनामिक पदग्रामों में प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाने की प्रवृत्ति लगभग सभी भाषाओं में है। इनसे या तो परिमाण का बोध होता है, अथवा किसी स्थिति या प्रणाली का।

(क)- परिमाण बोधक

जनपद में निवास करने वाली धांगर जाति निम्नाकिंत सार्वनामिक विशेषणों का व्यवहार करती है-

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण	
ई	ईबग्गे	(इतना)
आ	आबग्गे/उबग्गे	(उतना)
का	काबग्गे	(जितना)

(ख)- प्रणाली बोधक

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण	
ए	एन्ने	(ऐसा)
अ/आ	अन्ने	(वैसा)
क	कन्ने	(कैसा)

5.3.2 सर्वनामिक विशेषण तथा अन्य आदिवासी जातियां:

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां जो बघेली तथा भोजपुरी रूप बोलती हैं उनमें सार्वनामिक विशेषणों के वही रूप प्राप्त है जो अन्य सवर्णों में प्राप्त है। इनमें भी या तो परिणाम बताने वाले या किसी प्रणाली का ज्ञान कराने वाले विशेषण रूप सर्वनामों के सहयोग से बनते है।

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
इ	अइसन
	असस (दुद्धी में)
ऊ	ओइसन
	ओरास (दुद्धी में)

जे	जइसन
	जस (दुद्धी में)
ते	तइसन
	तस (दुद्धी में)

परिमाण बोधक

इ	एतना
ऊ	ओतना/तेतना
जे	जेतना
के	केतना

....

अध्याय 6

विशेषण

विशेषण रूप तालिका संज्ञा तथा सर्वनामो के पूर्व प्रयुक्त होकर उसकी अर्थ-प्रक्रिया को प्रतिवधित करती है। जहाँ तक जनपद में रहने वाले आदिवासियों में प्रयुक्त विशेषणों का संबंध है, धांगर जाति में विशेषण अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होता है, जवकि धांगर से भिन्न जनपद के आदिवासी, जो भोजुपरी से प्रभावित हैं, अथवा भोजपुरी भाषा का ही जनपद का उत्तरी या दक्षिणी रूप व्यवहृत करते हैं, संज्ञा की तरह विशेषणों का व्यवहार भी लघु एवं दीर्घ रूप में करते हैं।

जैसे- बड़ लइका।
बड़का लइका।

गुरू रूप वनाते समय व्यंजनांत विशेषण में - अका प्रत्यय जोड़कर दीर्घ रूप वनता है।

जैसे- विशेषण	-अका	प्राप्तरूप
बड़्-		बड़का
छोट् -		छोटका

विशेषणों के संपरिर्तक रूप भी प्राप्त हैं, जिनका प्रयोग अर्थ स्तर पर सुविधानुसार होता है।

जैसे- उज्जर/उजरे (उजला)
उज्जर कपड़ा
उजरे कपड़ा

6.1 सार्वनामिक विशेषण

पुरूषवाची सर्वनाम एवं निजवाची सर्वनामों के अतिरिक्त शेष सर्वनाम संज्ञा पदों के पूर्व आकर सार्वनामिक विशेषण बनाते हैं।

6.2 गुणवाची विशेषण

क- धांगर जाति

गुण सूचक -

माख - (बुरा), कत्था- (अच्छा)

रंगसूचक-

खेंसो- (लाल), पनेरा- (सफेद), अन्य रंगों के लिये शंब्द प्राप्त नहीं

स्थान सूचक-

गहुंठी (गहरा), पतील (पतला), टेढ़गा (टेढ़ा)
जुक्का -(तिरछा), इपा- (नीचा)

दशा सूचक-

पतील (पतला), खैका- (सूखा), हेलहेल- (गीला)

खः अन्य आदिवासी जातियों में

गुणबोधक-

नीक, नेवर, सोझ, टेढ, बांगुर

रंगबोधक--

लाल, पीअर, हरिअर, उज्जर, करिआ

स्थानबोधक-

लम्मा, चाकर, ऊंच, खाल, गहीर, सांकर, टेढ़

आकार बोधक-

गोल्लर, चाकर, खोखर

दशा बोधक-

दुवर, पातर, मोट, गाढ, गील, मोटोल, हेलहेल, हिली

6.3 संख्यावाची विशेषण

जहाँ तक इस श्रेणी के विशेषणों का प्रश्न है, धांगर जाति के लोग ६ से अधिक संख्याओं का प्रयोग नहीं करते। 1 १६६६ में स्वीकृत इस प्रबन्ध की स्थापनाओं में कोई परिवर्तन नहीं आया है, लेकिन आज की तिथि में शिक्षित धांगर समीपवर्ती भाषा भोजपुरी या बघेली के प्रभाव से भोजपुरी में प्रचलित संख्यावाची का प्रयोग करने लगता है। यह एक सांस्कृतिक संक्रमण है जो अनुकरण के कारण जातियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति बनता है। धांगरों में जब अपनी भाषा की ६ से अधिक संख्यायें है ही नहीं तो उनमें सौ, हजार जैसी संख्याओं की कल्पना भी नहीं हो सकती। अपूर्णाक बोधकों में केवल चतुर्थाश बोधक के लिए शब्द है। इन्हें पूर्णांक बोधक के साथ जोड़कर नया शब्द बनाने की प्रवृत्ति इस जाति में नहीं है।

क. पूर्णांक बोधक (धांगर जाति में)

१.	ओन्टा	(एक)
२.	एंण / एंटाड़्	(दो)
३.	मूंन / मून्टाड़्	(तीन)
४.	नांख	(चार)
५.	पंचे	(पांच)
६.	सुइये	(छः)

ख. पूर्णांक बोधक (अन्य आदिवासी जातियों में)

अन्य आदिवासी जातियों मे १०० तक संख्यायें प्राप्त हैं। सोन के उत्तरी भाग में जिन विशेषणों के अन्त में /र/ है, वह संवृत रूप में स्वरान्त उच्चरित होता है। यही संख्यायें सोननदी के दक्षिण थोड़े भिन्न उच्चारण के साथ बोली जाती हैं। /र/ के बाद /ह/ उच्चरित करने की प्रवृत्ति सोनपारी भोजपुरी और बघेली में है।

---

1 मिर्जापुर के आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- प्रस्तोता डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 120, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्वीकृत शोध प्रबन्ध

जैसे-

इगार'	ग्यारह	इगारह
वार'	बारह	बारह
तेर'	तेरह	तेरह

१. एक
२. दूइ
३. तीनि, तीन
४. चारि, चार
५. पांच
६. छ
७. सात
८. आठ
९. नउ
१०. दस
११. इग्यारह, इग्यार'
१२. वारह, वार'
१३. तेरह, तेर'
१४. चउद'
१५. पनर'
१६. सोर'
१७. सतर'
१८. अठार'
१९. ओनइस
२०. बीस
२१. एकइस
२२. बाइस
२३. तेइस
२४. चउबिस
२५. पचीस
२६. छब्बीस
२७. सत्ताइस
२८. अठ्ठाइस
२९. ओनतिस
३९. तीस

३१. इकतीस
३२. वत्तीस
३३. तैतीस
३४. चँउतिस
३५. पैंतीस
३६. छत्तिस
३७. सैतिस
३८. अड़तिस
३९. ओनतालिस, उनतालिस
४०. चालिस
४१. एकतालिस
४२. बयालिस
४३. तैंतालिस
४४. चउवालिस
४५. पैंतालिस
४६. छियालिस
४७. सैंतालिस
४८. अँड़तालिस
४९. उनचास, ओनचास
५०. पचास
५१. एक्कावन
५२. बावन
५३. तिरपन
५४. चउवन
५५. पचपन
५६. छप्पन
५७. सत्तावन
५८. अठ्ठावन
५९. उनसठ
६०. साठि

६१. इकसाठि
६२. वासठि
६३. तिरसठि
६४. चौंसठि, चउसठि
६५. पैसठ़ि
६६. छाछठि
६७. सड़सठि
६८. अड़सठि
६९. ओनहत्तरि
७०. सत्तरि
७१. एकहतरि
७२. बहत्तरि
७३ तिहत्तरि
७४. चउहत्तरि
७५. पचहत्तरि
७६. छिहत्तरि
७७. सतहत्तरि
७८. अठहत्तरि
७९. ओन्यासी
८०. अस्सी
८१. एक्यासी
८२. बयासी
८३. तिरासी
८४. चौरासी
८५. पचासी
८६. छियासी
८७. सतासी
८८. अठ्ासी
८९. नवासी
९०. नब्बे
९१. एकानबे
९२. बनावे
९३. तिरानबे
९४. चौरानबे
९५. पंचानबे
९६. छानबे
९७. सतानवे
९८. अट्ठानवे
९९. निन्नयावे
१००. सउ

अपूर्णांक बोधक

अपूर्ण संख्यावाचियों में धांगर जाति केवल दो संख्यायें प्रयोग में लाती है

ओनकोचा-	आधा (½)
ओनटूका	चतुर्थांश (¼)

अन्य जातियों में खड़ी बोली के प्रचलित सारे रूप प्राप्त हैं।

पाउ	¼
आध या आधा	½
पवन	¾
सवाई	1¼
डेढ़	1½
अढ़ाई	2½
साढ़े तीन	3½

पूर्णांक बोधक विशेषणों से प्रत्यय संयोग द्वारा क्रमवाची रूप बनते हैं।

धागर जाति	अन्य जाति	खड़ी बोली रूप
ओन्टा	पहिल	पहला
एंण / एंटाड़	दूसर	दूसरा
मून / मून्टाड़	तीसर	तीसरा
नांखवा	चउथ	चौथा
पन्चे	पांचउ	पांचवा
सुइये	छठउ	छठवां
X	सातऊं	सातवा

चूंकि धांगरों में संख्यायें ६ तक हैं इसलिये क्रमबोधक इससे आगे नहीं है। जबकि अन्य जातियों में- सर, व, ऊं, वॉं, प्रत्ययों का व्यवहार संपरिवर्तक रूप में निर्मित होते हैं।

जैसे-

दूसर
पाचउ
सतवां

इसी क्रम में प्रत्यय की भिन्नता द्वारा तिथियों के निर्माण की प्रवृत्ति की देखी जा सकती है। धांगरों में तिथि के लिये अलग से कोई शब्द नहीं है। वे इसके लिये भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित रूपों का ही व्यवहार करते हैं। इससे यह अनुमान हो सकता है कि प्रारम्भ में इस जाति में तिथियों की कोई संकल्पना नहीं थी। भोजपुरी भाषी लोगों की तरह इस जनपद की सारी आदिवासी जाति संस्कृत में

प्रचलित तद्भव रूपों का प्रयोग करती हैं।

एक्कम
दूइजि
तीजि
चउथि
पंचिमी
छट्ठि
सत्तिमी
अस्टिमी
नउमी
दसिमी
एकादसी
दुआसि
तेरसि
चतुरदसी
पुनवासी

गुणात्मक संख्यावाची

विशेषणों के ये रूप पूर्णांक संख्यावाची विशेषणों के आगे गुन- गुना प्रत्यय जोड़कर बनता है। कहीं /-न/ प्रत्यय जोड़कर भी आदिवासी काम चलाते हैं।

जैसे-

विशेषण	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
दूइ	-न	दून
	-गुन	दूगुन

धांगर जाति अपनी मूल संख्या में गुना जोड़कर रूप निर्मित करती है।

जैसे	एण गुना	दो गुना
	नाख गुना	चौगुना

अन्य जातियों में प्रचलित रूप उल्लिखित प्रत्ययों द्वारा ही बनते हैं।

विशेषण	प्रत्यय	व्यत्पन्न रूप
	-न /-गुन/-गुना	
दूइ		दून, दूगुन, दूगुना
तीनि		तीगुन, तिगुना
चारि		चउगुन, चउगुना

आवृत्ति अथवा किसी वस्तु की परत व्यक्त करने के लिये धांगरों में कोई शब्दावली नहीं हैं। वे गुना प्रत्यय जोड़कर ही काम चलाते हैं, लेकिन सोन के उत्तर रहने वाले आदिवासी पूर्ण संख्यावाची के बाद /हर/ प्रत्यय जोड़कर रूप गढ़ते हैं। /हर/ के स्थान पर /सर/ प्रत्यय भी जुड़ता है।

विशेषण	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
एक	हर, /हरा/	एकहर /एकहरा/
दूइ		दोहर /दोहरा/
तीन		तेहर /तेहर/

यहीं /ढे/ और /गो/ निपात की तरह प्रयुक्त हैं जो संख्यावाचियों के बाद जुड़ते हैं। सोननदी के उत्तर /ठे/ तथा दक्षिण में /गो/ रूप प्रचलित है।

जैसे-

एक ठे।

एक गो।

/गो/ प्रत्यय जुड़ने के बाद संख्यावाची की अघोष ध्वनि सघोष हो जाी है।

जैसे- एग्गो

6.4 परिमाणवाची विशेषण

मूल सर्वनाम में /तन्/ प्रत्यय जोड़कर परिमाणवाची विशेषण के निर्माण की प्रक्रिया प्रचलित है।

जैसे-

सर्वनाम	प्रत्यय	व्यत्पन्न रूप
ई	तन्	एतना
उ्		ओतना

धांगर /बग्गे/ रूप जोड़कर इस रूप का गठन करते हैं।

सर्वनाम	निर्मित रूप
ई	ईबग्गे
ऊ	ऊबग्गे

6.5 क्रमवाची विशेषण

पूर्णांक संख्यावाची विशेषण में क्रम-बोधक प्रत्यय /ल/, /सर/ जोड़कर आदिवासियों में रूप प्रचलित हैं।

		प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जैसे-	एक	-ल	पहिल
	दूई	-सर	दूसर
	तीन	-सर	तीसर

यहाँ ध्यान देने की बात है कि पर प्रत्यय लगने के कारण पूर्णांक बोधक इकाई का अंतिम स्वर या व्यंजन लुप्त हो जाता है।

6 6 **अनिश्चित संख्यावाची विशेषण**

यह विशेषण उन रूपों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें संख्या की कोई निश्चितता नहीं होती तथा इसके द्वारा अधिकांशतया मात्रा का ही बोध होता है। धांगर जाति जो अपनी विशिष्ट रचना-प्रक्रिया के लिये संपूर्ण पूर्वाचंल में एक चुनौती है, उसमें भी ये विशेषण उपलब्ध हैं।

जैसे-

धांगर जाति	अन्य आदिवासी	हिन्दी अर्थ
अउर	अउर	और
होरमर	सब	सब
होरमर	कूलि/कुल्ली	कुल
बग्गे	ढेरई	ज्यादा
तन्नी	कम	कम
	तन्निक	थोड़ा
	घुच्चिक	अतिशय कम

....

अध्याय 7

क्रिया

7.1 सहायक क्रिया

भारतीय भाषाओं की यह मूल प्रवृत्ति है कि उसमें कृदन्तों तथा सहायक क्रियाओं के योग से काल-रचना संभव होती है। जनपद में निवास करने वाले आदिवासी बहुसंख्यक रूप में /ह/, /रह/तथा /वा/ सहायक क्रियाओं द्वारा वाक्य-रचना पूरी करते हैं। जहॉं तक धांगर जाति का संबंध है, उनमें ये रूप प्रचलित नहीं हैं। धागरों में सहायक-क्रिया का केवल एक ही रूप है, वह है /रास/ जिसका प्रयोग उ० पु०, म० पु०, अ० पु० के एकवचन तथा बहुवचन में समान रूप से होता है। केवल इन रूपों के पूर्व प्रयुक्त होने वाली, संज्ञा अथवा सर्वनामों की स्थिति द्वारा ही इनका लिंग, वचन, कारक तंय होता है। /रास/ का प्रयोग, धांगर वर्तमान निश्चयार्थ /है/ के अर्थ में करते है।

जैसे-

क : वर्तमान निश्चयार्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन रास	एम रास
	(मैं हूँ)	(हम है)
म० पु०	नीन रास	नीम रास
	(तुम हो)	(तुम सब हो)
अ० पु०	आस रास	आर रास
	(वह है)	(वे हैं)

उल्लिखित प्रकरण में क्रिया रूप में कोई भिन्नता नहीं है।

क्रिया रूप और जनपद की अन्य आदिवासी जातियॉं

जनपद की अन्य आदिवासी जातियों में /ह, /रह, /बा धातुओं में प्रत्यय जोड़कर सहायक क्रियायें बनती हैं। /रह/ रूप का प्रयोग भूत निश्चयार्थ में /बा/ का वर्तमान निश्चयार्थ में प्रयोग में आता है। -ला प्रत्यय काल बोधक हैं, इसके स्थान पर अन्य संपरिवर्तक भी जनपद में प्रयुक्त होते हैं।

वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तम पुरूष

एकवचन	बहुवचन	
हई	हई	(सोन के उत्तर आदिवासियों में)
हिंय	हिंय	(सोन के दक्षिण आदिवासियों में)
ही	अहीं	(सोन के दक्षिण बसवार, खरवार)
हौं	हीं	(कोल तथा अन्य जातियों मे)

मध्यम पुरूष

मध्यम पुरूष स्त्रीलिंग निरादरार्थ एकवचन में मूलरूप के बाद -ए जोड़कर तथा आदरार्थ बहुबचन में -व प्रत्यय जोड़कर आदिवासियों के बीच में क्रिया रूप बनते हैं।

निरादरार्थ पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन	
	हव	हवं	(सोन के उत्तर में)
	होंरवं	होंरवन	(सोन के दक्षिण मे)

निरादरार्थ स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
	हये	हइउ

जहाँ तक /रह/ संपरिवर्तक के धातु-रूप का प्रश्न है, वह अलग इकाई बनाता है। इसके साथ अन्य पुरूष में जो रूप निर्मित होते हैं, उनके उदाहरण नीचे अंकित हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	ह	हवं - हंवइ
स्त्रीलिंग	ह	हईं

√बा धातु में उन्हीं प्रत्ययो को जोड़कर क्रिया-पद बनते हैं।

उत्तम पुरूष

पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन	
	बाई	बाईं	(सोन के उत्तर मे)
	बाटी, बाड़ी	बड़न	(सोन के दक्षिण में)
मध्यम पुरूष आदरार्थ			
	बायं	बायं	(सोन के उत्तर)
	बाड़/बड़ं	बाड़/बड़ं	(सोन के दक्षिण)
स्त्रीवाची निरादरार्थ			
	बाये	बाये	(सोन के उत्तर)
	बाड़ू/बड़ू	बाड़ू/बड़ू	(सोन के दक्षिण)
अन्य-पुरूष पुल्लिंग	बा	बाय	
स्त्रीलिंग	बाइ	बाईं	

√बा धातु के साथ प्रयुक्त विभक्तियों की तालिका

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु० पुल्लिंग	-ई -ड़ी	-ई -ड़ी
म० पु० पुल्लिंग	-य -ड़ं	-य -ड़ंन
अ० पु० पुल्लिंग	-०	-यं

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु० स्त्रीलिग	-ई	-ई
म० पु० स्त्रीलिग	-ए -डू	-ए -डू
अ० पु० स्त्रीलिग	-आ -बड़ी	-ई -बड़िन

खः भूत निश्चयार्थ
(धांगर जाति)

धांगर जाति भूत निश्चयार्थ क्रियाओं में √रह धातु का व्यवहार करती है। यह धातु इसी रूप में अन्य आदिवासियों तथा पूरे भोजपुरी क्षेत्र में भी प्रचलित है। केवल धांगर इसके साथ अपनी विभक्तियों अथवा प्रत्ययों का व्यवहार करते हैं। क्रिया-रूप को गढ़ने में भूत निश्चयार्थ के लिये √चक विभक्ति प्रयुक्त है, जिसके बाद जुड़ता है, बहुववन-बोधक प्रत्यय। इस तरह धातु के साथ काल बोधक एव वचन बोधक प्रत्ययों का अलग - अलग, लेकिन संश्लिष्ट व्यवहार करते हुये धांगर क्रियापद गढता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	रह - एचक- न	रह- एचक- म
	रहेचकन (मैं था)	रहेचकम (हम थे)
म० पु० (पु.)	रह- चक- य	रह-चक-य
	रहचकय (तुम थे)	रहचकय (तुम सब थे)

म० पु० (स्त्री.) रह- चक- ई रह-चक-ई
रहचकी (तुम थी) रहचकी (तुम सब थी)

अन्य पु० निश्चयार्थ में /चक/ विभक्ति में प्रयुक्त /क/ का लोप दिखाई पड़ता है।

अन्य पु (पु.)	रह- च- स	रह-च-र
	रहचस (वह था)	रहचर (वे थे)
(स्त्री.)	रह - च - आ	रह - च - आ
	रहचा (वह थी)	रहचा (वें थी)

(जनपद की अन्य जातियों में)

जनपद में निवास करने वाली अन्य जातियां √रह धातु के बाद क्रिया विभक्ति जोड़कर भूत निश्चयार्थ रूपों का निर्माण करती हैं। अलग - अलग जातियों में भिन्न प्रत्यय लगाकर रूपो के निर्माण की प्रवृत्ति इनमें पाई जाती है।

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-एचक् - न	-एचक - म
म० पु०	-चक् - य	-चक् - य
अन्य पु०	-च् - स	-च् - र

	एकवचन	बहुवचन
स्त्री० उ० पु०	-एचक् - न	-एचक - म
म० पु०	-चक् - ई	-चक् - ई
अन्य पु०	-च् - आ	-च् - आ

(अन्य आदिवासी जातियों में रूप)

अन्य पुरुष में प्रयुक्त विभक्तियां

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
	-ल	-नं
सोन से दक्षिण	-लन् -ौं	-लन् -ौं
व्युत्पन्न रूप	रहल् रहलन् हैं	रहनं रहलनं रहैं

अन्य पुरुष स्त्रीलिंग क्रिया विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
सोन से दक्षिण	-लि -लिन् -इल	-नी -लिन् -लिंन
व्युत्पन्न रूप अन्य पुरुष स्त्रीलिग	रहलि् रहलिन रहिल	रहनी रहलिन रहलिन

मध्यम पुरूष- पुल्लिंग विभक्तिया (सोन के दक्षिण) (गोड़, पठारी, अगरिया)		
	-अल्	-अन
	-अल्	-अलॅ
	-औ	-आ

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	रहल	रहन
	रहल	रहलें
	रहै	रहें

मध्यम पुरूष स्त्रीलिंग (विभक्ति) सोन के दक्षिण	एकवचन	बहुवचन
	-अले	-अले
	-लिउ	-लिउ
	-अल्	-अल

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	रहले	रहले
	रहलिउ	रहलिउ
	रहलू	रहलू

उत्तम पुरूष (पुल्लिंग) विभक्तियां (सोन केदक्षिण)		
	-ली	-ली
	-ली	-ली
	-हैं/	-ऐ, औ

व्युत्पन्न रूप

एकवचन	बहुवचन
रहली	रहली
रहली	रहली
रहौ, रहैं	रहौं

ग: वर्तमान संभावनार्थ (धांगर जाति)

धांगर जाति में संभावनार्थ रूपों का गठन करते हुए क्रिया में प्रारम्भ में /मं-/ का आदेश करने की प्रवृत्ति है।/चकी/रूप भूतनिश्चयार्थ की तरह बना रहता है, तथा अन्त में वचनबोधक विभक्ति जुड़ती है।

विभक्ति

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मं- चक- न	मं-चक - म
म० पु०	मं-चक - म	मं-चक- य
अन्य पु० पु.	मं-च- स	मं-च - र
स्त्री.	मं- च-आ	मं-च-आ

व्युत्पन्न रूप

	एकबचन	बहुबचन
उत्तम पु०	मंवकन (मैं होता) मंचकय (तुम होते) मंचस (वह होता) मंचा (वह होती)	मंचकन (हम होतें) मंचकय (तुम सब होते) मंचस (वे होते) मंचा (वे होर्ता)

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां

/ह धातु के वाद अंकित विभक्तियों का संयोग कर जनपद में निवास करने वाली खेरवार, वसवार आदि जातियां पदों का निर्माण करती हैं।

संभावनार्थ विभक्तियां		एकवचन	बहुवचन
	अ० पु०	-ओइ	-ओइहं/ओइ
	म० पु०	-ओया	-ओया
	उ० पु०	-ओई	-ओई

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	होइ	होंइ
	होया	होया
	होई	होई

घः भूत संभावनार्थ - धांगर जाति

जनपद में निवास करने वाली धांगर जाति संभावनार्थ रूप का प्रयोग तो करती है, लेकिन धातु रूप पूर्णतः भिन्न हैं। /राना/ धातु शून्य विभक्ति के साथ तीनों पुरूषों तथा दोनों ही वचनों में प्रयुक्त है।

धांगर जाति में प्रचलित रूप	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	(एन) राना (मैं होता)	(एम) राना (हम होतें)
मध्यम पुरूष	(नीन) राना (तुम होते)	(नीम) राना (तुम सब होते)
अन्य पुरूष	(आस) राना (वह होता)	(आर) राना (वे होते)
	(आद) राना (वह होती)	(आर) राना (वे होतीं)

अन्य आदिवासी जातियां

अन्य आदिवासी जातियां √ह धातु के वाद विभक्तियों का व्यवहार करती है। क्षेत्र तथा जाति की भिन्नता के कारण विभक्तियां भी भिन्न हैं। इस कारण व्युत्पन्न रूप भी अलग - अलग हैं।

भूत संभावनार्थ

विभक्तियां (पुल्लिंग)	अन्य पुरूष	एकवचन	बहुवचन
	(सोन के उत्तर)	-ओत्	-ओतं
	(सोन के दक्षिण)	-ओइतन	-ओइतन
	(बसवार जाति)	-ओत्यं	-ओत्यं
	(कोल,गोंड़,खैरवार)	-ओत्यू	-ओत्युन
		-ओत्	-ओतें

व्युत्पन्न रूप	(वह होता)	एकवचन	(वे होते) बहुवचन
		होत	होतं
		होइतंन	होइतन
		होत्यं	होत्यं
		होत्यू	होत्यू
		होत्	होतें

अन्य पुरूष (स्त्रीलिंग)

विभक्तियां		एकवचन	बहुवचन
	(सोन के उत्तर)	-ओंति	-ओतीं
	(सोन के दक्षिण)	-ओत्	-ओतिन
	(बसवार जाति)	-ओत्यू	-ओत्यू
	(कोल,गोंड़,खैरवार)	-ओही	-ओहीं

व्युत्पन्न रूप	(वह होती)	होति (वे होती)	होतीं
		होत्	होतिन
		होत्यू	होत्यू
		होत्	होहीं
मध्यम पुरूष (पुल्लिग)			
	(सोन से उत्तर)	-ओंत	-ओतं
	(सोन दक्षिण)	-ओइत	-ओइत
	(बसवार जाति)	-ओत्यं	-ओत्यं
	(भूइयांर)	-अस्	-अवा
	(खैरवार,कोल,गोड़,पठारी)	-आ	-वा
	व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुबचन
	पुल्लिंग	होत	होतं
	सोन से दक्षिण	होइत	होइतं
		होत्यं	होत्यं
		हस	हवा
		हा	हा
	मध्यम पुरूष (स्त्रीलिंग)	ओति	ओतीं
	विभक्तियां		
	(सोन से दक्षिण)	-ओइती	-ओइतिन
	(खैरवार)	-ओत्यूं	-ओत्यूं
	(खैरवार, गोंड़)	-अस	-अस
व्युत्पन्न रूप		होति	होतीं
		होइती	होइती
		होत्यू	होत्यू
		हस्	हस

चः भविष्य निश्चयार्थ

विभक्तियां

अन्य पुरूष		
(सोन के उत्तर)	ओई	ओइहन
(खरवार, बसवार)	ओहीं	ओहीं
(गोंड़)	ओई	ओइहीं

व्युत्पन्न रूप		होइ	होइह
		होई	होइहन
		होहीं	होहीं
		होई	होइहीं
मध्यम पुरूष	(सोन के उत्तर)	होब्या	होब्या
पुल्लिंग	(सोन के दक्षिण)	होइब्	होइव
		होबे	होब्या
स्त्रीलिंग	(सोन के उत्तर)	होवे	होब्या
	(सोन के दक्षिण)	होइब	होइब्
	(बसवार, गोंड़)	होबी	सेवी
उत्तम पुरूष		होव	होव
		होइब	होइब
	(खैरवार, बसवार)	हों	हों

जहाँ तक भविष्य निश्चयार्थ का प्रश्न है √ह/ धातु में /ओब/ प्रत्यय जोड़कर सारे रूप बनते हैं।

7.2 क्रिया रचना

क- क्रिया रचना की व्याकरणिक स्थिति और धांगर जाति

यद्यपि धांगर जाति की भाषा आर्य भाषाओं से मेल नहीं खाती, फिर भी उसकी क्रिया रचना के रूप संस्कृत की तरह योगात्मक हैं, तथा कृदन्तीय रूपों का अभाव सा दिखाई पड़ता हैं। धांगर संस्कृत के निकट धातुओं का प्रयोग करते हैं। जैसे - बोलने के लिये/वाचक/ लजाने के लिये /लजेरदरा/ आदि। ये प्रत्यय, जो पुरूष अथवा वचन का बोध करने के लिये संज्ञा तथा सर्वनामों में प्रयुक्त हैं, उन्हीं का व्यवहार धातुओं के बाद करके धांगर क्रिया - पदों का गठन करते हैं।

7.2 क-1

वर्तमान कालिक क्रिया रचना

धांगर जाति √मोक्ख (खाना), √एरास (तोड़ना), √बाद (कहना, √बचरे (आना), √तुदा (उड़ेलना), √बिता (भूनना), √लुरिया (लपेटना), √चइया (भीगना), √चाखा (बोना), √चींच (पोछना), जैसी धातुओं के बाद प्रत्ययों से काल रचना करती है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	आस बादस (वह बोलता है)	आर बादर (वे बोलते हैं)
म० पु०	नीन बाचकय (तुम बोलते हो)	नीम बाचकय (तुम सब बोलते हो)
उ० पु०	एन बाचकन (मैं बोलता हूँ)	एम बाचकम (हम बोलते हैं)

इस तरह यह स्पष्ट है कि √-बाच धातु के बाद अन्य-पुरूष एकवचन में /-स/ तथा बहुवचन में /-र/ विभक्ति प्रयुक्त होती है। मध्यम पुरूष में /-कय/ विभक्ति का व्यवहार एकवचन तथा बहुवचन दोनों में होता है। अन्य पु० एकवचन में /-न/ तथा बहुवचन में /-म/ विभक्ति का प्रयोग करके वर्तमान-कालिक रूप बनते हैं। इस आदिवासी जाति के लोग प्रत्येक धातु में वर्तमान-कालिक क्रिया-रचना में इन्हीं विभक्तियों का प्रयोग करते हैं, तथा पद निर्मित होते हैं।

7 2 क-**2**

भूत-कालिक क्रिया-रचना

भूतकाल में धातुएं ज्यों की त्यों हैं तथा पुरूप एवं वचन बोधक प्रत्यय भी समान हैं। केवल /एरा/ शब्द का प्रयोग धातु के पहले होता हैं। /एरा/ था के अर्थ में है। शेष रूप वर्तमान कालिक क्रियाओं की तरह हैं। जिनसे पुरूष एवं वचन का परिचय मिलता है। जहाँ तक स्त्रीलिंग रूपों का प्रश्न है, उनके लिये सर्वनाम भी अलग हैं, साथ ही क्रिया विभक्तियाँ भी भिन्न हैं। भूतकालिक क्रिया-रचना में कुछ धातुओं के पहले /-क/ विभक्ति जोड़ने की भी प्रवृत्ति है।

जैसे-

वह बोलता है।	आस बाचस।
वह बोलता था।	आस एरा बाचकस।

√वाच धातु. में जुड़ने वाला /-स/ प्रत्यय पुरूष एवं लिंग बताता है, जबकि /-क/ उसे भूतकालिक रूप देता है।

भूतकाल	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	आस एरा ओंदस (वह पीता था)	आर एरा ओंदर (वे पीते थे)
मध्यम पु०	नीन एरा ओंदकय (तुम पीते थे)	नीम एरा ओंदकय (तुम सब पीते थे)
उ० पु०	एन एरा ओंदकन (मैं पीता था)	एम एरा ओंदकम (हम पीते थे)

7 2 क-**3**

भविष्य काल

धांगर जाति में धातुओं की लंबी संख्या है। जैसे -

✓चूतद	(सोना)	✓लागि	(देखना)
✓मोक्खद	(खाना)	✓केरका	(जाना)
✓एसद	(तोड़ना)	✓रहच	(रहना)
✓नाद	(कहना)	✓चाख	(बोना)
✓बचरे	(आना)	✓ओंद	(पीना)
✓चोंच	(उठना)	✓बाच	(बोलना)
✓चींख	(रोना)	✓चइया	(भींगना)
✓मोक्ख	(खाना)	✓बिता	(भूनना)
✓लजेर	(लजाना)	✓तुंदा	(उड़ेलना) आदि
✓लवा	(मारना)		

इन धातुओं के बाद /-ओ/ प्रत्यय जोड़कर भविष्यकाल बनता है। जहाँ तक पुरूष एवं वचन का संबंध है,उसके लिये काल बोधक प्रत्यय /-ओ/ के बाद उन्हीं प्रत्ययों का व्यवहार होता है, जो वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
	काल बोधक प्रत्यय/बचन बोधक प्रत्यय	काल बोधक प्रत्यय/बचन बोधक
उ० पु०	-ओ/न	-ओ/म
म० पु०	-ओ/कय	-ओ/कय
अन्य पु०	-ओ/स	-ओ/र

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	ओंदोन (खाऊंगा)	ओंदोम (खायेगें)
म० पु०	ओंदोकय (खाओगे)	ओंदोकय (खाओगे)
अन्य पु०	ओदोस (खायेगा)	ओंदोर (खायेगें)

7.2 ख-

जनपद के अन्य आदिवासी तथा उनकी क्रिया-रचना

आधुनिक भारतीय आर्यभापओं की ही भांति भोजपुरी तथा बघेली बोलने वाले धांगर से भिन्न आदिवासी क्रिया-रचना कृदन्तों का व्यवहार करते हुये क्रिया रूप बनाते हैं; तथा क्रिदन्तीय रूपों के बाद सहायक क्रिया/मूल क्रिया का व्यवहार करते हैं।

7.2 ख- 1

वर्तमान कालिक क्रिया

वर्तमान काल में क्रिया के बाद-अत् प्रत्यय जुड़ता है।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√कर्	-अत्	करत
√उठ	"	उठत
√बैठे	"	वैठत/वइठत
√जर्	"	जरत

7 2 ख- 2

भूतकालिक क्रिया-रचना

मूल धातु में /-अल/ प्रत्यय जोड़कर भूतकालिक कृदन्त वनते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√कर	-अल	करल
√उठ	"	उठल
√वैठ	"	वइठल
√जर	"	जरल

जहाँ तक स्त्रीवाची रूपों के निर्माण का प्रश्न है, व्युत्पन्न रूपों के बाद /इ/ प्रत्यय जोड़कर स्त्रीवाची रूप बनते हैं।

वर्तमान कालिक कृदन्त	करति
	जरति
भूतकालिक कृदन्त	करलि
	जरलि

7 2 ग-

क्रियार्थक संज्ञा

मूल धातु के बाद /-व/ प्रत्यय जोड़कर जनपद के आदिवासी क्रियार्थक संज्ञायें बनाते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√चल	-व	चलब
√उठ	"	उठव
√बैठ	"	बइठव
√जर	"	जरव

जहाँ तक स्त्रीवाची संज्ञाओं का प्रश्न है, व्युत्पन्न पुल्लिंग रूप के बाद /-ई/ प्रत्यय जोड़कर रूप बनते हैं।

जैसे-

धातु	व्युत्पन्न रूप
√रो	रोइवि
√जा	जाइबि

सोन के उत्तर के आदिवासी धातु रूप में -अन् प्रत्यय जोड़कर भी क्रियार्थक संज्ञायें बनाते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√रो	-अन	रोअन
√पीट	"	पीटन
√मांग	"	मांगन

7.3- क्रिया-रूपतालिका और काल-रचना

साधारण काल (अथवा मूलकाल)

काल-रचना की इस प्रक्रिया में क्रिया का केवल एक ही रूप प्रस्तुत होता है और वही समापिका क्रिया होती है। इस रूप का निर्माण धातुओं के बाद क्रिया विभक्तियां जोड़कर होता है। भाषा के जिन रूपों में क्रिदन्तों के प्रयोग के साथ क्रिया के रूप गठन की प्रवृत्ति विद्यमान रहती है, उनमें क्रिदन्तों के बाद सहायक क्रियायें आती हे, तथा विभक्तियों का प्रयोग सहायक क्रिया के बाद ही होता हैं। बोलियों में सामान्यतया सहायक क्रियायें ही समापिका क्रियायें होती हैं तथा मूल-काल का निर्माण इन्हीं द्वारा संभव हो पाता है।

सामान्य वर्तमान काल

धांगर जाति

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन रास (मैं हूं)	एम रास (हम हैं)
म० पु०	नीन रास (तुम हो)	नीम रास (तुम सब हो)
अन्य पु०	आस रास (वह है)	आर रास (वे सब हैं)

भूत सामान्य, भविष्य संभावनार्थ, भविष्य सामान्य एवं भविष्य विधेयार्थ में मूल-काल के रूप प्राप्त हैं तथा मूल धातु में विभक्तियों का संयोग करके उनके रूप निर्मित होते हैं। भूत सामान्य में नीचे अंकित विभक्तियां जुड़कर काल रचना करती हैं।

जैसे √रह धातु (था) के अर्थ में प्रयुक्त है। इसके लिये काल-रचना-प्रक्रिया में नीचे अंकित विभक्तियां प्रयुक्त होती है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-चकन	-चकम
म० पु०	-चकय	-चकय
अन्य पु०	-चस	-चर

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	रहचकन (मैं था)	रहचकम (हम थे)
म० पु०	रहचकय (तुम थे)	रहचकम (तुम लोग थे)
अन्य पु०	रहचस (वह था)	रचहर (वे थे)

भविष्य निश्चयार्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन मनोन (मैं हूगां)	एम मनोम (हम होगें)
म० पु०	नीन मनोय (तुम होगे)	नीम मनोय (तुम सब होगे)
अन्य पु०	आस मनोस (वह होगा)	आर मनोस (वे होगें)

भूत निश्चयार्थ

भूत निश्चयार्थ के रूप निर्माण में धांगर जाति धातु के बाद कालबोधक / / प्रत्यय प्रयुक्त करती है। जहाँ तक बचनबोधक अथवा पुरूषबोधक प्रत्ययों का प्रश्न है वे वहीं है जो अन्य कालों में प्रयुक्त होत हैं। जैसे- धातु काद (जाना) भोक्ख (खाना) अपने भूतकालिक अर्थ में /केर/ तथा /मंड/ आदेश के साथ प्रयुक्त होती है और इसके बाद वचन एवं पुरूषबोधक प्रत्यय जुड़कर रूप व्युत्पन्न होता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन केरकन (मैं गया)	एम केरकम (हम गये)
म० पु०	नीन केरकय (तुम गये)	नीम केरकय (तुम सब गये)
अन्य पु०	आस केरस (वह गया)	आर केरर (वे गये)

भूत संभावनार्थ

धांगर जाति में वर्तमान संभावनार्थ के लिये प्रत्येक पुरूष में केवल एक ही रूप प्रयुक्त है, वह है /राना/ जिसका अर्थ है/होता/। पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग दोनों में ही यह रूप समान रूप प्रयुक्त है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन राना (मैं होता)	एम राना (हम होते)
म० पु०	नीन राना (तुम होते)	नीम राना (तुम सव होते)
अन्य पु०	आस राना (वह होता)	आर राना (वे होते)

भविष्य निश्चायार्थ

धांगर जाति भविष्य निश्चयार्थ रूप का निर्माण धातु के बाद /-ओ/ प्रत्यय जोड़कर करती है। /-ओ/ कालवोधक प्रत्यय है। इस प्रत्यय के बाद लिंग एवं वचन बोधक प्रत्यय जुड़ते है तथा ये प्रत्यय वहीं हैं जो अन्य संदर्भो में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- धातु (मोक्ख) + कालवोधक प्रत्यय - ओ + वचन बोधक प्रत्यय - स

= निर्मित रूप मोक्खोस

वह खाता है आस मोक्खस

वह खायेगा आस मोक्खोस

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन मोक्खोन (मैं खाउंगा)	एम मोक्खोम (हम खायेगें)
म० पु०	नीन मोक्खोय (तुम खाओगें)	नीम मोक्खोय (तुम सव खाओगें)
अन्य पु०	आस मोक्खोस (वह खायेगा)	आर मोक्खोर (वे खायेगें)

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियों की भाषा में काल रचना-प्रक्रिया

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियां साधारणकाल या मूलकाल का रूप गठित करते हुए सहायक क्रियाओं का व्यवहार नहीं करतीं। सहायक क्रियायें यदि समापिका क्रिया की तरह प्रयुक्त दिखती हैं, तो इनका व्यवहार मूल काल में ही होता है।

जैसे-

वर्तमान सामान्य

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	हई	हई
म० पु०	हव	हव
अन्य पु०	है	हवें

वर्तमान निश्चयार्थ

वर्तमान निश्चयार्थ में केवल निपेध मूलक स्थिति में मूलकाल के रूप उपलब्ध हैं। इसके लिए नीचे अंकित विभक्तियां धातु के वाद प्रयुक्त होती हैं। यहाँ ध्यान देने की वात है कि धांगर जाति में पुरूप एवं बचन बोधक प्रत्यय धातुओं के बाद अलग-अलग, एक साथ प्रयुक्त होता है, जवकि अन्य जातियों मे धातु के बाद प्रयुक्त होने वाली विभक्ति में पुरूप एवं वचन बोधक स्थिति सुरक्षित है।

वर्तमान निश्चयार्थ में प्रयुक्त विभक्ति

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-इति	-इति
म० पु०	-तं	-तं
अन्य पु०	-इ/त्	-तं

स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-इति	-इति
म० पु०	-ते	-तिउ
अन्य पु०	-इ/ति्	-तीं

व्युत्पन्न रूप

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-खाइति	-खाइति
म० पु०	-खातं	-खात
अन्य पु०	-खाइ/खात्	-खात

स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-खाइति	-खाइति
म० पु०	-खाते	-खातिउ
अन्य पु०	-खाइ/खाति्	-खातीं

वर्तमान आज्ञार्थ

वर्तमान आज्ञार्थ रूपों का निर्माण करते समय सोन नदी के उत्तर तथा दक्षिण दोनों ही जगह निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियां पुरूष भेद के साथ प्रत्ययों का व्यवहार करती हैं।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-ईं	-ईं
म० पु०	-उ/अ	-अ
अन्य पु०	-उ	-उं

व्युत्पन्न रूप

उ० पु०	धातु	एकवचन	बहुवचन
	√उठ	उठीं	समान रूप से प्रयुक्त
	√चल	चलीं	"
	√खा	खाईं	"

मध्यम पुरूष- म० पु० में आदरार्थ एवं निरादरार्थ दोनों ही रूप प्रचलित हैं। इस कारण दो विभक्तियां संदर्भो के अनुरूप अलग - अलग प्रयुक्त होती हैं। निरादरार्थ रूपों में /उ/ और /आ/ दो विभक्तियाँ एकबचन में प्रचलित हैं।

धातु	एकवचन	बहुवचन
√चल	चलु	चलं
√खा	खो	खा
√सूत	सूतु	सूत
√जा	जो	जा

म० पु० में आदरार्थ प्रयोग में भिन्नता है। सोन के उत्तर तथा दक्षिण इस प्रयोग की भिन्नता के कारण ही क्रिया-रूप अलग हैं। जहाँ सोन के उत्तर ए० व० तथा बहुवचन दोनों में ही /ई/ विभक्ति प्रयुक्त होती है, वहीं सोन के दक्षिण /उ/ और /उन/ रूप धातु के बाद जुड़ कर क्रिया-रूप निष्पन्न होता है।

सोन के उत्तर

		व्युत्पन्न रूप	
आदरार्थ	म० पु० धातु	एकवचन	बहुवचन
	√चल	चली	समान रूप
	√खा	खाई	"
	√उठ	उठी	"
	√कर	करी	"

सोन के दक्षिण

एकवचन	बहुवचन
-उठूं	उठुनु
-चलूं	चलुनु
-करूं	करुनु
-खाउं	खाउ

अन्य पुरूष

अन्य पुरूष के रूप एकवचन में /उ/ तथा बहुवचन में /उ/ प्रत्यय बनते हैं।

एकवचन	बहुवचन
चलउ	चलउं
खाउं	खाउं
सुतुउ	सूतउं
करउ	करउं

भूत निश्चायार्थ

केन्द्रीय बोली में धातु के बाद /-ल/ जोड़ने की प्रवृत्ति भोजपुरी प्रभाव के कारण सामान्य है। काल-रचना प्रक्रिया में भूत निश्चयार्थ के लिये विभक्तियाँ /ल/ के बाद ही जुड़ती हैं।

जैसे-

(उ० पु०) धातु	एकवचन	बहुवचन
√खा	खइली	खइली
√चल	चलली	चलली

	एकवचन	बहुवचन
म० पु० (अनादरार्थ)	गइले	गयल
सोन के दक्षिण	गइल	गइल
आदरार्थ	गयल	गयनं
सोन के दक्षिण	गइल	गइनं

सोन के उत्तरी क्षेत्र में एकवचन में /एसि/ तथा बहुवचन में /एनि/ जोड़कर भी रूप वनते हैं। इन प्रत्ययों का व्यवहार सामान्यतया सकर्मक क्रियाओं के बाद ही होता है।

व्युत्पन्न रूप

खइलेस	खइलेन
पियलेस	पियलेन

सोन के दक्षिण क्षेत्र में जहाँ बघेली का प्रभाव है वहाँ /खाइस/ और /खायेसि/ रूप भी प्रचलित मिलता है।

भूत संभावनार्थ

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियाँ भूत संभावनार्थ रूपों का गठन वर्तमान-कालिक कृदन्त की तरह करती हैं। इसके लिये धातु में /-इति/ प्रत्यय का प्रयोग सोन के उत्तर तथा /-अति/ प्रत्यय का प्रयोग विभक्ति की तरह सोन के दक्षिण में आदिवासी करते हैं। सोन के उत्तर ए० व० तथा बहुवचन रूपों में अन्तर नहीं है। जवकि सोन के दक्षिण विभक्ति का अन्तिम स्वर

अनुनासिक रूप में उच्चरित होता है।

उ० पु०	एकवचन	बहुवचन
सोन के उत्तर	देखिति	देखिति
	खाइति	खाइति
सोन के दक्षिण	देखती	देखती
	खइती	खइती

म० पु० में चूंकि सर्वनामों में आदरार्थ एवं अनादरार्थ दोनों ही रूप प्रचलित हैं, इसलिये क्रिया-पदों के निप्पन्न रूप इन भिन्नताओं के कारण भी अलग मिलते हैं तथा सोन के उत्तरी क्षेत्र तथा दक्षिणी क्षेत्र में रूपगत भिन्नता विद्यमान है।

	एकवचन	बहुवचन
म० पु०		
सोन के उत्तर (अनादरार्थ)	देखते	देखते

(आदरार्थ)	देखत	देखत
सोन के दक्षिण	देखत	देखत

इन रूपों में सोन के दक्षिण स्त्रीवाची रूपो में भी भिन्नतायें हैं।

देखते	देखते

सोन के दक्षिण निवास करने वाले आदिवासियों में देखतें और देखत्ये रूप भी प्राप्त हैं।

अन्य पुरूष-

अन्य पु० के रूप भी सोन के उत्तर तथा दक्षिण अलग - अलग हैं।

	एकवचन	बहुवचन
सोन के उत्तर	देखत	देखत
सोन के दक्षिण	देखतिस	देखतिन
(स्त्रीवाची)	देखत	देखतिन

भविष्य निश्चयार्थ

भविष्य निश्चायार्थ रूपों का निर्माण सोन के उत्तर में धातु के बाद /-ब/ प्रत्यय जुड़कर तथा दक्षिण में /-इब/ प्रत्यय जोड़कर उत्तम पुरूष में होता है।

सोन के उत्तर

	धातु	एकवचन	बहुवचन
	√जा	जाब	जाब
	√खा	खाब	खाब
	√उठ	उठब	उठब
सोन के दक्षिण	√जा	जाइब	समान
	√खा	खाइब	"
	√उठ	उठिब	"

सोन के दक्षिण निवास करने वाले गोंड़ एकवचन और बहुवचन दोनों में ही /जाब्यउ/ रूप का प्रयोग करते हैं।

मध्यम पुरूष - सोन के उत्तरी अंचल में मध्यम पुरूष में अनादरार्थ तथा स्त्रीवाची संदर्भ के अन्तर्गत क्रिया रूप भिन्न हैं।

	एकवचन	बहुवचन
	जाबे	जाब्यिउ/जाब्या
सामान्य	जाब्या	जाब्या
सोन के दक्षिण	जावू	जावू

सोन के दक्षिण रहने वाले खैरवार, बसवार /जाबी/रूप का प्रयोग करते हैं, जबकि सुदूर दक्षिण /जइब/एवं /जइबं/ रूप क्रमशः एकवचन एवं बहुवचन में प्रयुक्त हैं

एकवचन	बहुवचन
जइब	जइबं

7.4 संयुक्त काल

संयुक्त काल में दो क्रियायें एक साथ आती हैं। सहायक क्रिया के पूर्व क्रिदन्तीय क्रियाओं का प्रयोग करके क्रिया¯रचना निष्पन्न करने की प्रवृत्ति आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में मिलती है। जिन सहायक क्रियाओं के पूर्व क्रिदन्तीय प्रयोग लगाने की प्रवृत्ति है, उनमें या तो वर्तमान-कालिक कृदन्त पहले प्रयुक्त होते हैं, या तो भूतकालिक कृदन्त।

संयुक्त काल तथा धांगर जाति की काल¯रचना प्रक्रिया:

यह विचारणीय है कि धांगर जाति की क्रिया¯रचना अभी प्राचीन भाषाओं जैसी है। इस कारण क्रिया विभक्तियां धातु से जुड़कर ही प्रयुक्त होती हैं, यानी आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह धातु के बाद काल व वचन बोधक विभक्ति के बीच युक्त संक्रमण है। आधुनिक आर्यभाषाओं की तरह मुक्त संक्रमण नहीं। इस कारण धांगर जाति वर्तमान¯कालिक अथवा भूतकालिक कृदन्तों के व्यवहार द्वारा क्रिया¯रचना नहीं करती।

संयुक्त काल तथा जनपद की अन्य आदिवासी जातियां:

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली धांगर जाति से भिन्न जातियां जैसे-बसवार, खरवार, गोंड़, पनिका तथा कोल जातियां जो धीरे-धीरे अपनी मूल भाषा भूल चुकी हैं, आर्य भाषाओं के प्रचलित रूप के अन्तर्गत भोजपुरी तथा बघेली क्रियाओं का व्यवहार करती हैं। इन जातियों में उच्चारणगत भिन्नतायें मिलती हैं, जबकि क्रियारूप वे हीं है जो सोन के दक्षिण व उत्तर आज व्यवहत हो रहे हैं। वर्तमान प्रयोगों में कृदन्तों का व्यवहार करते हुए क्रिया¯रचना की प्रवृत्ति इन आदिवासियों में जनपद में अन्य सवर्ण जातियां की ही तरह विकसित हो गई है। वर्तमान काल में /बा/, /ह/ सहायक क्रियाओं के पूर्व तथा भूतकाल में ✓रह धातु के बाद /-ल/ प्रत्यय जुड़कर व्युत्पन्न /रहल/ के पूर्व वर्तमान कालिक कृदन्त अथवा भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग करते हुये क्रिया¯रचना निष्पन्न होती है।

7.4 (क)
अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ

यह काल¯रचना पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में अलग-अलग है। मूल सहायक क्रिया /ह/ के बाद वचन बोधक प्रत्यय जोड़कर तथा स्त्रीलिंग में स्त्रीवाची प्रत्यय जोड़कर वर्तमान निश्चयार्थ के रूप गठित होते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि पुल्लिंग प्रयोगों में कृदन्त अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, जबकि स्त्रीलिंग में कृदन्त में भी स्त्रीवाची प्रत्यय /इ/ जोड़ने के बाद ही सहायक क्रिया प्रयुक्त होती है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरूप (पु०)	जात ह	जात हवं
	गिरत जात ह	गिरत जात हवं
	बइठत ह	बइठत हवं
	करत ह	करत हवं

झटके से बोलते समय सहायक समापिका क्रिया /ह/ के अन्त में आने के कारण क्रिदन्त में प्रयुक्त होने वाला अल्पप्राण व्यंजन महाप्राण रूप में ही उच्चरित होकर सामान्य उच्चारण में व्यवहृत होता है।

जैसे- खाथ।

जाथ।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरूष (स्त्री०)	जात ह	जात हईं
	गिरति जाति ह	गिरति जाति हईं
	बइठति ह	बइठति हईं
	करति ह	करति हईं
	खाति ह	खाति हईं

सम्पूर्ण प्रक्रिया में धातु के बाद /त/ प्रत्यय का व्यवहार अपूर्णकाल के लिये हुआ है।

	एकवचन	बहुवचन
म० पु० (पु०)	खात हये	खात हव
(सोन के उत्तर)		
(सोन के दक्षिण)	खात बड़ें	खात बड़ें
(खैरवार, बसवार)	खाथस।	खाथस
(गौंड़)	खातहौस (खाथौस)	खातहौस

भूतकालिक कृदन्त एवं वर्तमानकालिक क्रिया के योग से पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ का निर्माण हुआ करता है।

उ० पु० (पु०)	एकवचन	बहुवचन
(सोन के उत्तर)	हम खात हई। (खाथई)	हम्मन खात हई
(सोन के दक्षिण)	खात हिय (खाथिय)	खात हिय

(ख) भूत निश्चयार्थ

भूत निश्चययार्थ रूप के निर्माण में धातु के बाद /ल/ प्रत्यय जोड़कर रूप निर्माण की प्रक्रिया सोन के उत्तर तथा दक्षिण में अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित है। भूतकालीन सहायक समापिका क्रिया /रह/ के बाद भी /ल/ जोड़ते हैं। /ल/ में एकवचन का अर्थ भी निहित है। बहुवचन में /ल/ के स्थान पर /न/ का प्रयोग होता है। स्त्रीवाची रूप का निर्माण करते समय कालबोधक प्रत्यय के बाद /इ/ प्रत्यय का व्यवहार लिंग निर्धारण के लिये होता है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु० (पु०)	गयल रहल	गयल रहनं
(सोन के उत्तर)(स्त्री)	गइल रहलि	गइलि रहनी
(सोन के दक्षिण)	गइन रहलं	गइल रहनं

		एकवचन	बहुवचन
म० पु०	(पु०)	गयल रहलं	गयल रहल
	(स्त्री)	गइल रहले/रहलिउ	गयल रहले/रहलिउ
उ० पु०		गयल रहली	गयल रहली

भूतकालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया

अन्य आदिवासियों में /ह/ अथवा /बा/ सहायक क्रिया के पूर्व भूतकालिक कृदन्त जोड़कर संयुक्त काल का निर्माण होता है।

		एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	(पु०)	गयल ह	गयल हवं
	(स्त्री)	उठल ह	उठल हवं
म० पु०		सूतल हव	सूतल हवं
(स्त्री)		सूतल हयें	सूतल हयें
उ० पु०		गयल हई	गयल हई

भविष्य निश्चयार्थ

भूतकालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया जोड़कर यह रूप निर्मित होता है।

भूत निश्चयार्थ (अपूर्ण)

वर्तमान कालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया के योग द्वारा भूत निश्चययार्थ विभिक्तियां को जोड़कर इस रूप की प्राप्ति होती है।

वर्तमान निश्चयार्थ (अपूर्ण)

वर्तमान कालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया का योग करके वर्तमान निश्चययार्थ विभिक्तियां का संयोजन कर यह रूप गठित होता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	जाथई	जाथई
(खैरवार, बसवार)	जाथों	जाथों
म० पु०	जाथव	जाथव
सोन के दक्षिण	जाथय	जाथय
(खैरवार, बसवार)	जाथौस	जाथौस
अ० पु०	जातथ	जातहव
(खैरवार,बसवार)	जाथस	जाथन

भविष्य कालिक कृदन्त तथा सहायक किया

सहायक किया के पूर्व भविष्य कालिक कृदन्त को जोड़कर भविष्य संभावनार्थ रूप बनते हैं। धातु के बाद /ए/ प्रत्यय भविष्यकालिक रूप बताता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	जाये के होई	जाये के होई
म० पु०	"	"
अन्य० पु०	"	"

7.5

प्रेरणार्थक किया

वाक्य रचना में जहाँ कर्ता क्रिया संपादित करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। मूल धातु में /वउ/ प्रत्यय जोड़कर प्रेरणार्थक रूप ये जातियां बनाती हैं।

सामान्य क्रिया	खइलेसि
प्रेरणार्थक क्रिया	खियवलेस

....

अध्याय 8

क्रिया विशेषण

भाषा गठन में प्रचलित वे रूप जो विशेषण अथवा क्रिया पदों के पूर्व आकर भाषिक अर्थ को प्रतिबंधित करते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। इन रूपों का व्यवहार वाक्य में बिना किसी ध्वन्यात्मक परिवर्तन के होता है। अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों को चार वर्गों में बांटा जा सकता है।

१. काल वाचक
२. स्थान वाचक
३. परिमाण वाचक
४. रीति वाचक

8.1 काल वाचक क्रिया विशेषण

अन्य आदिवासी जातियां

आजु
कालि
परऊँ
तब
तवझे
सबेरे
अब
अवझे
फेर/फुनि
पाछे
अब
एकदायें
कइउबेरी
हरदायें

धांगर जाति

इन्ना	-	आज
चेरो	-	कल
पैरी	-	सुबह
माखा	-	रात
होरबरे	-	परसों
अक्कून	-	अब
कामरी	-	कब

8.2 स्थानवाचक किया विशेषण

अन्य आदिवासी जातियां

इहां
उहां
जहां
कहाँ
आगे/आगर
पाछु/पाइ (सोन के दक्षिण)
ऊपर/उपरे
खाले
खाली
बस
अउर

धांगर जाति

मुंध	-	आगे
खोखा	-	पीछे
मैया	-	ऊपर
किया	-	नीचे
बीच्चै	-	बीच में
इसन	-	यहाँ
अइया	-	वहाँ
इतरा	-	इधर
उतरा	-	उधर

8.3 परिमाणवाचक किया विशेषण

अन्य आदवासी जातियां

अधिक
कम
एतना
ओतना
जेतना/जेतरा (सोन के दक्षिण)
केतना/केतरा
बराबर

धांगर जाति

इवग्गे	-	इतना
उवग्गे	-	उतना
कावग्गे	-	कितना
जा वग्गे	-	जितना
सव	-	बेरमर

8.4 रीतिवाचक किया विशेषण

अन्य आदिवासी जातियां

अइसे
जइसे
तहसे
धीरे
एकमेक
उल्टा
विल्कुल
सही

धांगर जाति

एन्ने	-	ऐसा
नेखा	-	जैसा
अन्ने	-	वैसा
कन्ने	-	कैसा

8.5 नकारात्मक प्रत्यय

अन्य जातियां- न, ना, जीन, मति

धांगर जाति- मा

8.6 समुच्चय बोधक

पद-रचना करते समय एक पद से दूसरे पद को जोडने के लिए इनका व्यवहार होता है। इनकी कई श्रेणियां हैं-

संयोजक

अन्य जातियां- अउर, अ, पुनि

धांगर जाति- अउर,

विभाजक-

अन्य जातियां- के

धांगर जाति- गे,

विरोधक-

अन्य जातियां- पै, पर, वाकी

धागर जाति- नू

8.7 विस्मयादि बोधक

पूरे जनपद में विस्मयादि-बोधकों की संख्या सीमित है। हाइं, मइया रे, वाप रे, धन्नि, अग्गे जैसे शब्द यहॉ विस्मय के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

....

अध्याय 9

प्रत्यय

शब्द-रचना अथवा पद-रचना प्रक्रिया में प्रातिपदिक महत्वपूर्ण इकाई होते हैं तथा इन इकाइयों द्वारा शब्दकोशीय अर्थ पूर्णतया प्रकट होता है। लेकिन प्रातिपदिक प्रत्ययों के बिना पद नहीं बना पाते तथा वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता इनमें नहीं रहती। इस तरह शब्द का वह अंश जो स्वंतत्र रूप में अर्थ व्यक्त करने में सक्षम नहीं होता तथा जो मूल प्रकृति, व्युत्पन्न प्रकृति तथा प्रकृति के साथ जुड़कर अर्थवान होता है, उसे प्रत्यय कहा गया है। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री **के. एल. पाइक** प्रत्यय की परिभाषा देते हुये लिखते हैं- " प्रत्यय वह पदग्राम है जो ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक रूप से उस पदग्राम पर निर्भर रहता है जिससे वह जुड़ता है। वह पदग्राम तथा पदग्रामों के समूह जिस पर वह आश्रित रहता है, के प्रत्ययार्थ को परिवर्तित करता है। " 1 अपनी अर्थ-बोधकता के आधार पर इन प्रत्ययों की दो श्रेणियां हो सकती है-

क- व्युत्पादक प्रत्यय

ख- व्याकरणिक प्रत्यय

व्युत्पादक प्रत्यय प्रातिपदिकों या धातु के पहले या बाद में जुड़कर एक नई प्रकृति निष्पन्न करते हैं। इनकी तुलना में व्याकरणिक-प्रत्यय प्रातिपदिकों या धातुओं के बाद आकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियापद बनाते हैं। ये प्रत्यय कहाँ से जुड़ रहे हैं, इनका भी महत्व है। व्युत्पादक प्रत्यय नये शब्द बनाते हैं तथा इनका प्रयोग शब्द के पूर्व अथवा बाद में होता है। व्याकरणिक प्रत्ययों को सदैव विभक्ति कहा गया है। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ' हिन्दी प्रत्यय विचार में **डा० मुरारी लाल उप्रेती** विभक्ति एवं परसर्ग का भी अन्तर स्पष्ट करतें है। उनका मानना है- " विभक्ति एवं परसर्गों में सामान्य अन्तर इतना ही है कि दोनों धातु तथा प्रातिपदिकों के पश्चात ही प्रयुक्त होतें हैं। विभक्तियां पदों का निर्माण करती है जबकि परसर्गो का प्रयोग सदैव पदों के बाद होता है।"

सोनभद्र जनपद में निवास करने-वाली आदिवासी जातियों की पद संरचना प्रक्रिया पर यदि गंभीरता से विचार किया जाय तो यह स्पष्ट है कि वक्ताओं के सामाजिक स्तर तथा जनसंपर्क के प्रभाव के कारण शब्द प्रयोगों की जो भी स्थिति बनती है, उपसर्गों अथवा प्रत्ययों की भिन्नतायें भी उन्हीं के अनुरूप हैं। जहाँ तक व्याकरणिक प्रत्ययों का प्रश्न है, विभक्तियाँ भाषा के गठन की एक अनिवार्य प्रक्रिया हैं। इस तरह संरचना में चाहे संज्ञा पद बन रहे हों, या सर्वनाम या विशेषण पद अथवा क्रिया-पद, विभक्तियां पद निर्माण की अपरिहार्य आवश्यकता हैं। यह कई बार कहा जा चुका है कि जनपद में निवास करने-वाले आदिवासियों में धांगर जाति की भाषा पूर्णतः योगात्मक है, तथा संज्ञा पद, सर्वनाम पद, विशेषण पद अथवा क्रिया पद का निर्माण करते समय यह जाति जिन विभक्तियों का व्यवहार करती है, ऐसे आबद्ध रूप संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण में समान हैं तथा इन विभक्तियों की

---

1. आउट लाइन आफ लिग्विस्टिक एनालिसिस - के. एल. पाइक, पेज - ५४

व्याख्या यथास्थान की जा चुकी है। काल भेद के अनुसार धांगर जाति के लोग जिन क्रिया विभक्तियों का प्रयोग करते हैं, ऐसे रूप भी सुनिश्चित हैं। यही स्थिति अन्य आदिवासी जातियो की है। इनके अतिरिक्त व्युत्पादक प्रत्ययों की बड़ी संख्या भी है जो मूल प्रकृति से व्युत्पन्न प्रकृति का निर्माण करती है। ऐसे प्रत्यय देशी, विदेशी, संस्कृत तथा तत्सम हैं। कुछ ऐसे भी रूप भी प्रचलित हैं जो मध्यकालीन आर्यभाषाओं के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप नया प्रत्यय बना लेते हैं।

जैसे-

लौहकार से - लोहार
स्वर्णकार से - सोनार

इन तद्भव' रूपों में प्रयुक्त /आर/ ,जो प्रत्यय की तरह दिख रहा है,वह /कार/ का तद्भव रूप है और कार्य संस्कृत में प्रत्यय नहीं है। कुछ ऐसे भी प्रत्यय प्राप्त हैं,जिनकी मूल प्रकृति संस्कृत की है और प्रत्यय भी तत्सम। यह व्युत्पादक रूप शब्द के पहले जुड़कर एक नई प्रकृति गढ़ने में सक्षम हैं।

जैसे-

गम - दुर्गम
- दुर्गति

शेपरूप सामान्यतया तद्भव हैं और नयी प्रकृति के गठन में सक्षम हैं।

जनपद में प्रयुक्त व्युत्पादक प्रत्यय :

व्युत्पादक प्रत्यय पदग्रामिक संरचना का भाग होते हैं तथा धातु या प्रातिपदिक के पहले या बाद में जुड़कर एक नया रूप व्युत्पन्न करते हैं।

9.1 पूर्व प्रत्यय

इस क्षेत्र की बोलियों में निम्नांकित पूर्व प्रत्ययों का व्यवहार मिलता है-

१. **/अ/**– यह अभावबोधक पूर्व प्रत्यय संज्ञा के पूर्व आकर संज्ञा तथा विशेषण के पूर्व आकर विशेषणों का निर्माण करता है।

संज्ञा -	भाव	- अभाव
	काज	अकाज
विशेषण-	छूत	- अछूत
	कलंकी	- अकलंकी

२. **/अन्/**– यह पूर्व प्रत्यय संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषणों के पूर्व प्रयुक्त होता है, तथा नया रूप बनाता है।

जैसे-

अन - मन	-	अनमन
अन्- मेल	-	अनमेल
अन - पढ़	-	अनपढ़

३. /उ/– यह पूर्व प्रत्यय या तो स्थिति की सूचना देता है या दिशा की, तथा तद्भव रूपों में ही प्रयुक्त है।

जैसे -

तरि - उतरि

भरि - उभरि

भोजपुरी भाषी क्षेत्र में अभाव के अर्थ में भी इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग देखा जाता है।

जैसे-

उ- दन्त - उदन्त (वह पशु जिसे दांत न जमा हो)

४. /ओन्/– यह पूर्णांक बोधक संख्यावाचियों के पूर्व प्रयुक्त होता है तथा एक कम का अर्थ प्रकट करता है।

जैसे - ओनइस

५. वे शब्द जो संस्कृत से आकर बोलियां में प्रयुक्त है, उनमें प्रयुक्त सस्कृत के उपसर्ग भी आ गये है।

जैसे - कु, नि, सु आदि

इनसे कुचाल, निरबंस, सुकाल जैसे रूप बनकर सामान्यतया प्रचलित हैं।

६. कुछ विदेशी शब्द भी बोलियों में प्रचलित हैं, उनके कारण वे-, दर- जैसे उपसर्ग भी पूर्व प्रत्ययों की तरह चल रहे हैं। सामान्यतया धांगर जाति में प्रत्ययों की यह प्रक्रिया प्रचलित नहीं है। जहाँ ऐसे शब्द इनमें मिल भी जाते हैं, वे स्थानीय आर्य भाषाओं के प्रभाव का परिणाम हैं।

9.2 व्युत्पादक परप्रत्यय

परप्रत्यय प्रातिपदिकों को अथवा धातुओं के बाद जुड़ते हैं तथा नई प्रकृति व्युत्पन्न करते हैं। इस तरह व्युत्पन्न प्रकृति के बाद जुड़कर व्याकरणिक प्रत्यय अथवा विभक्तियां पद रचना में सहायक बनती हैं।

धातु से संज्ञा पद बनाने वाले परप्रत्यय

१. -वाह

√चर धातु के बाद इसे जोड़कर संज्ञा पद बनता है।

जैसे- चरवाह

संज्ञा के बाद भी जोड़कर संज्ञा रूप बनता है।

जैसे- हर - वाह - हरवाह

२. -वइया

धातु में जोड़कर संज्ञापद बनता है।

जैसे- सूत - सुतवइया।

३. –अका

धातु के बाद जोड़कर इससे संज्ञारूप बनाया जाता है।

जैसे - बइठ - अका - बइठका

४. –अक

धातु के बाद इसे जोड़कर संज्ञारूप बनता है।

५. ती-

धातु के बाद इसे जोड़कर सज्ञारूप बनता है।

जैसे -√बढ़ - ती - बढ़ती

संज्ञा के बाद जुड़कर संज्ञा बनाने वाले व्युत्पादक प्रत्यय

१. **/आ/–** भूत - आ - भुताह

२. **/ई/–** आह तथा वा प्रत्यय जोड़कर व्युत्पन्न रूपों के बाद यह प्रत्यय जुड़ता है, तथा नया रूप बनाता है।

जैसे - चरवाह - ई - चरवाही

३. **/आरि/–** संज्ञा रूपों के बाद जुड़कर नया रूप व्युत्पन्न होता है।

जैसे- दूध - दूधारि

४. **/आउर/–** संज्ञा के बाद जोड़कर नया संज्ञा पद बनता है तथा स्थान का परिचय देता है।

जैसे -

नानी - ननिआउर

काकी - ककिआउर

५. **/आड़ी/–** संज्ञा तथा क्रिया विशेषणों के बाद जोड़कर नये रूप निप्पन्न होते हैं।

जैसे -

आगे - अगाड़ी

पाछे - पछाड़ी

खेल - खेलाड़ी

६. **/अउती/–** रांज्ञा में प्रयोग कर नया संज्ञा रूप बनता है।

जैसे-

मान - मनउती

बाप - बपउती

७. **/अउरी/**– संज्ञा पदों के बाद जोड़कर नये सत्ता पद बनते हैं।
जैसे-

हांथ	-	हथउटी
चूना	-	चुनउटी

८. **/आई/**– संज्ञा तथा विशेषण के बाद जोड़कर नये संज्ञा रूप बनते हैं।
जैसे-

लइका	-	लइकई
बूढ़	-	बुढ़ाई

९. **/आस/**– विशेषण के बाद जोड़कर संज्ञा रूप बनते हैं।
जैसे-

मीठ	-	मिठास

१०. **/अइला/**– संज्ञा में जोड़कर विशेषण रूप बनते हैं।
जैसे-

घर	-	घरइला

११. **/हड़ा/**– संज्ञा के बाद जोड़कर संज्ञा रूप व्युत्पन्न होता हैं।
जैसे-

घीउ	-	घीबहड़ा

१२. **/हर/**– संज्ञा में प्रयोग कर संज्ञा रूप बनता हैं।
जैसे-

मूड़	-	मुड़हर
गोड़	-	गोड़हर

१३. **/ही/**– संज्ञा में जोड़कर संज्ञा तथा विशेषण रूप बनते हैं।
जैसे-

खूटा	ही-	खुटही
नून	ही-	नुनही

१४. **/गर/**– संज्ञा में जोड़कर विशेषण रूप निर्मित होते हैं
जैसे-

राखि	-	राखिगर
आंखि	-	अंखिग

विशेषणवाची व्युत्पादक परप्रत्यय

१. /इत/- धातुओं तथा संज्ञा रूपों के बाद जोड़कर इससे विशेषण रूप बनते है।

ओझा- इत - ओझइत
लाठी- इत - लट्इत

२. /हा/- संज्ञा में जोड़कर विशेषण रूप बनता है।

गांठि- हा - गंठिहा
दक्खिन- हा - दखिनंहा

३. /उड़/- संज्ञा, धातु तथा क्रिया विशेपणों के वाद जोड़कर इससे विशेपण रूप बनते हैं। जैसे-

राखि - रखउड़
माज - मजउड़
पाछ - पछउड़

४. /ऊंछ/-संज्ञा के बाद जुड़कर विशेपण रूप बनते है।
जैसे-

तेल - तेलऊँछ

५. /ठा/- विशेपण के बाद जुड़कर यह विशेपण रूप बनाता है।
जैसे-

सूख - सुखठा

६. /था/- पूर्णांकबोधक विशेपणों के वाद इसे जोड़कर, क्रमवाची विशेपण बनते है।
जैसे-

चारि - था - चउथा

७. /सर/सरा/- दो तथा तीन पूर्णांक बोधकों के बाद इसे जोड़कर क्रमवाची विशेपण रूप बनते है।

जैसे- दूई - सर - दूसर
तीन - सर - तीसर
दू - सरा - दूसरा
तीन - सरा तिसरा

८. /वां/- पूर्णांक वोधक पांच से विभाजित होने वाली सख्याओं के बाद जुड़कर यह क्रमवाची बनाता है।

जैसे-

पचवा

चालीसवां

सौंवां

६. हरा/सरा/बरल-

पूर्णांक बोधक विशेषणों के बाद इन्हें जोड़कर आवृतिवाची विशेषण बनते है।

जैसे-

इकहरा

दुसरा

तेवरल

9.3 व्याकरणिक पर प्रत्यय

संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेपण, साथ ही धातुएं अपने मूल रूप के बाद विभक्तियों का प्रयोग करके पदों का निर्माण करती हैं। विभक्तिया की चर्चा इन प्रकरणों में स्वतंत्र रूप से हो चुकी है। पदों के बाद प्रयुक्त होने-वाली कुछ ऐसी इकाइयां भी हैं, जो परसर्ग नहीं हैं, लेकिन इनका प्रयोग अवधारण के लिए अर्थ पर बल देने के लिए होता है। संस्कृत व्याकरण-शास्त्र इन्हें निपात कहता है। ऐसे प्रत्ययों का विवरण नीचे अंकित है।

१. /त/- इसका प्रयोग निश्चय के अर्थ में होता है।

संज्ञा -	भात त चूरि गयल।
सर्वनाम-	हम त न खाब।
क्रिया विशेषण-	नेवर त लागी।
क्रिया -	आयल त बांय।
	सूति त गयल।

२. /उ/- इसका प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण तथा क्रियाओं के बाद होता है।

संज्ञा -	लइकउ त जात।
सर्वनाम-	इहउ, उहउ।
विशेषण-	कइसउ, जइसउ।
क्रिया विशेषण-	अवहिउ, तबहिउ।
क्रिया-	खवइअउ।

३. /इ/- इसका प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेपण एवं क्रिया पदो के बाद होता है।

संज्ञा -	नाम -	नावइ
सर्वनाम-	हम -	हम्मइ
विशेषण-	छोटा -	छोटकइ
क्रिया विशेषण-	आगे, -	आगइ
	पाछे -	पाछइ
क्रिया-	आवत -	अउतइ
	जात -	जातई

४. /ह/- यह इ का संपरिवर्तक है तथा यह संवंध बोधक स्थिति वनाता है।
जैसे-

गाइ क वच्चा।
गाइह क बच्चा
यहां ह, ही के अर्थ में प्रयुक्त है।

५. /ठे/गो/- संख्यावाची विशेषणों के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। ठे सोन के उत्तर तथा गो, सोन के दक्षिण में प्रचलित है।

जैसे - एक ठे, दूइ ठे, तीनि ठे
एकगो, दूगो, तीन गो।

....

परिशिष्ट

धांगर जाति की शब्दावली

अ

अन्नुम	-	उसमें
अड़डो	-	बैल
अल्ला	-	कुत्ता
असमा	-	रोटी
अम्म	-	पानी
अन्ने	-	वैसा
अइया	-	वहाँ
अक्कून	-	अब
अमरवी	-	सब्जी

आ

आस	-	वह (पु०)
आद	-	वह (स्त्री)
आसके	-	उसका
आतम्बस	-	उसके पिता
आसिम	-	जो
आर	-	वे

इ

इंजो	-	मछली
इन्ना	-	आज
इतरा	-	इधर
इया तक		यहाँ तक
इसन	-	यहाँ
इंजना	-	खड़ा होना
इदितरा	-	इस ओर

ई

ईरीगे	-	इनको
ईवग्गे	-	इतना ही
ईद	-	यह (स्त्री)
ईरा	-	यह (पु०)

उ

उवग्गे - उतना
उतरा - उधर
उइयख - खयका

ऊ

अयोन - रखना

ए

एंगहा - मेरा
एमहा - हमारा
एंग्गा - मुझको
एंण - दो
एकना - चाल
एम्बरना - नहानां
इजकाचता रई - रोका गया
एनम - ऐसे ही
एंगड़ीं - बहन
एंवस - बाप (अपने)
एंदादस - भाई
एंगदीर्दा - वड़ी बहन
एनाजोस - वावा
एंगमेटस - बहनोई
एण - दो
एम्बा - मीठा

ओ

ओन्टा एक
ओन्डकन - खाया
ओन्दरोत - मुझको
ओनोन - खाउंगा
ओनोरा खायेगा
ओक्कना - बैठना
ओरोख - नाखून
ओसगा - चूहा
ओनरो - पीना

क

कुकेर	-	लड़किया
कुक्कोस	-	लड़का
किया	-	नीचे
किस्स	-	सुअर
कच	-	बाल
कोकोरो	-	मुर्गा
कामरी	-	अव
कुड़ता	-	उबालना
काना	-	जाना
कोहा	-	बड़ा
कुकेर	-	लड़की
कुक्कोर	-	लड़के
किरना	-	शीतल
कूल	-	पेट
केड़ा	-	केला

ख

खुलरौको	-	खुल जायेगी
खोखा	-	पिछला
खद्दर	-	लड़का
खेबदा	-	कान
खल्ली	-	चाची
खईद	-	दुल्हन
खेख	-	हाथ
खेद	-	पैर
खाड़	-	नदी
खेस	-	धान
खेर	-	मुरगी
खेंसो	-	लाल
खेयां	-	मरना
खज्ज	-	मिट्टी
खल्ल	-	खेत
खन्न	-	आँख
खैका		सूखा

च

चेरो	–	कल
चींचना	–	पोंछना
चाली	–	आंगन
वाली	–	दुआर
चोंचना	–	उठना
चींवा	–	चूजा
चिटगा	–	पीपल
चिच्च	–	आग
चिया	–	पिलाना
चइयां	–	भींगना
चाखा	–	बोना
चींचना	–	पोंछना
चींखदन	–	रोना
चपटे	–	त्वचा

ज

जम्बू	–	जामुन

ट

टठगा	–	आग
टिनी	–	मधुमक्खी

ड

डोको	–	टोकरी

ठ

ठेक्का	–	मटका

त

तीखिल	–	चावल
तिंगली	–	मक्खी
तार्चा	–	वुआ
तुंदा	–	उड़ेला

द

दहोय	-	भईया

न

नासगो	-	भाभी
नानस	-	नाना
नींनिंग	-	आप ही
नखंग	-	किसी का
नेखा	-	किसका
निंगहा	-	आपको
नींन	-	तुम
नीम	-	तुम सब
नेई	-	सांप
निम्वस	-	उसके पिता
नूंजाली	-	पीड़ा
ने	-	कौन
ननादे	-	करना

प

पच्चा	-	पुराना
पून्ना	-	नया
पारवल	-	पत्थर
पैरि	-	सवेरा
पल्ल	-	दांत
पइया	-	जाड़ा
पागा	-	पगड़ी
पंचे	-	पांच
परिमिया	-	काटना
पान	-	वैर
पद्दा	-	गांव
पड़दन	-	गाना

व

बेरखा	-	बिल्ली
बटुरा	-	मटर
बचेरकन	-	आना
बिता	-	भूनना
बरचस	-	आना
बाचकन	-	बोले

भ

भइयसिन	-	बच्चे को

म

मनोय	-	मानों
मेन्तान्सा	-	सुनाई
मामुस	-	मामा
मेहो	-	बकरी
मंडी	-	चावल
मोच्चा	-	मुँह
माखा	-	रात
मुक्कर	-	स्त्री
मेटर	-	पुरूष
मानी	-	सरसों
ओढ़इला	-	मोर
मन्न	-	पेड़
मून	-	तीन
मोक्खोय	-	खाना
मुंधता	-	अगला

र

रहचय	-	देखते रहे
रानिद	-	रानी
रादन	-	है
राजस	-	राजा

ल

लघरना	-	जलना
लवा	-	मारना
लुरिया	-	लपेटना

व

वाड़ा	-	बरगद
वरना	-	आना

स

सन्ने	-	छोटा
सुइये	-	छ

ह

होखरे	-	परसों

मैं खाता हूँ	-	एन मोखदन।
हम खाते हैं	-	एम मोखदम।
तुम खाते हो	-	नीन मोखदय।
तुम खाती हो	-	नीन मोखदी।
वह खाता है	-	आस मोखदस
वे खाते हैं।	-	आर मोखदर।
वह है	-	आस रास
मैं हूँ	-	एन रास
तुम हो	-	नीन रास
मैं देख रहा हूँ	-	एन एरादन
हम देख रहे हैं	-	एम एरादम
तुम देख रही हो	-	नीन एरादी
तुम देख रहे हो	-	नीन एरादय
वह देख रहा है	-	आस एरादस
वह था	-	आस रहचस
वह थी	-	आद रहचा
तुम थे	-	नीन रहचकंय
मैं था	-	एन रहचकन
हम थे	-	एम रहचकम
वह गया	-	आस केरस
वे गये	-	आर केरर
वे गई	-	आद केरा
तुम गये	-	नीन केरकय
मैं गया	-	एन केरकन
हम गये	-	एम केरकम
वह देखता था	-	आस एरा लागियस
वे देखते थे	-	आर एरा लगियर
वह देखती थी	-	आद एरा लगिया
तुम देखते थे	-	नीन एरा लवकय

मैं देखता था	-	एन एरा लक्कन
हम देखते थे	-	एम एरा लक्कम
उसने देखा है	-	आस एरका रास
वे होते	-	आर राना
वह होता	-	आस राना
तुम होते	-	नीन राना
तुम सब होते	-	नीम राना
हम होते	-	एम राना
मैं होता	-	एन राना
वह हुआ	-	आस मंचस
वे हुये	-	आर मंचर
तुम हुये	-	नीन मंचकय
तुम सब हुये	-	नीम मंचकय
मैं हुआ	-	एन मंचकन
हम हुये	-	एम मंचकम
वह देखता रहता था	-	आस एरनू रहचस
वे देखते रहते थे	-	आर एरनू रहचर
तुम देखते रहते थे	-	नीन एरनू रहचकय
तुम सन देखते रहते थे	-	नीम एरनू रहचकय
मैं देखता रहता था	-	एन एरनू रओम
हम देखते रहते थे	-	एम एरनू रओम
मैंने देखा होता	-	एन एरका होले
तुमने देखा होता	-	नीन एरका होले
उसने देखा होता	-	आस एरका होले
मैं देखता होता	-	एन एरदन मनोन अने।
तुम देखते होते	-	नीन एरदय मनोय अने
वह देखता होता	-	आस एरदस मनोस अने
वे देखते होते	-	आर एरनर मनोर अने।
वह देखता रहता	-	आस एरनुम रौस अने
वे देखते रहते	-	आर एरनुम रौर अने

तुम देखते रहते	-	नीन एरनुम रैय अने
मैं देखता रहता	-	एन एरनुम रैन अने
हम देखते रहते	-	एम एरनुम रैम अने
वह खायेगी	-	आद ओनो
वह खायेगा	-	आस ओनोस
वे खायेगें	-	आर ओनोर
तुम खाओगे	-	नीन ओनोय
तुम सब खाओगे	-	नीम ओनोय
मैं खाऊँगा	-	एन ओनोन
हम खायेगें	-	एम ओनोम
तुमने देखा होगा	-	नीन एरकादय मनो
मैंने देखा होगा	-	एन एरकादन मनो
उसने देखा होगा	-	आस एरकादस मनो
हमने देखा होगा	-	एम एरकादम मनो
वह होगा	-	आस मनोस
वे होगें	-	आर मनोर
मैं हूंगा	-	एक मनोन
हम होगें	-	एम मनोम
तुम होगें	-	एन मनोय
वे सब होंगे	-	एम मनोय
उसने देखा होगा	-	आस एरियस मनो
मैंने देखा होगा	-	आस एरियस मनो
तुमने देखा होगा	-	नीन एरकय मनो
हमने देखा होगा	-	एक एरकम मनो
वह देखती होगी	-	आद एरी मनो
तुम देखते होगे	-	नीन एरकय मनो
वह देखता होगा	-	आस एरा मनों
मैं देखता होंउंगा	-	एन एरदन मनो
हम देखते होंगे	-	एम एरदम मनो

तुम बोलो	-	नीन चाल नना।
वे बोले	-	आर चाल नंचर
वह बोला	-	आस चास नचस
हमने खाया	-	एम ओंटकम
तुमने खाया	-	नीन ओंडकय
उसने खाया	-	आस ओन्डस
मैंने खाया	-	एन ओंडकन
जाना पड़ा	-	कालागे मंचा
भागना चाहता हूँ	-	नेह्रा चहादन
शायद ठहरे	-	सइत रूकोरस
मैंने तोड़ा	-	एन एस्सकन
उस (पु०) ने तोड़ा	-	आस एस्सस
(स्त्री) ने तोड़ा	-	आद एस्सा
उन लड़को ने तोड़ा	-	आ खद्दर एस्सर
जल्दी आना	-	हाली एंग करके।
बना- बनाया	-	कमरका- कमरकग
आज की रात बड़ी डरावनीथी	-	इबता माखाऊंधेर एलकताना लेखा रहचा।
इसतक	-	इदीउत्ते
उन तक	-	आस उत्ते
हमारे जैसा	-	नमहा लेखा
जिस किसी का	-	नेखा दिम
पैर का घाव	-	खेद ता खादी
डूब मरो	-	मुल्खा के खेया कला
बच्चे को लिटा दो	-	भइयासिन किदाचिया
वह तोड़ता है	-	आस एसदस
कौन जाती है	-	ने कई
मैं सुनंगा	-	एन मेनोन
मैं गाता हूँ	-	एन पड़दन
मैं सोता हूँ	-	एन चूतदन
मैं तुमसे प्यार करता हूँ	-	एन निगहातुरू प्यार नंदन।
तुम दोनों	-	नीन दुन्नेझने आने
हम बनाते हैं	-	एम कमदम
हम बोले	-	एम वाचकम
तुम बोली	-	नीन बाचकी
तुम बोले	-	नीच बाचकय
करना होगा	-	ननागे मनो

	-	एम्बराकय
नहाकर	-	असमा मोक्की
रोटी खाई	-	मंडी ओंड़कन
भात खाया	-	आस रामसतुरू खखरस मनो
वह राम से मिला होगा	-	आस एगागे मनो।
उसे दौड़ाना पड़ेगा	-	एंगहा तुरू मा रहिकेरा
हमसे न रहा गया	-	एन मा ओंदन
मैं नहीं पीता	-	एंगजी तैया
दादी ने भेजा	-	बिच्छी द परिमिया मनो
बिच्छू ने काटा होगा	-	ओक्कारा
बैठे रहो	-	एरका कई
देखा हुआ	-	इस एस्सस
इसने तोड़ा	-	नोकरानी चींखलिया।
नौकरानी रोती थी	-	एन चींखदन
हम रो रहे हैं	-	खद्दर एंगहा बात मना
बच्चे मेरी बात सुन लो	-	सन्ने एंगड़ी के ननद बीमार रई।
छोटी बहन की ननद बीमार है	-	जी घबड़ारी
जी घबड़ाता है	-	आद नचाहेलरा
वह नाचने लगी	-	आसगे खाना मापची
उसको भोजन नहीं पचता	-	मंचका तुरू बात खुलरौको
पूछने से बात खुल जायेगी	-	लाला तीखिल का भाव तुरू बीस दै
लाला चावल किस भाव बेचते हो	-	नींगहा ते ता अड्डू बढ़िया री
तुमसे तो पशु अच्छे हैं	-	मुलेखना सगे तन्नी सा सहारा
डूबते को तिनके का सहारा	-	चिच लहारा ली
आग जल रही है	-	चंदरा नू छींट लक्की रई
चादर पर छींटे पड़ी है	-	एंगहा दाहिन खेख चिलगा लगली
मेरी दाहिनी हथेली खुजला रहीहै	-	आस शिकारीसीन ओन्टा कहनी मेन्ताचसा
उसने शिकारी को एक कहानी सुनाई	-	एन किनारेन् इज्जकचकन
मैं किनारे पर खड़ा था	-	बुखारतुरू तीनों जने बीमार रानर
बुखार से तीनों जन बीमार है	-	घीउ मोखोय होले मोटारोय अन्ने
घी खा लोगों तो तगड़े हो जाओगे	-	खईद घूंघटतुरू एरलिया
दुल्हन घूंघट से देख रही थी	-	अक्कुन आस मा वरचस
क्या वे अभी नहीं आयें	-	आस बरोस होले निगहातुरू मिलओन चिओन।
वह आयेगें तो भेंट करा दूंगां	-	अक्तुर एन्दरा चहादय।
और क्या चाहते हो।	-	अगर पुइना होले अकाल मा मनो अनके।
यदि वर्षा न होती तो अकाल न पड़ता	-	आद निगहा तुरू लजरी।
वह तुमसे लजाती है	-	

वह तुमसे लजाती है	-	आद निगहातुरू लजरी।
वह तुमसे लजाता है	-	आस निगहातुरू लजेरदस।
पॉव में दर्द होने लगा	-	खेद्दनू नुजाहेलरा।
गॉव के गॉव जल गये	-	पद्दा के पद्दा उलिया केरा।
मोहन तुम क्या कर रहे हो	-	मोहन नीन ऍदरा ननादय।
उसने यह पशु सत्तावन रूपये में खरीदा	-	आस अड्डू सत्तावन रूपिया नू उड्यस
वह दांतो से चवाता है	-	एम पल्ल तू चवदत
तुम तो मजाक-मजाक में नाराज हो जाती हो	-	नीन त मजाक-मजाक नू गुस्सारदी कादी
तू ला	-	नीन उदरा
मैं लाऊॅं	-	एन ओन्दरोन
हम लायें	-	एम ओन्दरोम
चटाई पर बैठिये	-	पिट्टी नू ओक्का
सुनार ने जेवरगढ़ दिये	-	सुनारस जेवर गढ़चस केमा चिच्चस
उससे दवाई नहीं पी जायेगी	-	आस तुरू दवाई मा ओनरो
यह गगरा भर लें तो चलें	-	इ गगरन नींदोन होले कौन
आंगन में पानी छिड़को	-	चाली नू अम्म छिड़का
मेरा एक भाई होता तो बड़ा सुख होता	-	एंगहा ओन्टा भाइस राना होला वड़ा सुख रओ अनेक
चार हफ्ते हो गये तुमने भाड़ा नहीं दिया	-	हफ्ता मंचा केरा नीन भाड़ा मा चीच्च के नहीं दिया
तुम मेरी मदद क्या करोगे	-	नीन ऍगहा सहायता एन्दरा ननोय
जहॉं तुम वहॉं हम हैं	-	कइया नीन रादय अइया एन हूँ रादन
हम आये और तुम उठे तक नहीं	-	ऐन वचेरकन अउर नीन मा चोंचकय
अगर मेरे पास होता तब भी न देता	-	अगर एंगहादय राना होले तन्नो मा चीओन अनके
वह घर पर नहीं था	-	आस एड़्या नू मा रहचस
पहली पत्नी मर गई	-	पहिले ता खईद केच्चा केरा

अन्य आदिवासियों मे प्रचलित अपनी शब्दावली

शब्द		अर्थ	
टेंगल	–	झांका	(चेरो)
माटो	–	बहनोई	
डउकी	–	लड़की	
डउका	–	लड़का	
कतह	–	कहाँ	
झरिक	–	फेकना	
गुठियाइब	–	बात करना	
खुलखुल	–	घूंघट	
अने	–	लोग	
एंडरा	–	नर	
मयारी	–	मादा	
कोपर	–	घुटना	
एनसोत	–	ये	
ओनसोत	–	वे	
परबिन	–	सकता	
महुन	–	मैंने	
तहुन	–	तुमने	
दीया	–	दीमक	
एन्ने	–	इधर (खरवार)	
मा	–	हम	
ता	–	तुम	
पारिह	–	सकता	
माहिन	–	मैंने	
तहुन	–	तुम भी	
टेरी हाथ		दाया हाथ	(गोड़)
एहलंग	-	इस ओर	
ओहलंग		उस ओर	
कनया	–	दुल्हन	
मइया	–	लड़की	
नरेटी	–	गला	
बेहरी	–	बारी	
वह बोली	–	ओहू बोल्हि	(गोड़) सोन के दक्षिण
उन लड़को ने तोड़ा	–	उ लइकन मन टोर दिहिन	(गोड़)
हम देखते रहते	–	भदुन देखत रहतौं	(गोड़)
वह था	–	ओइ रहतिस	

कौन जाती है	-	कउन जाथी	
तू बोलता है	-	तो गोठ पालस	
मैनें तोड़ा	-	मा टोरलू	
कहाँ जा रहे हो	-	कतह जाला	(चेरो)
कहाँ जा रही हो	-	कतह जास	
दरोगा आया है	-	दरोगा ओल बाट	
गये थे	-	गोल बाटी	
वह खिड़की से झांका	-	उ गली ले टेंगल	
सब गये	-	कुलझें गइनीन	
जाऊंगा तो ले आऊंगा	-	जइम त ले आइम	
सुला दो	-	झनगाय दे	
मैं सुनुगां	-	मोय सूतम	
मैं जाउंगा	-	मोय जइम	
मैंने देखा होगा	-	महुन देखनू	
वे थे	-	सोनसोत रहले	
मैंने तोड़ा	-	महिन तोड़े	(खरवार)
किसी के लिये	-	केकरो खातिन	
वह देखा करता था	-	उ देखत रल्ह	(धरकार)
वह देखा करती थी	-	उ देखत रन्हिउ	
मैंने देखा होगा	-	मा देखत बनो	
तुम देखती होगी	-	ता देखत रल्हिस	
मैं देखता होता	-	मा देखत रल्हिउ	
वे देखते रहे	-	उसब देखत रन्ह	
वे देखती रही	-	उसव देखत रन्हिन	
मैं होता	-	म रहतो	
मैं होती	-	म रहतिउ	
वह है	-	उ लागै	
तुम हो	-	त लागस	
तुम होगी	-	तब रल्हिस	
हम होगें	-	म रन्हों	
मैं हूंगी	-	म रन्हिउ	

....

पुस्तक सूची

1. A Course in Modern linguictics - Hockett - Oxford Publication - New Delhi
2 Language in Culture and Society - Dell Hymes - Allied Publication Pvt Limited Bombay
3. The Tribe and castes of North Western India Vol 2,3,4 - W. Crooke - Cosmo Publication Delhi.
4. Primitive India - Vitold De Golish - George G Hesep Co. Ltd London
5. Out line of lingustic Analysis - Block and Trager - Lingustic Society of America
6 History of Caste in India - S.V Ketker - Rawat publications Jaipur
7. Tribe and castes of the Central provinces of India - R.V. Russell and Hira Lal Vol 1, 2 - Cosmo Publication Delhi.
8 Linguistic Survey of Sadar Sub Division of Manbhumi and Singhbhumi - Vishwanath Prasad - Bihar Rastra Bhasha Parishad Bihar
9. Out Line of linguistic Analysis - K L Pike
10. भारतीय जन संस्कृति – डी.एन. मजूमदार, अपाला प्रकाशन – मुद्रण सहकारी समिति लिमिटेड लखनऊ ।
11. उत्तर प्रदेश की जनजातियॉं – अमीर हसन – उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद ।
12. सोन के पानी के रंग – देव कुमार मिश्र
13. अवधी का विकास – डा० बाबूराम सक्सेना
14. भोजपुरी का उद्भव व विकास – डा० उदय नारायण तिवारी
15. मानव और संस्कृति – यूमिलान कोमलेम – प्रगति प्रकाशन मास्को
16. मीरजापुर डिस्ट्रिक गजेटियर (अंग्रेजी संस्करण)
17. पत्रिकाएं – लिंग्विस्टिक्स, भाषा, उत्तर प्रदेश